



चेतना Chetna

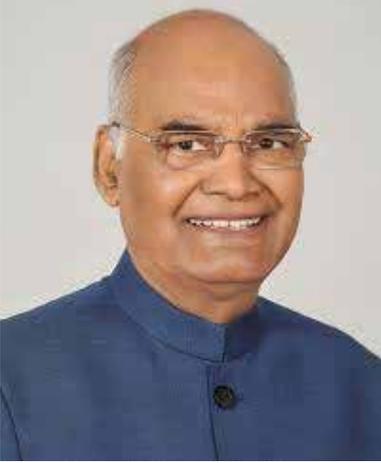
एनएचपीसी सतर्कता पत्रिका अंक 15 | वर्ष 2021
NHPC Vigilance Journal Vol. XV | Year 2021



स्वतंत्र भारत @ 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

Glimpses : Inauguration of VAW 2020 at Corporate Office





सत्यमेव जयते
राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

I am happy to know that the Central Vigilance Commission is observing Vigilance Awareness Week on the theme “**Independent India @ 75 : Self Reliance with integrity; स्वतंत्र भारत @ 75 सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता**” from 26th October to 1st November 2021.

As a nation, we have had a long and well-established tradition of integrity and ethics. It is our responsibility as citizens to re-affirm these ideals as we strive towards national development and self-reliance. It is the duty of all the citizens to be vigilant and combat corruption in every sphere of life.

I am happy to see that the Central Vigilance Commission is taking the necessary steps to bring the citizens together to strengthen our commitment towards progress and self-reliance while remaining rooted in our ideals.

I extend my greetings to all those associated with the organization of Vigilance Awareness Week at Central Vigilance Commission and wish the campaign every success.

New Delhi
October 05, 2021


(Ram Nath Kovind)



भारत के उपराष्ट्रपति
VICE-PRESIDENT OF INDIA

MESSAGE

I am pleased to learn that the Central Vigilance Commission is observing Vigilance Awareness Week this year from 26th October to 1st November, 2021.

The theme of this year's Vigilance Awareness week is “**Independent India @ 75: Self Reliance with Integrity; स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता**” which is in consonance with the journey that our country has had since its independence. A Self-reliant India is a dream for all her citizens and such a dream can only be fulfilled with the participation of all. I have faith that everyone would adopt integrity and ethics in their daily life as we move in our journey towards self-reliance.

I hope to see all citizens and stake holders collectively participate in large numbers in the fight against corruption. We need to come together to reiterate the ideals of integrity, transparency and accountability and strive towards embracing the values that have guided us in our journey so far.

On this occasion, I commend the Central Vigilance Commission for their efforts in combating corruption and convey my best wishes for the success of Vigilance Awareness Week, 2021.

New Delhi
30th September, 2021



(M. Venkaiah Naidu)

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा 26 अक्टूबर से 01 नवम्बर, 2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई।

भारत की विकास यात्रा में देश के नागरिकों की मेहनत, सजगता और समाज व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी के भाव की भूमिका अहम है। जन-भागीदारी और सामूहिकता की शक्ति से ऊर्जित देश आज बड़े संकल्प लेता है और उन्हें हासिल भी करता है।

भारत का जन-सामर्थ्य पूरी दुनिया में एक नया विश्वास भर रहा है। इस संदर्भ में आयोग द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के विषय के रूप में 'स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' का चयन प्रशंसनीय है।

'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के मंत्र के साथ देश गत 7 सालों से भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। समग्र और निरंतर प्रयासों से देश में एक विश्वास कायम हुआ है कि भ्रष्टाचार को रोकना संभव है।

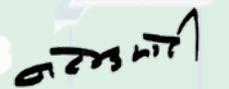
आज समयानुकूल और शुचितापूर्ण व्यवस्थाएं लोगों की जिंदगी को आसान बना रही हैं। देश के नागरिकों को सशक्त करने के लिए जिस तरह तकनीक और नागरिकों की सत्यनिष्ठा को ताकत बनाया गया है, उसने सामान्यजन का आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ाया है।

आज देश में जो सरकार है, वह देश के नागरिकों पर भरोसा करती है। पारदर्शी और सहज व्यवस्थाओं के कारण देश के जन-जन में यह भरोसा भी कायम हुआ है कि अब भ्रष्टाचारी बच नहीं सकता।

आजादी के अमृतकाल में आत्मनिर्भर भारत के विराट संकल्पों की सिद्धि की तरफ देश बढ़ रहा है। अमृत काल में हम सभी को एक बात हमेशा याद रखनी है - राष्ट्र प्रथम। मुझे विश्वास है कि केन्द्रीय सतर्कता आयोग का यह आयोजन, एक बेहतर भविष्य के लिए जीवन में, विशेषकर सार्वजनिक जीवन में, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग को इस पहल और भविष्य के प्रयासों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली
कार्तिक 03, शक संवत् 1943
25 अक्टूबर, 2021


(नरेंद्र मोदी)



केन्द्रीय सतर्कता आयोग
CENTRAL VIGILANCE COMMISSION

सतर्कता भवन जी.पी.ओ. कॉम्प्लेक्स
ब्लॉक-ए, आई.एन.ए., नई दिल्ली-110023
Satarkta Bhawan, G.P.O. Complex,
Block A, INA, New Delhi-110023
सं/No. 019 /VGL/029
दिनांक/Dated 11.10.2021

MESSAGE

Vigilance Awareness Week (26th October to 1st November, 2021)

It is a matter of pleasure that during the current year the Commission has issued the guidelines for observing Vigilance Awareness Week from 26th October, 2021 to 1st November, 2021. The theme for the current year's Vigilance Awareness Week is as under :

**“स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता”
“Independent India @ 75 : Self-Reliance with integrity”**

Self-reliance and integrity are the two ideals which need focus as they are important for achieving all-round progress and development of the country. During the Vigilance Awareness Week there is an opportunity for all to re-affirm ourselves towards our collective duty and responsibility to ensure transparency and integrity in the systems and procedures.

This year a special initiative has been taken to create awareness for the complaint mechanism available under the Public Interest Disclosure and Protection of Informers (PIDPI) resolution. During the current year, all the organizations have also been requested to focus on improvements in internal processes and other house-keeping activities.

The Commission appeals to all the citizens of the country to come forward, during the 75th year of Independence, and support the drive to achieve self-reliance with integrity.



(SURESH N. PATEL)
Central Vigilance Commissioner

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश



किसी भी संगठन की सफलता के लिए ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और उसके कार्यों में पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक आधारभूत स्तम्भ हैं। एक सजग और सचेत संगठन का निर्माण, एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। सतर्कता विभाग द्वारा 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का आयोजन इसी कड़ी का हिस्सा है। केंद्रीय सतर्कता आयोग ने इस वर्ष का विषय 'Independent India @ 75: Self Reliance with Integrity— स्वतंत्र भारत @ 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' निर्धारित किया है, जोकि बहुत प्रासांगिक है। सिद्धांतों और सत्यनिष्ठा की बुनियाद पर ही हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने एक समृद्ध एवं आत्मनिर्भर भारत का सपना संजोया था।

हमारा उद्देश्य निगम के लिए मजबूत प्रणालियों, नियमों और व्यवस्था का निर्माण तथा उनमें निरंतर सुधार करना है ताकि प्रत्येक कर्मचारी उनसे मार्गदर्शन लेकर निगम को निरंतर उन्नति के पथ में आगे ले जाए। मुझे खुशी है कि हमारे सतर्कता विभाग ने लगातार इस दिशा में प्रयास किये हैं तथा कार्यों में होने वाली संभावित त्रुटियों के समबन्ध में निगम में सबको सजग किया है। वार्षिक पत्रिका 'चेतना' का सतर्क व्यवहार की आवश्यकता एवं निगम के मूलभूत मूल्यों पर संगठनात्मक जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा कर्मचारियों को इस सम्बन्ध में अपने विचार रखने का अवसर भी प्रदान किया है। मैं सतर्कता विभाग को 'चेतना' के पन्द्रहवें संस्करण के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

सतर्कता एक आदत और जीवन जीने का तरीका है जो संगठन के हित के लिए हम में से प्रत्येक को कार्य करने के और बेहतर तरीके अपनाने के लिए प्रेरित और सक्षम करता है। आईये निगम में मजबूत सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा और विश्वास पर आधारित संस्कृति के निर्माण में अपना योगदान दें।

फरीदाबाद


(अभय कुमार सिंह)

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

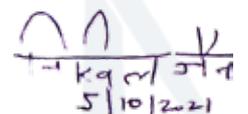


नमस्कार,

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह के इस अवसर पर सतर्कता विभाग, सतर्कता पत्रिका "चेतना" का पंद्रहवाँ अंक प्रकाशित कर रहा है जो कि निगम के कर्मचारियों को अपनी जागरूकता बढ़ाने एवं कार्य शैली में पारदर्शिता लाने का अवसर प्रदान करेगा। ईमानदारी एक सुखद, समृद्ध एवं भ्रष्टाचार मुक्त समाज की रीढ़ है और इसकी तुलना पेड़ की उन जड़ों से की जा सकती है जो इसे किसी पेड़ को सुचारु रूप से बढ़ने और उसमें फल खिलने में सक्षम बनाता है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह का मूल उद्देश्य एक नए भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण करना है जिसके परिणामस्वरूप हमारे देश के सभी कोनों में पारदर्शी समाज का निर्माण हो सके। भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन का बहुत महत्व है। मुझे विश्वास है कि सतर्कता विभाग यह सुनिश्चित करेगा कि उनके अथक प्रयास से निगम में एवं आस पास की संबंधित कार्य शैली में भ्रष्टाचार उन्मूलन और सरलीकृत प्रक्रियाओं का कार्यान्वयन होगा।

मैं, सतर्कता विभाग, एनएचपीसी लिमिटेड को उनके प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2021 की शानदार सफलता की कामना करता हूँ।

फरीदाबाद


5/10/2021
(एन.के. जैन)

निदेशक (तकनीकी) का संदेश



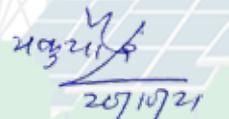
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय सतर्कता आयोग 'Independent India @75 : Self Reliance with Integrity -स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता', विषय पर दिनांक 26.10.2021 से 01.11.2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मना रहा है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह, प्रति वर्ष लौह पुरुष सर्वश्री सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिन के अवसर के दौरान मनाया जाता है।

भ्रष्टाचार को राष्ट्रीय विकास और प्रगति में सबसे बड़ी बाधा माना गया है। हमें सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने और जीवन के सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का मुकाबला करने का प्रयास करना चाहिए। हमारा यह परम कर्तव्य है कि एक जीवंत नागरिक बनते हुए हम अपने आसपास से हर रूप में भ्रष्टाचार को रोके। हम एक नए आत्मनिर्भर निगम, एक ऐसा निगम जो लगातार अपनी क्षमताओं का विस्तार कर रही है, के निर्माण के लिए, संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं। विकास के लिए हमारी दृष्टि निगम व मानव केंद्रित है, जहां समृद्धि का फल समान रूप से सभी तक पहुँचना चाहिए। हमारा यह सपना तभी साकार हो सकता है जब हम सभी जागरूक और सतर्क रहें और गौरवान्वित नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का पालन करें। विगत कुछ वर्षों के अंतराल में, हमने कई नए सरलीकृत प्रक्रियाओं को अपनाया है। हम कार्यशैली को सुगम एवं बेहतर बनाने और व्यवसाय को बढ़ाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य तकनीकियों का बेहतर से बेहतर उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2021 का आयोजन हम सभी को पारदर्शिता और जिम्मेदारी की नई कार्य संस्कृति के लिए खुद को फिर से समर्पित करने के लिए प्रेरित करेगा।

आइए, हम सामूहिक रूप से अपने निगम एवं राष्ट्र को अधिक सतर्क और समृद्ध बनाने की दिशा में काम करें।

फरीदाबाद


20/10/21
(वाई के चौबे)

निदेशक (वित्त) का संदेश



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सतर्कता विभाग, एनएचपीसी सतर्कता पत्रिका 'चेतना' का पंद्रहवाँ संस्करण प्रकाशित कर रहा है। यह बहुत ही हर्ष की बात है कि एनएचपीसी 26.10.2021 से 01.11.2021 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' एक उत्सव के रूप में मना रहा है।

मेरा मानना है कि इस प्रतिस्पर्धी व कारोबारी माहौल में हमें सतर्कता उन्मुख होना चाहिए। मुझे यह कहते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है कि सतर्कता विभाग एनएचपीसी के विजन, मिशन और उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

प्रणालियों में सुधार एवं पारदर्शिता को प्रोत्साहित करके सतर्कता विभाग, निगम की उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य कर रहा है। कर्मचारियों में ईमानदारी की भावना विकसित कर एवं जन साधारण में जागरूकता वृद्धि करके भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाया जा सकता है। हमें बड़े पैमाने पर कर्मचारियों व अन्य जनता को सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार की घटनाओं के बारे में शिक्षित करना होगा और उन्हें बताना होगा कि राष्ट्रीय स्तर पर इसका क्या दूरगामी दुष्प्रभाव हो सकता है। "आजादी के अमृत महोत्सव" पर "चेतना" पत्रिका के पंद्रहवें संस्करण का प्रकाशन इस दिशा में एक उपयुक्त कदम है।

मैं एनएचपीसी के संपूर्ण सतर्कता विभाग को उनके प्रयास में पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

फरीदाबाद


(राजेंद्र प्रसाद गोयल)

निदेशक (परियोजनाएँ) का संदेश



देश की जनसांख्यिकीय संरचना, आज युवाओं की उपस्थिति एवं समाज में उनका बहुमत प्रदर्शित करती है। इन युवा शक्ति में ऊर्जा, आदर्श और देश के लिए कुछ करने की इच्छा एवं मनोबल कूट कूट कर भरा हुआ है। आज लोक सेवकों द्वारा किए गए हर कार्य प्रदर्शन में पारदर्शिता और दक्षता इच्छा मात्र न रह कर यह समाज की मांग बन गई है। युवाओं को दी जाने वाली नई शिक्षा पद्धती, ईमानदारी और ईमानदारी से काम करने के लाभ के बारे में जागरूकता लाई है। मेरा यह भी मानना है कि हर आदमी की स्वेच्छा से सतर्कता जागरूकता में सहभागिता, भ्रष्टाचार उन्मूलन में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है। विगत कुछ वर्षों में हमने देखा है कि गैर सरकारी संस्थाओं व मीडिया की सक्रियता के कारण, विशेषतः सूचना के अधिकार का कानून आने के बाद जन साधारण की भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता काफी बढ़ी है किन्तु अभी भी भारत में भ्रष्टाचार निर्मूलन के लिए काफी कार्य करने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार निर्मूलन एक आंदोलन है। मेरा विश्वास है कि सतर्कता विभाग की गृह पत्रिका 'चेतना' का प्रकाशन एनएचपीसी परिवार में नैतिक मूल्यों के प्रति चेतना जागरण में एक सार्थक कदम साबित होगा।

मुझे यकीन है कि सभी पाठक, इस चेतना पत्रिका के विभिन्न लेख, कविताओं और स्क्रिप्ट में निहित संदेशों को अपने दैनिक कामकाज और जीवन में भी आत्मसात करेंगे।

मैं 'चेतना' के पंद्रहवें संस्करण को लाने के लिए सतर्कता विभाग के सभी अधिकारियों को बधाई देता हूँ।

फ़रीदाबाद

Biswjit Basu

(बिश्वजीत बासु)

मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश



मुझे आप सभी के साथ यह साझा करते हुए हार्दिक खुशी हो रही है कि एनएचपीसी सतर्कता विभाग इस वर्ष के सतर्कता जागरूकता सप्ताह, जो कि केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी), भारत सरकार, के निर्देशों के अनुसार 26.10.2021 से 01.11.2021 तक मनाया जा रहा है, के दौरान एनएचपीसी लिमिटेड सतर्कता पत्रिका “चेतना” का 15वाँ अंक ला रहा है। इस वर्ष सीवीसी ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2021 विषय के लिए “**Independent India @75: Self Reliance with Integrity—स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता**” विषय को चुना है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह एक ऐसा आयोजन है जो पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए हमें खुद को समर्पित करने का अवसर प्रदान करता है। इस सप्ताह को मनाने का उद्देश्य संगठन के भीतर सतर्कता संबंधित मुद्दों के बारे में अधिक से अधिक जागरूकता पैदा करना है। कोविड-19 महामारी को देखते हुए इस वर्ष एनएचपीसी के कर्मचारियों एवं अन्य हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए ऑनलाइन माध्यम से सतर्कता विभाग द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं व जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

सार्वजनिक क्षेत्र में, हम सार्वजनिक संपत्ति और सरकारी संपत्ति के ट्रस्टी हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य एवं दायित्व है कि हम हमारी आंतरिक प्रणालियों, प्रक्रियाओं और प्रथाओं में स्थायी समावेशी सुधार को बढ़ावा दें। सतर्कता विभाग कार्य-प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सरल बनाकर संगठन की उत्पादकता में सकारात्मक योगदान देने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। हमें हमेशा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे कार्यों का उद्देश्य जन-सामान्य की भलाई हो। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम ऐसी किसी भी गतिविधियों में शामिल नहीं हों जिससे स्वयं या समाज के हितों से समझौता करने वाले कुछ व्यक्तियों को अनुचित लाभ हो। प्रत्येक कर्मचारी को कंपनी के लाभ के लिए अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए पूरी ईमानदारी के साथ काम करना चाहिए।

मैं, टीम विजिलेंस एनएचपीसी लिमिटेड की ओर से, आप सभी को हमारे इन सुदृढ़ प्रयासों में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

जय हिन्द।

फरीदाबाद



(आशीष कुमार श्रीवास्तव)

संपादकीय

आज के युग में एक सजग और सतर्क नागरिक, जनतंत्र की सफलता के लिए अति आवश्यक है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सरकार जो भी नीतियां बनाएँ, वह वास्तव में जनता की भलाई, देश की प्रगति व सुरक्षा के लिए ही हो न कि किसी समुदाय विशेष अथवा किसी समष्टि समूह के हित में हो। यह जरूरी हो जाता है कि देश के नागरिक सरकार की शासन प्रक्रिया में सम्मिलित हों। साथ ही साथ यह भी जरूरी है कि देश की जनता व मीडिया, सरकार में या उसके किसी भी विभाग में हो रहे भ्रष्टाचार के ऊपर कड़ी नजर रखे। अतः सतर्कता, सफल जनतंत्र की एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है।

विगत कुछ वर्षों में हमने देखा है कि गैर सरकारी संस्थाओं व मीडिया की सक्रियता के कारण, विशेषतः सूचना के अधिकार का कानून आने के बाद साधारण जन की भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता काफी बढ़ी है। एक स्वस्थ जनतंत्र के लिए यह काफी अच्छे संकेत है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनता की जागरूकता के कारण सरकारी कार्यकलापों की पारदर्शिता व कार्य क्षमता दोनों में काफी सुधार आया है। किंतु अभी भी भारत में भ्रष्टाचार निर्मूलन के लिए काफी कार्य करने की आवश्यकता है। अतः हमें भ्रष्टाचार उन्मूलन जागरूकता आंदोलन को निरंतर जारी रखना पड़ेगा जिससे कि हम अपने देश से इस बुराई को और कम कर सकें। सरकारी कार्य व प्रक्रियाओं को और ज्यादा स्वचलनीय बनाकर व इंटरनेट के माध्यम से सार्वजनिक सेवाओं को साधारण जनता तक सीधी पहुंच की सुविधा प्रदान कर के हम इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

सतर्कता विभाग, भ्रष्टाचार नामक इस विसंगति को मिटाने में एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाता है तथा निगम के कर्मचारियों को सतर्क रहने के लिए प्रेरित करता है। आज भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बनाना हम सब का कर्तव्य है अतः हम अपने स्तर पर सतर्क रह कर भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करें। संगठन के भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु किये गए प्रयासों को सफल बनाने के लिए समस्त कर्मचारियों की सक्रिय, सहयोगात्मक और सहभागितापूर्ण भागीदारी नितांत आवश्यक है। सतर्कता विभाग इस संदर्भ में चेतना पत्रिका के पंद्रहवां संस्करण को ला रहा है। हमारे इस प्रयास का मुख्य उद्देश्य एनएचपीसी के समस्त कार्मिकों को सतर्कता के अनुपालन में अधिक से अधिक जागरूक करना है। अतः हम आशा करते हैं कि चेतना हमारे कार्मिकों को अपने कार्यालयों में कार्यालयीन कार्यों तथा अपने कर्तव्य निर्वाह करते समय होने वाली चूकों से बचने में सहायक व उपयोगी सिद्ध होगी। हमें आशा है कि इसमें लिखे गए लेख जानकारी बढ़ाने में और भ्रष्टाचार के खिलाफ चेतना जगाने में सफल होगी। हमें अपने विभिन्न परियोजनाओं, पावर स्टेशनों एवं ईकाइयों से बहुत सारी कविताएं व लेख प्राप्त हुए हैं जो हमारे कार्मिकों की प्रबुद्ध प्रतिभा को दर्शाता है। हो सकता है कि समय व स्थान की कमी के कारण कुछ लेख चेतना के इस संस्करण में प्रकाशित होना रह गए हो, परंतु आगे के चेतना पत्रिका के संस्करणों में उन्हें उचित स्थान दिया जाएगा।

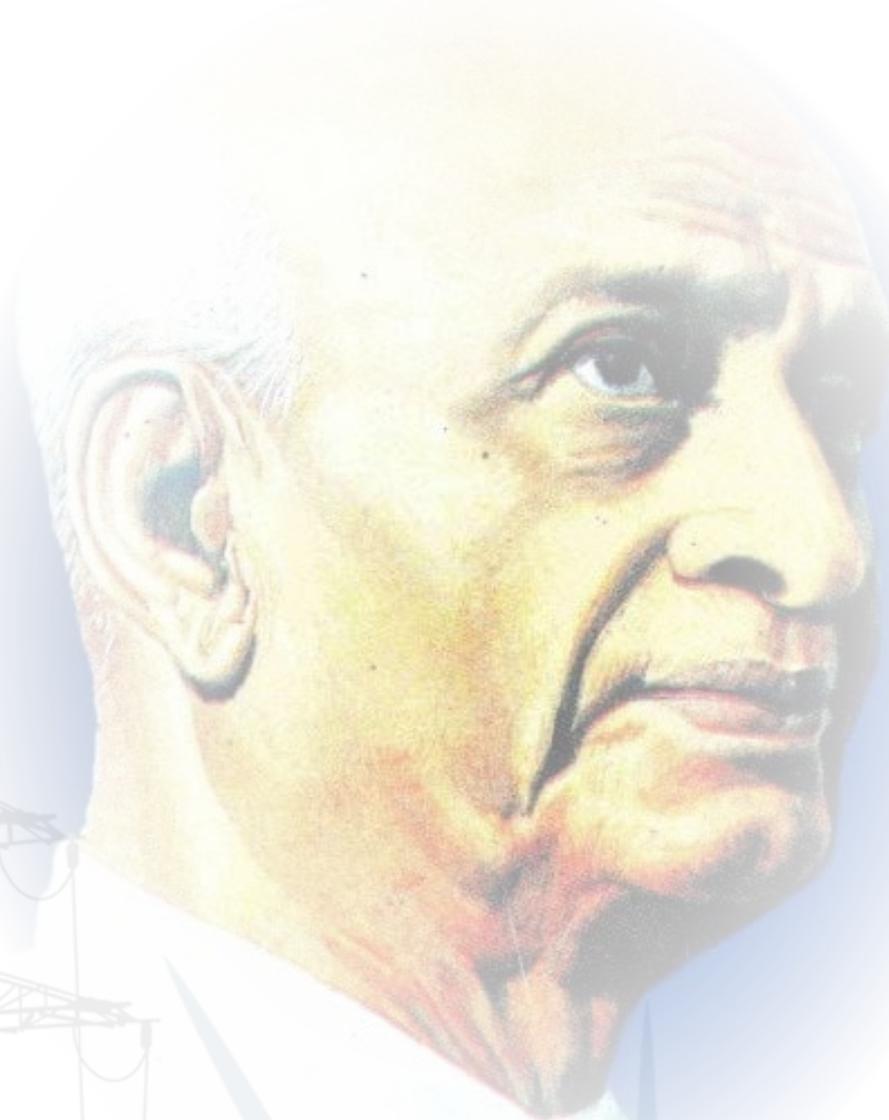
मैं इस पत्रिका के लिए मुख्य संरक्षक श्री ए के श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं संरक्षक श्री संजीव कुमार यादव, उप मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री एस सी जोशी, महाप्रबंधक (सिविल) का विशेष रूप से आभारी हूँ जिनके निर्देशन व प्रोत्साहन के कारण इस संस्करण का प्रकाशन संभव हो पाया। मैं उन सब कार्मिकों का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस संस्करण के प्रकाशन में किसी न किसी रूप में सहायता की है या लेख अथवा कविता प्रकाशन हेतु दिए हैं। मैं सतर्कता विभाग के समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस संस्करण के प्रकाशन में यथाशक्ति सहयोग दिया है।

(बी बी सेठी)

उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)–पीवी

यहां तक कि यदि हम हजारों की दौलत गवां दें, और हमारा जीवन बलिदान हो जाए, हमें मुस्कुराते रहना चाहिए और ईश्वर एवं सत्य में विश्वास रखकर प्रसन्न रहना चाहिए।

Even if we lose the wealth of thousand, and our life is sacrifices, we should keep smiling and be cheerful keeping our faith in God the Truth



सरदार बल्लभ भाई पटेल
(अक्टूबर 31, 1875-दिसम्बर 15, 1950)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म की सालगिरह के अवसर पर किया जाता है

नागरिकों के लिए सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा

मेरा विश्वास है कि हमारे देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। मेरा विश्वास है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए सभी संबंधित पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों तथा निजी क्षेत्र को एक साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक नागरिक को सतर्क होना चाहिए तथा उसे सदैव ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष में साथ देना चाहिए।

अतः, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि:-

- जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी तथा कानून के नियमों का पालन करूंगा;
- ना तो रिश्वत लूंगा, और ना ही रिश्वत दूंगा;
- सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी रीति से करूंगा;
- जनहित में कार्य करूंगा;
- अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करूंगा;
- भ्रष्टाचार की किसी भी घटना की रिपोर्ट उचित एजेंसी को दूंगा।

Integrity Pledge for Citizens

I believe that corruption has been one of the major obstacles to economic, political and social progress of our country. I believe that all stakeholders such as Government, citizens and private sector need to work together to eradicate corruption.

I realise that every citizen should be vigilant and commit to highest standards of honesty and integrity at all times and support the fight against corruption.

I, therefore, pledge:

- To follow probity and rule of law in all walks of life;
- To neither take nor offer bribe;
- To perform all tasks in an honest and transparent manner;
- To act in public interest;
- To lead by example exhibiting integrity in personal behavior;
- To report any incident of corruption to the appropriate agency.

अस्वीकरण

यह पत्रिका मात्र सांकेतिक है, अपने आप में सुविस्तृत नहीं। यह संबंधित विषय पर किसी भी प्रकार से किसी नियम प्रक्रिया तथा वर्तमान अनुदेशों मार्गदर्शी सिद्धान्तों को प्रतिस्थापित नहीं करता है। इस पत्रिका में प्रस्तावित प्रावधान किसी भी प्रकार से किसी भी निगम के कोडस एवं परिचयों का जिनका इसमें हवाला दिया गया है, का अधिक्रमण नहीं करता एवं मामलों को सही संदर्भ में समझने के लिए इन्हें अन्य संगत पॉलिसी, सर्कुलर के समायोजन के साथ पढ़ा जाना चाहिए। इस पत्रिका को किसी भी न्यायालय में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए एवं जहाँ कहीं आवश्यक हो तो संबंधित विषय से संबंधित मूल आदेश को ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस पत्रिका में छपे हुए लेखों में दिए गए आकड़ों की सत्यता की पूर्ण जिम्मेदारी लेखक की है न कि सतर्कता विभाग एनएचपीसी की।

अनुक्रम CONTENTS

शीर्षक	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ सं.
स्वतंत्र भारत@75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता	संजीव कुमार यादव, उप मुख्य सतर्कता अधिकारी, निगम मुख्यालय	1
स्वतंत्र भारत@75: विकास आज तक व सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता का संकल्प	सतीश चंद्र जोशी, महाप्रबन्धक (सिविल), सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय	5
Independent India @75: Self Reliance with Integrity	बी बी सेठी, उप महाप्रबन्धक (मा.सं.)-पीवी, सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय	7
सकारात्मकता : एक उत्कृष्ट सोच	डॉ. देवेन्द्र तिवारी, प्रबंधक (राजभाषा), सुबानसिरी लोअर जलविद्युत परियोजना	9
One Should Know & Comply: Most Common Preventive Vigilance Facts	Bidyadhar Behera, SM (HR), Vigilance, Corporate Office	11
Banning of Business Dealings in NHPC	Alok Ranjan, Senior Manager (Civil), Contracts Civil Division, CC-IV, Corporate Office	12
तब नया सवेरा आयेगा	प्रदीप मौर्य, सहायक प्रबन्धक (सिविल), पी०आई०डी० फील्ड यूनिट-पठानकोट	16
Chetna	Srikanth Viswanadhula, Deputy Manager (HR), Dibang Multipurpose Project	17
Economic Duress : Scheme and Scope in Law of Contracts	Meenakshi Mittal, Deputy Manager (LAW), Arbitration Division, Corporate Office	19
सतर्क बनो-समृद्ध बनो	प्रदीप मौर्य, सहायक प्रबन्धक (सिविल), पी०आई०डी० फील्ड यूनिट - पठानकोट	22
सतर्कता-संयम पल पल की प्राथमिकता	भावना नरयाल, प्रमुख सहायक ग्रेड I, चमेरा पावर स्टेशन III	23
सतर्कता	कमलेश कुमार, परियोजना सतर्कता अधिकारी, सलाल पावर स्टेशन	24
स्वतंत्रता दिवस	मेघान्श बाथरी, पुत्र श्री नवनीत दास बाथरी, सहायक प्रबन्धक (आई०टी०), सुबानसिरी लोअर परियोजना	24
Corruption	A Shyam Prasad Rao, Senior Manager (HR), TLD III Power Station	25
स्वतंत्र भारत @75, राष्ट्र आत्मनिर्भरता में छात्रों की भूमिका	भारत भूषण, सहायक प्रबन्धक (आईटी), सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय	26
बेटियाँ	दिवाकर प्रसाद अवधिया, परियोजना सतर्कता अधिकारी, दुलहस्ती पावर स्टेशन	28
व्यंग-सतर्कता के मायने	उमेश कुमार, परियोजना सतर्कता अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, बनीखेत	29
प्रेरणादायक कविता	प्रनीता चौहान, उप प्रबन्धक (सचिव), क्षेत्रीय कार्यालय बनीखेत	30
शिक्षा	सुरेश कुमार, वरिष्ठ टी जी टी, क्षेत्रीय कार्यालय बनीखेत	31
सत्यनिष्ठा : समृद्धि एवं आत्मनिर्भरता	सत्येंद्र कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी	32
सतर्क भारत समृद्ध भारत	सत्यजीत राय चौधरी, उप प्रबंधक (यांत्रिक), चमेरा-II पावर स्टेशन	33
स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता	पीयूष मनोचा, प्रबंधक (विधि), आर्बिट्रेशन सेल, निगम मुख्यालय	34
सतर्कता जागरूकता सप्ताह मार्गदर्शन नोट (2021)	राजेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल), सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय	35
ईमानदारी - एक जीवन शैली	शशांक सिंह, प्रबन्धक (सिविल), सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय	40
नैतिक पतन	रामफल मीना, वरिष्ठ प्रबन्धक (सिविल), सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय	41
Photo Gallery		43
हम हैं कर्मचारी	सत्येंद्र कुमार सिंह, उप प्रबन्धक (राजभाषा), प्रथम पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020, क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी	67
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	सुश्री विदुशी सिन्हा, कक्षा 6, सुपुत्री, श्री राजेश सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) प्रथम पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020, क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी	69
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	श्रीमती खुशबू चौधरी, धर्मपत्नी, श्री राजेश सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.), प्रथम पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020, क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी	69

शीर्षक	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ सं.
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है...	दुर्गेश चंद्रा, सहायक प्रबंधक (विद्युत), तृतीय पुरस्कार – कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020, क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी	70
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	जितेंद्र सिंह पाल, सहायक प्रबंधक (सिविल), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, पीआईडी पठानकोट	71
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	रमेश कुमार, सहायक प्रबंधक (प्रशासन), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, क्षेत्रीय कार्यालय-बनीखेत	72
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	अश्वनी कुमार, सहायक (विशेष), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, क्षेत्रीय कार्यालय-बनीखेत	73
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	गौरव बिंदल, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, निम्मो बाजगो पावर स्टेशन	74
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	पी एस रावत, वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक), तृतीय पुरस्कार-निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, तीस्ता लो डैम IV परियोजना	75
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	सौरभ नामदेव, प्रबंधक (विद्युत), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, निम्मो बाजगो पावर स्टेशन	76
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	प्रदीप कुमार, सहायक प्रोग्रामर, तृतीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, निम्मो बाजगो पावर स्टेशन	77
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	पंकज कुमार, उप प्रबंधक (विद्युत), प्रथम पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, निम्मो बाजगो पावर स्टेशन	79
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	संजीव कुमार मिश्रा, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) द्वितीय पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, निम्मो बाजगो पावर स्टेशन	80
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	राहुल, सहायक प्रबंधक (सिविल), तृतीय पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, निम्मो बाजगो पावर स्टेशन	81
Vigilant India Prosperous India	शीजा वीएस, सहायक प्रबंधक (सिविल), द्वितीय पुरस्कार-निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, तीस्ता लो डैम IV परियोजना	82
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	बिष्णु कुमार सिंह, सहायक प्रबंधक (यांत्रिक), तृतीय पुरस्कार –निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, तीस्ता लो डैम IV परियोजना	83
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	जावेद अख्तर, उप प्रबंधक (वित्त), प्रथम पुरस्कार –कविता वी ए डबल्यू 2020, टीएलडी III पावर स्टेशन	84
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	चंदा कौशिक, धर्मपत्नी बीजेन्द्र कौशिक, प्रबंधक (भू-विज्ञान), प्रथम पुरस्कार-कविता वी ए डबल्यू 2020, पार्वती II परियोजना	85
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	विनोज राणा, धर्मपत्नी हरबंस राणा, वरि. प्रबंधक(यांत्रिक), द्वितीय पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, पार्वती II परियोजना	86
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	राहुल श्रीवास्तव, प्रबंधक (पर्यावरण), प्रथम पुरस्कार –निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, पार्वती III पावर स्टेशन	87
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	विशाल कुमार त्यागी, प्रबंधक (सिविल), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, पार्वती II परियोजना	89
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	बिजेंदर कौशिक, प्रबंधक (भू-विज्ञान), तृतीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, पार्वती II परियोजना	90
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	औरोबिंदो परमानिक, वरि. प्रबंधक (विद्युत), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, रंगीत पावर स्टेशन	91
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	ऋषि राज शेखर, उप. प्रबंधक (सिविल), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, रंगीत पावर स्टेशन	93
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	प्रवीण पांडे, उप. प्रबंधक (सेफटी), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, रंगीत पावर स्टेशन	95

शीर्षक	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ सं.
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	डॉक्टर सुजीत शुक्ला, उप. मुख्य चिकित्सा अधिकारी, प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, चमेरा पावर स्टेशन-I	96
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	त्रिभुवन नाथ चव्हाण, सहायक प्रबन्धक (यांत्रिक), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, चमेरा पावर स्टेशन-I	98
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	शेखर चन्द्र जोशी, प्रधान सहायक – I, प्रथम पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, टनकपुर पावर स्टेशन	100
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	डी पी पटेल, वरिष्ठ प्रबन्धक (विद्युत), तृतीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, टनकपुर पावर स्टेशन	101
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	अखिलानन्द उप्रेती, प्रबंधक (सचिव), तृतीय पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, टनकपुर पावर स्टेशन	103
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	निरंजन नाथ, वरिष्ठ प्रबन्धक(यांत्रिक), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, टनकपुर पावर स्टेशन	104
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	सेराफिना लाकड़ा, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, सलाल पावर स्टेशन	106
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	गिराज सिंह, उपप्रबंधक (यांत्रिक), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, सलाल पावर स्टेशन	108
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	बिनित साहू, उप-प्रबंधक (सेपटी), तृतीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, सलाल पावर स्टेशन	109
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	अमृता, धर्मपत्नी अनूप कुमार, वरिष्ठ पी.आर.टी., प्रथम पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	111
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	अंकिता गुप्ता, धर्मपत्नी महेश कुमार, उप प्रबंधक, द्वितीय पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	112
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	रुचि सक्सेना, धर्मपत्नी अनुज सक्सेना, वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत), तृतीय – कविता वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	114
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	रमेश कुमार, वरि. प्रबंधक (सिविल), प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	115
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	अनूप कुमार, वरिष्ठ पीआरटी, द्वितीय पुरस्कार– निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	116
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	अनिता अरोड़ा, वरि. पीआरटी, तृतीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	117
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	कुमारी तनवी, पुत्री धर्मेन्द्र कुमार, प्रथम पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	118
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	कुमारी अपर्णा, पुत्री अनूप कुमार, वरि. पीआरटी, द्वितीय पुरस्कार – कविता वी ए डबल्यू 2020, बैरास्यूल पावर स्टेशन	119
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	संजना सिंह, वरिष्ठ प्रबन्धक (पुस्तकालय), निगम मुख्यालय, फरीदाबाद, प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, निगम मुख्यालय	120
Vigilant India, Prosperous India	मार्क वलेरियन लाकड़ा, वरि. प्रबंधक (पीआर), द्वितीय पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020, निगम मुख्यालय	122
Quotes – Corruptions		123

स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता



संजीव कुमार यादव
उप मुख्य सतर्कता अधिकारी,
निगम मुख्यालय

सत्यनिष्ठा एक व्यापक अर्थों वाला शब्द है। यह मानव जीवन को बदलने का सामर्थ्य रखता है। आमतौर पर हम सत्यनिष्ठा का प्रयोग सच्चाई के लिए ही करते हैं। जो इन्सान जीवन में सत्य के पथ पर अग्रसर होता है उसे कभी बड़ी पराजय का सामना नहीं करना पड़ता है। सत्य के बल पर वह जीवन में नित्य आंशिक सफलताओं के मुकाम हासिल करता जाता है। कठिन हालातों में भी सत्य की राह को थामे मानव को कोई विपदा परास्त नहीं कर पाती है तथा उसकी यह अटल सोच उन्हें शेष समाज में सम्मानीय व आदर्श का पद दिलाती है। महात्मा गांधी, बुद्ध, महावीर स्वामी, विवेकानन्द जी जैसे चिर-परिचित नामों के महान बनने में सत्य का बड़ा योगदान था। इन्होंने अपने हृदय में सच को बसाया तथा उसी पर अमल किया। आज हर कोई अपने थोड़े से फायदे के लिए झूठ, प्रपंच का सहारा लेने से नहीं चूकता तो हम उनके अंजाम भी कई बार देखते हैं। जो इन्सान धन के लिए अपना चरित्र डिगा सकता है अथवा अपने मूल्यों को छोड़ सकता है। उसके ये कर्म स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने वाले साबित होते हैं क्योंकि मानव का सबसे बड़ा धन एवं सहयोगी उसका चरित्र है।

भारत विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक रहा है और इस देश की संस्कृति व रंग – ढंग देखकर कोई भी समझ सकता है कि भारत पहले से ही काफी आत्मनिर्भर है। स्वयं के हुनर से स्वयं का विकास करना ही आत्मनिर्भरता का सही मतलब है। हर व्यक्ति यही चाहता है की वह आत्मनिर्भर बने, फिर चाहे उसके रहन – सहन से हो या उसके तौर तरीके से। एक आत्मनिर्भर व्यक्ति केवल स्वयं के लिए नहीं अपितु दूसरों के लिए भी सहारा बन सकता है। सत्य निष्ठा व आत्मनिर्भरता एक दूसरे के पूरक हैं।

आत्मनिर्भर भारत बनाने का अभियान

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 12 मई 2020 को एक अभियान की घोषणा की थी। भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए यह एक अच्छी पहल है। आने वाले कुछ वर्षों में इस अभियान के तहत अधिकतर वस्तुओं का निर्माण भारत में ही किए जाने की योजना है। इसी कारण से इस अभियान का नाम आत्मनिर्भर रखा गया है। इस अभियान के तहत उन सभी विदेशी निर्भरताओं को कम करना है जिस वजह से भारत का ज्यादातर व्यापार दूसरे पड़ोसी देशों पर निर्भर है। इसमें बाहर की वस्तुओं पर निर्भर न रहकर अपने स्वयं के स्तर पर अच्छी गुणवत्ता वाले प्रोडक्ट को हमारे देश में ही तैयार करना, इस अभियान में शामिल है।

जब आप आत्मनिर्भर बनने का
प्रयास करते हैं,
तब आप आत्मनिर्भर भारत बनाने का
प्रयास करते हैं।



आज की बात करें तो हमारे दैनिक जीवन में कई ऐसी वस्तुएं हैं जिसकी आपूर्ति हमें हमारा पड़ोसी देश चीन

करता है। चीन के अलावा अमेरिका, कोरिया, सऊदी अरब भी इसी श्रेणी में शामिल हैं जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। भारत के विकास की जड़ें अगर मजबूत करनी हैं तो हमें पहले आत्मनिर्भर बनना पड़ेगा तभी हमारा भारत विकासशील से विकसित देशों की श्रेणी में आ पाएगा। इस अभियान के तहत हमारी जरूरी व आवश्यक चीजों का निर्माण हमारे देश में ही किया जाएगा तभी हमारा देश आत्मनिर्भर भारत कहलायेगा।

देश की स्वतंत्रता के बाद से ही भारत आत्मनिर्भर बनने का सपना देख रहा है। आजादी से पूर्व ही भारत की आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन भी चलाया गया था जिसमें लोगों से विदेशी वस्तुओं पर निर्भर न रहकर भारत में बनी वस्तुओं पर निर्भर रहने की अपील की थी। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी स्वयं भी स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करते थे, और महात्मा गांधी ही ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने आत्मनिर्भर भारत की तरफ पहला कदम उठाया था।

परंतु दुख की बात यह है कि आजादी के 70 साल बाद भी भारत ने इस सपने की ओर कोई और नया कदम नहीं उठाया। मगर विश्व में व्याप्त इस कोरोना महामारी की वजह से भारत को आत्मनिर्भर बनने का सपना एक बार फिर देखा और आत्मनिर्भर का सही मतलब समझा। इसके बाद ही भारत के दिल में आत्मनिर्भर बनने का सपना पलने लगा।

भारत को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा महात्मा गांधी के उस सविनय अवज्ञा आंदोलन से ही मिली थी। इस आंदोलन के तहत लोगों ने विदेशी कपड़े पहनने बंद कर दिये थे और अपने हाथ से बुने हुए कपड़े पहने थे। अब वर्तमान में भारत का यह अभियान उसी सपने को पूरा करेगा और भारत बनेगा आत्मनिर्भर।

आत्मनिर्भर भारत के पाँच आधारभूत स्तम्भ

पाँच आवश्यक स्तम्भ जो भारत को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करेंगे:



- **तकनीकी** – भारत में तकनीकी काफी विकसित है और इसी तकनीक के चलते भारत विश्व शक्ति बनने का साहस रखता है। भारत की तकनीकी क्षमता इसी का एक मुख्य अंग है जो भारत को आत्मनिर्भर बनाएगा।
- **सत्यनिष्ठा**– नई परंपराएं यून ही स्थापित नहीं होतीं, बल्कि उनके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प की जरूरत होती है। एक नागरिक के रूप में हमारा आचरण ही भारत का सुनहरा भविष्य निश्चित कर नए भारत की दिशा तय करेगा। सत्य के बल पर जीवन में नित्य आंशिक सफलताओं के मुकाम हासिल किए जा सकते हैं। कठिन हालातों में भी सत्य की राह को थामे मानव को कोई विपदा परास्त नहीं कर पाती है।
- **अर्थव्यवस्था** – वर्तमान की भारत की अर्थव्यवस्था एक मिश्रित प्रकार की अर्थव्यवस्था है जिसमें परिवर्तन किया जाना संभव है। अर्थव्यवस्था ही एक ऐसा साधन है जो भारत को आत्मनिर्भर बनने की ओर मोड़ सकता है।
- **इन्फ्रास्ट्रक्चर** – भारत का इन्फ्रास्ट्रक्चर इतना मजबूत है की यह भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मदद करेगा।
- **मांग** – भारत में कच्चे माल की मांग इतनी ज्यादा बढ़ रही है की हमें पड़ोसी देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर हम कच्चे माल का निर्माण भारत में करते हैं तो उसी स्थिति में भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो सकेगा।

आत्मनिर्भर बनने के फायदे

अगर भारत आत्मनिर्भर बनता है तो उस स्थिति में भारत को कई तरह के फायदे होंगे जो स्वावलंबी भारत को विश्व में एक नई पहचान दिलाने में मदद करेंगे:

- **आत्मनिर्भर बनने के बाद किसी के आगे हाथ नहीं फैलाने पड़ेंगे** – भारत में हमारे दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं का आयात चीन या अन्य पड़ोसी देशों से किया जाता है। अगर भारत का यह आत्मनिर्भर बनने का सपना पूरा होता है तो भारत को किसी अन्य देश के आगे हाथ नहीं

फैलाने पड़ेंगे और भारत स्वयं ऐसी वस्तुओं का निर्माण करने लगेगा।

- **देशी उद्योग में बढ़ोतरी** – भारत के आत्मनिर्भर बनने से भारत में कई तरह की वस्तुओं का निर्माण होगा और भारत में उद्योग भी बढ़ेंगे। भारत उन वस्तुओं को विदेश में भी भेज सकेगा और इससे भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।
- **रोजगार के अवसर** – आत्मनिर्भर से भारत में देशी और घरेलू उद्योग बढ़ेंगे जिस वजह से भारत में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और देश के कुशल और सक्षम लोगों को इससे रोजगार भी मिलेगा। इससे देश के आर्थिक हालात भी सुधर सकेंगे।
- **गरीबी से मुक्त होगा** – देश में आत्मनिर्भरता से उद्योगों के साथ साथ युवाओं को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे, जिससे देश में गरीबी भी कम हो सकेगी।
- **मजबूत अर्थव्यवस्था** – भारत के आत्मनिर्भर बनने से देश में व्यापार के अवसर तो बढ़ेंगे ही, साथ ही इससे देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी।
- **आयात की जगह निर्यात बढ़ेगा** – भारत के आत्मनिर्भर बनने से पहले देश अब तक जिन वस्तुओं का आयात करता था उसका अब भारत कर सकेगा निर्यात, इससे देश में विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ेगा।

- **आपदा के समय संकटमोचक बनेगा खजाना** – आत्मनिर्भर बनने से भारत में रोजगार बढ़ेगा और देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी जिससे संकट के समय वह धन देश की रक्षार्थ काम आ सकेगा।

आत्मनिर्भरता के अवसर

कोरोना महामारी के समय में हमने देखा ही है की भारत के साथ – साथ विश्व भी कई संकटों से गुजरा है। इसके बावजूद भी भारत में कई ऐसे अवसर आए जिसकी बदौलत भारत में सैनिटाइजर और मास्क का घरेलू स्तर पर उत्पादन होने लगा। देश में घरेलू उत्पाद तो बढ़े ही साथ ही इससे रोजगार भी बढ़ा।

भारत पहले से ही इस भयानक महामारी से लड़ने के लिए कई सारे प्रोडक्ट बना चुका है जैसे पीपीई किट, वेंटिलेटर, मास्क, सैनिटाइजर इत्यादि। भारत में संसाधनों की कमी नहीं है परन्तु लोगों को अवसर नहीं मिलते हैं इस कोरोना महामारी की वजह से लोगों को अवसर भी मिले हैं जिस वजह लोगों ने घरेलू उत्पादों में वृद्धि की है। कोरोना महामारी से लड़ने के लिए इन वस्तुओं का निर्माण के संदर्भ में भारत की तरफ से यह पहला प्रयास है और काफी हद तक यह सफल भी रहा। इसकी वजह से हमारा देश विश्व में एक अच्छी पहचान बना चुका है।

आत्मनिर्भर भारत के समक्ष संभावित चुनौतियां

भारत के आत्मनिर्भर बनने के सपने को साकार करने में कुछ चुनौतियां ऐसी हैं जिससे निपटने के लिए सत्यनिष्ठा जरूरी है:

- **आधारभूत ढांचा** – कई आर्थिक व व्यापार विशेषज्ञों की मानें तो उनके अनुसार, चीन से निकलने वाली कई अधिकांश कंपनियों के भारत में न आने का एक सबसे बड़ा मुख्य कारण ही भारतीय औद्योगिक क्षेत्र (विशेष कर तकनीक के संदर्भ में) में एक मजबूत आधार ढांचे के अभाव को माना जाता है। यही वजह है कि भारत में कई वस्तुओं का आयात ज्यादा मात्रा में किया जा रहा है जिस वजह से भारत का काफी व्यापार दूसरे देशों पर निर्भर है। आत्मनिर्भर भारत बनने की इस समस्या को सुधारने की भी जरूरत होगी।



- **लागत और गुणवत्ता** – भारत के स्वयं के उत्पादों में लागत और गुणवत्ता एक सबसे बड़ी समस्या है। भारत के उत्पाद निर्माण में यह देखना जरूरी है कि क्या वास्तव में भारत में बने उत्पादों की गुणवत्ता अच्छी है और उनकी लागत कम हो। हालांकि भारत में बनने वाली वस्तुओं पर लागत भी कम लगेगी और उस पर व्यय भी कम आयेगा।
- **जनसंख्या और गरीबी** – भारत में जनसंख्या और गरीबी दोनों एक साथ तेजी से बढ़ रही है। किसी भी नये उत्पादन के लिए सबसे पहली आवश्यकता होती है पूंजी, हालांकि भारत में कई ऐसी योजनाएं हैं जो किसी भी नये उत्पादन या व्यवसाय को चालू करने के लिए लोन मुहैया कराती हैं। परन्तु यह भी कहा जा सकता है कि शुरुआती समय में देश को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

निजी क्षेत्रों को बढ़ावा

आत्मनिर्भर भारत अभियान में निजी क्षेत्रों को हो सकता है फायदा, हालांकि इस अभियान का उद्देश्य भी कहीं न कहीं यही है कि इससे देश में व्यापार व उद्योगों को बढ़ाया जाए।

- आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत देश के निजी क्षेत्रों को बढ़ाया जायेगा। इसमें देशी उद्योगों को व व्यापार को बढ़ाने हेतु कई बड़ी घोषणाएं की गई हैं।
- प्राइवेट सेक्टर की कंपनियों को इस अभियान के तहत सरकारी क्षेत्र में भी काम करने के लिए खोल दिया जाएगा।

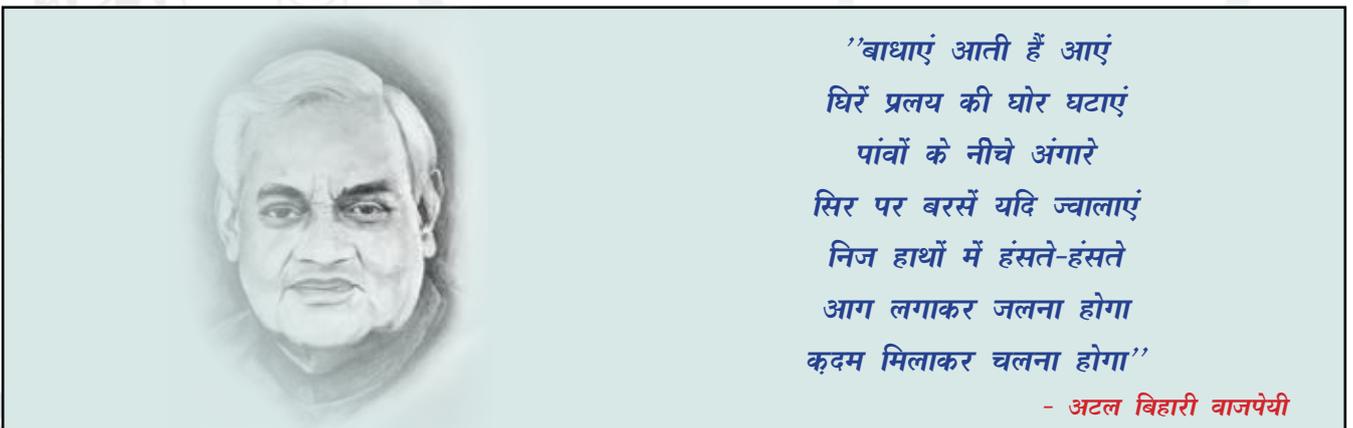
- इस अभियान के तहत भारतीय बाजार में निजी कंपनियों की डिमांड व उनका हस्तक्षेप भी बढ़ जाएगा।

दूसरों पर निर्भर रहने का नुकसान

देश में संसाधन सीमित है जिस वजह से हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं। अगर हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं तो हमें उनके अनुरूप काम करना पड़ता है और उस देश की हर उस शर्त को मानना होता है जो हमें भले ही मंजूर न हो। अगर भारत देश दूसरों पर निर्भर रहता है तो इससे हमारे देश को आर्थिक नुकसान होता है और दूसरे देश को आर्थिक फायदा होता है। दूसरों पर निर्भर रहने से हमारा देश काफी पीछे रह जाता है और काफी हद तक रह भी गया है। दूसरे देशों पर निर्भर रहने से हमारे देश में बेरोजगारी जैसी भयानक समस्या आ सकती है।

निष्कर्ष

देश में कोरोना महामारी की वजह से देश को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है। देश को कई आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा था। वर्तमान में देश के आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत के बाद ही हमें इसके परिणाम देखने को मिले हैं। देश में कोरोना से लड़ने के लिए पीपीई किट, मास्क, सैनिटाइजर इत्यादि भारत में बनने लगे और इतना ही नहीं, वैश्विक महामारी को जड़ से मिटाने के लिए कोरोना का टीका भी भारत में ही बनाया गया है। हमें ज्यादा से ज्यादा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने की आवश्यकता है। जिससे कि हम अपने देश को आत्मनिर्भर और अपने राष्ट्र को आगे बढ़ाने में अपना योगदान कर सकें।



''बाधाएं आती हैं आएं
घिरें प्रलय की घोर घटाएं
पांवों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं
निज हाथों में हंसते-हंसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा''

- अटल बिहारी वाजपेयी

स्वतंत्र भारत @75: विकास आज तक व सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता का संकल्प



सतीश चंद्र जोशी

महाप्रबंधक (सिविल),
सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय

यह गौरव की बात है कि हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिक हैं जहाँ पर हर नागरिक को हर तरह से संवैधानिक तौर पर स्वतंत्रता प्राप्त है। यहाँ पर सभी जाति, धर्मों व समुदायों को समान रूप से प्रगति करने के अवसर प्राप्त हैं। गुलामी के लंबे दौर से गुजरने के बाद 1947 में भारत देश स्वतंत्र हुआ व एक लोकतान्त्रिक देश के तौर पर विकास के पथ पर अग्रसर हुआ। आजादी के बाद 75 वर्षों का सफर तय करने जा रहे हैं।

अमृतपर्व के रूप में मनाकर 75वीं वर्षगांठ का स्वागत किया जा रहा है जोकि वर्षगांठ के अगले वर्ष तक जारी रहेगा। इस दौरान अलग अलग कार्यक्रमों के द्वारा जन जन की भागीदारी सुनिश्चित कर देशभर में इस पर्व को ऐतिहासिक रूप दिए जाने का संकल्प लिया गया है। यह पर्व भारत को आजादी दिलाने वाले नायकों को याद करने, आजादी के बाद 75 वर्षों में भारत के विकास व उपलब्धियों को जानने, भारत के गौरवशाली इतिहास व भारत कि संस्कृति व भारत की कला को समझने हेतु उद्देशित है। किसी भी राष्ट्र का गौरव तभी जाग्रत रहता है जब वो अपने स्वाभिमान और बलिदान की परम्पराओं को सँजोकर अगली पीढ़ी को भी सिखाता है, संस्कारित करता है, उन्हें इसके लिए निरंतर प्रेरित करता है। किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल रह सकता है जब वो अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से हर पल जुड़ा रहता है।

**“
आत्मनिर्भर भारत का मतलब सिर्फ
इंपोर्ट को कम करना ही नहीं है,
बल्कि हमारे सामर्थ्य के आधार पर
अपने कौशल को बढ़ाना है, उस
स्किल को आगे बढ़ाना भी है।**

**आत्मनिर्भर भारत में कई चुनौतियां
होंगी, लेकिन अगर ये चुनौतियां हैं
तो देश के पास करोड़ों समाधान
देने वाली शक्ति भी है।**

**”
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**

यद्यपि हम भारत के स्वतंत्रता के विशेष दिवसों को प्रत्येक वर्ष हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं लेकिन स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को मनाने हेतु किए जा रहे विशेष प्रयासों ने इस वर्ष को अलग स्वरूप दिया है। इस वर्षगांठ को

पिछले 75 वर्षों में भारत ने विकास तो किया ही साथ ही कई चुनौतियों का भी सामना किया। आजादी के बाद ही पड़ोसी मुल्कों से युद्ध, गरीबी व भुखमरी कि त्रासदियाँ, आतंकवाद, प्राकृतिक आपदाएं लगातार प्रगति के मार्ग पर रोड़े अटकाती रहीं लेकिन देश सभी चुनौतियों का सामना करते हुए लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा। सैन्य क्षेत्र में भारत एक महाशक्ति बनकर उभरा है। परमाणु हथियारों से संपन्न भारत के पास विश्वस्तर की एक शक्तिशाली सेना है। मिसाइल तकनीकी में दुनिया भारत का लोहा मान रही है। जहाँ दूध क्रांति व हरित क्रांति ने खाद्यान्न के क्षेत्र में हमें आत्मनिर्भर बनाया वहीं शिक्षा व विज्ञान ने हमें एक विकासशील देश के रूप में पहचान दी है। चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था

तेजी से आगे बढ़ी है व भारत तेजी से विकास के रास्ते पर आगे बढ़ा है। आर्थिक, सैन्य एवं अंतरिक्ष क्षेत्र में इसने सफलता की बड़ी छलांग लगाई है। भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए और आज चुनिंदा देशों में शामिल है। आईटी सेक्टर में देश अग्रणी बना हुआ है। इन उपलब्धियों ने देश को सुपरपावर बनने के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया है। अपने ज्ञान-विज्ञान का परिचय देते हुए भारत ने आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ी है।

हम गर्व से कह सकते हैं कि पिछले 75 वर्षों में भारत ने विश्व में अपनी एक अलग उन्नतशील राष्ट्र की छवि बनाई है। भारतीय देश विदेश में अपनी कर्मठता से अपनी पहचान बना रहे हैं। हमारे पास विशाल मानव शक्ति है। भारत के पास गर्व करने के लिए प्राकृतिक संसाधन हैं, समृद्ध इतिहास है, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत है, प्राकृतिक विविधता है, खेती हेतु उपजाऊ जमीन है व खनिजों का भंडार है। सामाजिक व सांस्कृतिक विविधता होते हुए भी आपसी भाईचारा है जिससे कि भारत ने सशक्त राष्ट्र के रूप में सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, खेल एवं तकनीकी क्षेत्र की विकास यात्रा में अपनी एक अलग पहचान बनायी है।

आत्मनिर्भरता में भारत तेजी से अग्रसर हो रहा है। कोरोनाकाल की विश्वव्यापी महामारी में हमने सिद्ध किया है कि विषम परिस्थितियों में कैसे हिम्मत से काम लिया जाता है। मानवता को महामारी के संकट से बाहर निकालने में वैक्सीन निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता एक उत्कृष्ट उदाहरण है। आज भारत के पास वैक्सीन उत्पादन की सामर्थ्य है तो वसुधैव कुटुंबकम के भाव से हम साथ साथ विदेशों में भी वैक्सीन पहुँचा रहे हैं।

पिछले 75 वर्षों से आम आदमी को सशक्त बनाने के लिए सरकारें जनकल्याणकारी नीतियां और योजनाएं लेकर आईं। योजनाओं का लाभ गरीबों एवं कमजोर वर्गों तक पहुंचाया गया है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, खाद्य सुरक्षा बिल, मनरेगा, डिजिटल क्रांति, जन-धन योजना, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी), राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, टीकाकरण जैसे कार्यक्रमों एवं योजनाओं ने आम आदमी को सशक्त बनाया है। इन महात्वाकांक्षी योजनाओं से विकास की गति तेज हुई। सरकार की इन योजनाओं को पूरी तरह से लागू

करने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। चुनौतियाँ जारी हैं क्योंकि इन विकास योजनाओं के बावजूद कई खामियाँ रह गई हैं, देश में गरीबी, पिछड़ापन दूर नहीं हुआ है व विकास से जुड़ी समस्याएं अभी भी मौजूद हैं।

आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, सामान्य भारतीयों के परिश्रम व उद्धमशीलता का प्रमाण है। लेकिन जरूरत है कि भारत के समृद्ध इतिहास, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत व पिछले 75 वर्षों में अर्जित की गई उपलब्धियों को सँजोकर रखने की साथ ही विकास के रथ को निरंतर बढ़ाते रहें। वर्तमान पीढ़ी का कर्तव्य हो जाता है कि आने वाली पीढ़ी को एक सशक्त व उन्नत भारत दें। यह नितांत आवश्यक है कि उत्तरोत्तर विकास को सुनिश्चित करने हेतु हरेक नागरिक सच्चाई, निष्ठा व परिश्रम से अपना योगदान दे। आत्मनिर्भर होकर देश के संसाधनों का समुचित उपयोग करना होगा। हर नागरिक चाहे वह कहीं भी हो, किसी भी क्षेत्र पर हो, किसान हो, मजदूर हो, व्यवसायी हो, नौकरीपेशा हो वह अपने कर्तव्य को समझे व अपने काम को पूर्ण निष्ठा से अंजाम दे। हमारी यह कोशिश भारत देश को विश्वगुरु के पद पर पुनः स्थापित करेगी, आत्मनिर्भर बनाएगी व आने वाली पीढ़ी को एक सुदृढ़ व गौरवशाली राष्ट्र सौंपने में सफल रहेगी। स्वतंत्र भारत @75 का पर्व हमें एक मौका दे रहा है कि हम इस अभियान से जुड़ें व इसके उद्देश्य को हासिल करने में अपना पूर्ण योगदान दें।

जय हिन्द ।

**विश्व की आज की स्थिति
हमें सिखाती है कि**

**आगे का मार्ग
एक ही है-**

“आत्मनिर्भर भारत”

INDEPENDENT INDIA @75: SELF RELIANCE WITH INTEGRITY



बी बी सेठी

उप महाप्रबन्धक (मा.सं.)—पीवी,
सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय

Steering a move towards solemnizing the glorious 75 years of independence on 15th August, 2022 and witness various changes in the upcoming year, the country has taken a big drive for '**Azadi ka Amrit Mahotsav**' throughout the country. In acknowledgment of attending this significant stage in India's long journey and as per the direction of Central Vigilance Commission, Vigilance Awareness Week-2021 (VAW 2021) shall be observed in the last week of October i.e from 26th October to 1st November, 2021. In view of the present scenario and need for being Self-sufficient, to overcome ongoing and upcoming challenges, the Commission has come up with an appropriate theme with a noble mind i.e. '**INDEPENDENT INDIA @75: SELF RELIANCE WITH INTEGRITY**'.

During the period of seven and half decades of independence, India has experienced ups and downs in the various spheres viz. education, defence, socio-economy, health, socio-political, skill development etc. as obstacles in the path of progress and prosperity of the Nation. India being a developing nation with an aspiration to achieve all-round sustainable development, advancing to join the group of developed nations with the objective of Self Reliance and Integrity.

Central Vigilance Commission being the apex anti-corruption body has been continuously making its efforts to fight against corruption and continue its endeavour to ensure Integrity

in public life. The concept Self Reliant may be understood as the ability of the Nation in harnessing its resources, skills and potential to the maximum of its use that gives a sense of pride and confidence to the nation that it can tread the path of progress of its own. That doesn't mean the nation gets cut off from the rest of the world but to enrich our existing potential and achieving our goals without any outside interference. It is an approach to master in each sector of our economy to maintain a stable and viable economy in the face of any eventuality. India being the mother of diversity in its all kinds where 70 % of the population are below 35 years and 50% of the population are below 25 years has great potential and advantage in the field of being Self Reliant.

We may flashback to Gandhian Era where emphasis was led down on indigenous products and Self Reliant India. In the present-day world order, especially in the regime of the present government, emphasis is on **Self Reliant India (Atma Nirbhar Bharat)** which has reflected during novel Covid-19 Pandemic. During the Global Pandemic 2019, Government of India has taken a strong commitment in combating the fierce menace by introspection and initiations of programmes like **Start-up India, Make in India, Skill India** etc. to engage the influx' the rural-urban workforce. Time as the testimony in the context of the great Nation like India

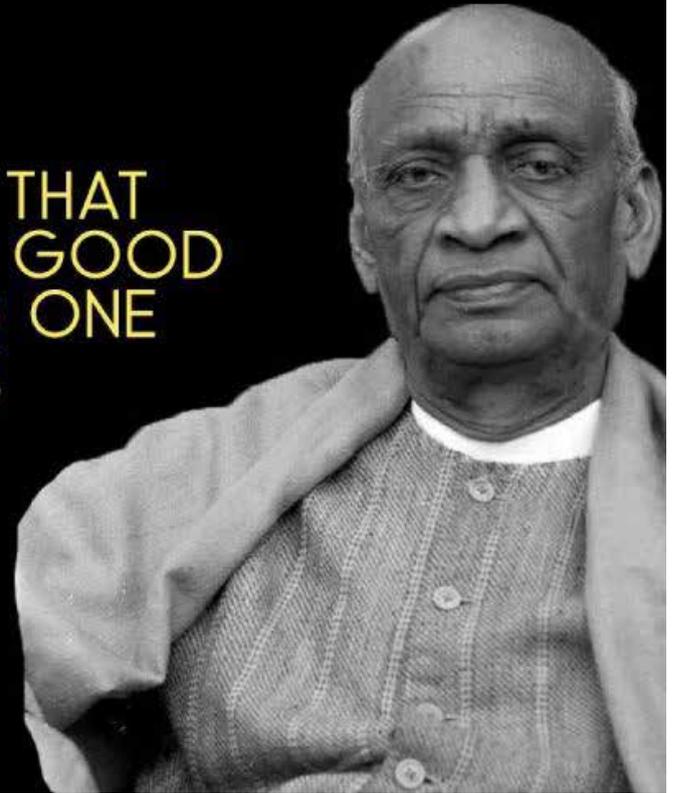
which has enforced Self Reliance mission and stand out as a strong nation, even in this deadly pandemic time. It is a non denying fact that the country after independence started its journey with minimum resources as an underdeveloped economy, very raw infrastructure with less provision for health and education but gradually making better and better through Five year plans for improvement and advancement of the economy with thrust on integrity and Self Reliance.

To confirm integrity, honesty, and righteousness Central Vigilance Commission came to existence. With passage of time various other enforcing mechanisms were established viz. CBI, Directorate of Enforcement, Income Tax, IB and complaint mechanisms were strengthened encouraging Whistle Blower Policy and Public Interest Disclosure and Protection of Informers.

Various campaigns against corruption have been started by the Commission from time to time starting establishment of integrity club, outreach activities in schools and colleges. This year the Commission has emphasized on Public Interest Disclosure and Protection of Informers (PIDPI) complaints. The Commission has made efforts to bring awareness among citizens by organizing various programmes involving the public against corruption, in other words promoting honesty, integrity, righteousness and good citizenship for their contribution in the nation building towards establishing a corruption free India. Therefore, truly the theme gets glorified in the way the 75 years journey of independent India with Self Reliance with Integrity is nothing but an outcome of the people's honest participation as well as the government's efforts for the progress and prosperity of the country taking the nation to a greater height.

MY ONLY DESIRE IS THAT
INDIA SHOULD BE A GOOD
PRODUCER AND NO ONE
SHOULD BE HUNGRY,
SHEDDING TEARS
FOR FOOD IN
THE COUNTRY.

SARDAR VALLABHBHAI PATEL



सकारात्मकता : एक उत्कृष्ट सोच



डॉ. देवेन्द्र तिवारी

प्रबंधक (राजभाषा),
सुबानसिरी लोअर जलविद्युत परियोजना

आओ चले उस पथ की ओर,
जिसमें हो सच्चाई की ठौर ।
रुकना हो तो जरूर रुकिए,
पल भर मे ही फिर से चलिए ।
आसान नहीं है जिंदगी का कारवां,
मेहनत के पथ हो जाओ रवाना ।

रास्ते में आएंगे हजारों पत्थर-कंकड़,
तुम रुको मत, बढ़ते जाओ पल-पल ।
देखो वो मंजिल आ गई निकट,
चलो रास्ते पर पदचिह्न बनाकर अमिट ।
आशाओं का बनाओ मंतव्य,
रहो सकारात्मक, पाओ हर गंतव्य ।

व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं। सम-सामयिक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार व नजरिया एक प्रसन्न और अप्रसन्न व्यक्ति के बीच सबसे बड़ा अंतर पैदा करता है।



यह भी सत्य है कि हर समय कोई भी प्रसन्न नहीं रह सकता, लेकिन कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी खुशियां निचोड़ लेने की क्षमता आप में होनी चाहिए। सकारात्मक सोच रखने के लिए कुछ बातों को प्रमुखता से लेना होगा। जैसे—

हार न माने :- हर युवा का एक सपना होता है। उसे पूरा करने के लिए बहुत हद तक वह कोशिश भी करता है। कुछ व्यक्तियों के सपने पूरे हो जाते हैं और कुछ व्यक्ति सपने में खो जाते हैं। सपना तो अवश्य देखें, लेकिन उन सपनों को पूरा करने से पहले हार मान लेना या उन्हें बीच में छोड़ देना सफलता की दूरी कई कदम बढ़ा देती है। सफलता के लिए जरूरी है सकारात्मक होना। जिस समय आप यह सोचना शुरू कर देते हैं कि 'अगर आप लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाए तो क्या करेंगे, उसी पल आप हार जाते हैं।

सकारात्मकता के लिए कुछ बातों पर अवश्य ध्यान दें :-

स्वास्थ्य का ध्यान रखें :

अपने शरीर को आप सबसे ज्यादा स्वस्थ तब बना सकते हैं, जब आप ज्यादा चिंता करने का विषय अपने दिमाग से निकाल देंगे।

जब किसी व्यक्ति का ध्यान बीमारी पर होता है तो वे उसे स्थायी बना देता है। बीमारी तब तक ठीक नहीं होगी जब तक उसका ध्यान ठीक होने की ओर नहीं जाता। उसके

लिए हमें सकारात्मक सोचना होता है। अपने विचारों को अच्छे स्वास्थ्य की ओर ले जाना होता है। इसका एक जीता-जागता उदाहरण मॉरिस गुडमैन (Morris Goodman) है जो कि विश्वभर में The Miracle Man के नाम से प्रसिद्ध है। उनका प्लेन क्रैश हो गया था, जिनमें उनके फेफड़े खराब हो गए थे और उनका पूरा शरीर क्षतिग्रस्त हो गया था। डॉक्टरों के अनुसार उनका कभी भी बिस्तर से उठना संभव नहीं था। फेफड़े खराब होने के कारण वे केवल मशीनों द्वारा ही सांस ले रहे थे। अपनी स्थिति चिकित्सकों से सुनकर भी उन्होंने अपने दिमाग को अस्वस्थ होने नहीं दिया और सोच लिया कि बहुत जल्दी वह इस अस्पताल से चलकर वापस घर जाएंगे और इसका परिणाम यह निकला कि कुछ ही महीनों के बाद (लगभग 7-8 महीनों के बाद) वे उस अस्पताल से चलकर बाहर निकले। यह आश्चर्य देखकर चिकित्सक भी हैरान थे। इस हादसे के बाद मॉरिस गुडमैन ने कहा कि “मुझे विश्वास था कि मैं अपने पैरों पर चलकर अस्पताल से जाऊंगा।” उनकी सकारात्मकता के कारण ही वे ठीक हो पाए वरना चिकित्सकों ने तो पहले ही घोषणा कर दी थी कि वे कभी ठीक नहीं हो पाएंगे।

**‘सकारात्मक सोच आपके
जीवन को सही दिशा देती है।’
‘सही सोचें, सही समझें, सही दिशा में आगे बढ़ें।’**

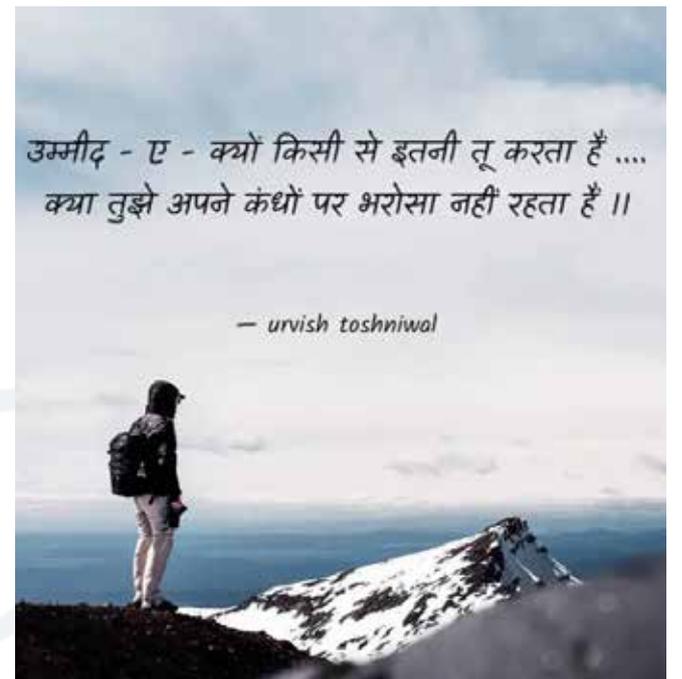
मन की आवाज सुनें :

हर व्यक्ति का एक सपना होता है और उसे पूरा करने के लिए बहुत हद तक कोशिश भी करता है। सबसे पहले मन की आवाज सुनें और जो सपना देखा है उसके निष्कर्ष तक पहुंचें। यदि हम निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद, उन दायित्वों को निभाने की क्षमता रखते हैं तो दृढ़ हो जाए उस सपने को पाने के लिए क्योंकि ऊर्जा वही बजती है जहां ध्यान जाता है। आप अवश्य ही अपने सकारात्मक विचारों एवं अथक प्रयास से अपने सपने को प्राप्त करेंगे।

सृष्टि अपना कार्य बिना किसी की मदद के करती है आप भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लग जाएं। अगर आप अपने हालात बदलना चाहते हैं तो सबसे पहले अपनी सोच बदलें।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने एक “प्रतीक चिन्ह” अपनाया है। इस प्रतीक चिन्ह में एक आंख का आलेखी चित्रण है जो अंग्रेजी के अक्षर “सी” के भीतरी हिस्से में प्रदर्शित की गई है। मनोहर नीले रंग में चित्रित आंख, लोक सेवकों की अवैध तथा अनुचित कार्रवाई के कारण अधिकारों में किसी भी कमी के विरुद्ध समाज के सतर्क बने रहने के सामूहिक संकल्प का प्रतीक है। अक्षर “सी” के भीतर प्रदर्शित आंख, सभी सार्वजनिक संगठनों के सतर्कता प्रशासन का आयोग द्वारा निरीक्षण किए जाने तथा सभी सतर्कता मामलों में एक शीघ्र एवं तार्किक निर्णय पर पहुंचने में उन्हें आयोग द्वारा सहायता दिए जाने को निरूपित करती है। इस प्रतीक चिन्ह ने अपने में सकारात्मक तथा नकारात्मक तत्व समूहित किए हुए हैं तथा नीले रंग का सुविचारित चयन एक सक्रिय, सदैव सतर्क परन्तु सकारात्मक एवं मैत्रीपूर्ण केन्द्रीय सतर्कता आयोग को व्यक्त करता है। प्रसिद्ध ग्राफ अभिकल्पक श्री बिनाय सरकार ने यह “प्रतीक चिन्ह” विशेष रूप से आयोग के लिए अभिकल्पित किया है।

अंततः यह कहना समीचीन होगा कि सकारात्मक सोच और सतर्कता के साथ एक दूसरे का संबल बनिये! तिरस्कार नहीं, प्यार बाँटिये! प्रकृति का नियम है जो दोगे वही वापस मिलेगा!



ONE SHOULD KNOW & COMPLY: MOST COMMON PREVENTIVE VIGILANCE FACTS



Bidyadhar Behera
SM (HR)
Vigilance, Corporate Office

INTIMATION OF TRANSACTIONS UNDER RULE-20(1) TO 20 (3) OF NHPC CDA RULES

Rule-20 (1):

- No employee of the Company shall, except with the previous knowledge of the competent authority, which shall be intimated in the proforma attached as **Annexure-III** acquire or dispose off any immovable property by lease, mortgage, purchase, sale, gift or otherwise, either in his own name or in the name of any member of his family.

Rule-20 (2):

- No employee of the Company shall, except with the prior sanction of the competent authority which shall be applied in the proforma attached as **Annexure-III** or **IV** as the case may be, enter into any transaction concerning any immovable or movable property with a person or a firm having official dealings with the employee or his subordinate.

Rule-20 (3):

- Every employee of the Company shall within one month report to the competent authority, in the proforma attached as **Annexure-IV**, every transaction concerning moveable property owned or held by him in his name or in the name of a member of his family if the value of such property exceeds 2 months basic pay in case of board level, below Board level executives, non-unionized supervisors and Workmen. (Financial limit enhanced vide Part-I Office Order No. 84/2016 dated 10.11.2016)

PLEASE GO THROUGH THE FOLLOWING CIRCULARS FOR GETTING INFORMATION REGARDING SUBMISSION OF DETAILS OF TRANSACTIONS IN RESPECT OF MOVABLE/IMMOVABLE PROPERTIES IN ANNEXURE-III & IV :

- INFORMATION REGARDING PAST TRANSACTIONS OF PROPERTY :**
Refer Circular No. PEE/170/1210 dated 09.08.2016
- MOVABLE PROPERTY TRANSACTION LIMIT- CIRCULAR 09.08.2016 :**
Refer Part-I Office Order No. 84/2016 dated 10.11.2016
- INTIMATION OF MOVABLE (Annexure-iv) /IMMOVABLE PROPERTY (annexure-III) THROUGH SAHAJ SEWA PORTAL:**
Refer Circular No. PEE/III/Code dated 06.04.2021

BANNING OF BUSINESS DEALINGS IN NHPC



Alok Ranjan

Senior Manager (Civil),
Contracts Civil Division, CC-IV, Corporate Office

1. Why Banning of Business Dealings

NHPC Limited being a premier Public Sector Organization in Hydro Power Development and other renewable source of energy in India and internationally, conducts its business in highest ethical standards and corruption free business environment. As NHPC is committed for timely completion of the Projects without compromising on quality, it would not be in the interest of the Corporation to deal with Agencies who commit deception, fraud or other misconduct in the tendering process and/or during execution of work. Therefore the Policy like Banning of Business Dealings is essential to deal with such Agencies viz. parties/ contractors/ suppliers/ bidders who indulge in any sort of corruption, misconduct or fraud.

Further as per the advice & recommendation of Central Vigilance Commission (CVC) a Memorandum of Undertaking (MOU) for implementation of Integrity Pact (IP) was signed between NHPC Limited and Transparency International India (TII) on 15.05.2009 and since then the Integrity Pact (IP) is under effective implementation in NHPC. IP is an integral part of the Contract Document for procurement of Works/ Goods/ Services (applicable as per the threshold limit) along with Guidelines on Banning of Business Dealings and the same is required to be signed by all prospective bidders and NHPC, committing persons/officials of both

the parties, not to exercise any corrupt/ fraudulent/collusive/coercive practices in tendering processes and also during the implementation of the Contract. Signing the IP including Banning of Business Dealings is the pre-requisite and basic qualifying requirement for any Agency to participate in the Tendering Process.

2. Initiation of Suspension/Banning

Department responsible for invitation of Bids/Engineer-in-charge after noticing the irregularities or misconduct on the part of Agency, can initiate action for Suspension / Banning of Business Dealings with the Agency. Vigilance Department of each Unit/ Corporate Vigilance may also be competent to initiate such action.

3. “Competent Authority” and “Appellate Authority” for initiation of Suspension/ Banning of Business Dealings

- For works awarded/under Tendering from Corporate Office (falling in the competency of CMD/Board of Directors), Competent Authority and Appellate Authority are CMD and Board of Directors respectively.
- For works awarded/under Tendering from Corporate Office/Projects/Power Stations/Regional Offices/Liaison Offices (falling in the competency of Director/ Executive Director), Competent Authority and Appellate Authority are

concerned Director/ED as the case may be and CMD/ concerned Director as the case may be respectively.

- For works awarded/under Tendering from Corporate Office/Projects/Power Stations/Regional Offices/Liaison Offices (falling in the competency of CGM and below), Competent Authority and Appellate Authority are Head of Unit not below the rank of GM and next higher Authority respectively.

4. Suspension of Business Dealings

If the conduct of any Agency dealing with NHPC is under investigation and the Competent Authority decides that it would not be in the interest of the Corporation to continue business dealings pending investigation, the business dealing with the Agency may be suspended. The order of suspension is valid for a maximum period of six month at a stretch. If the investigations are not completed within six months, the investigation committee shall put up the proposal to the Competent Authority for approval of extension of time maximum up to further three months with in which the committee shall conclude the proceedings. The order of suspension shall be effective throughout NHPC, throughout the Region/ CO, throughout the Project/PS and attached Liaison Offices/Units in case of work falling in the Competency of CMD/BOD, ED and HOP/ below respectively. During the period of suspension, no business dealing shall be held with the Agency. If the Agency concerned asks for detailed reasons of suspension, the Agency may be informed that its conduct is under investigation. It is not required to give any show-cause notice or personal hearing to the Agency before issuing the order of suspension. The intimation of suspension of business dealing to the Agency is given in the specified Format.

5. Ground on which Banning of Business Dealings can be initiated

- (i) If the security consideration, including

loyalty of the Agency to NHPC so warrants

- (ii) If the director /owner of the Agency, proprietor or partner of the firm, is convicted by a Court of Law for offences involving moral turpitude in relation to its business dealings with the Government or any other public sector enterprises, during the last five years
- (iii) If the Agency has resorted to Corrupt, Fraudulent, Collusive, Coercive practices including misrepresentation of facts and violation of any of the provisions of the IP in the Contract
- (iv) In case of intimidation/threatening/undue outside pressure on NHPC or its official by the Agency
- (v) If the Agency misuses the premises or facilities of NHPC, forcefully occupies or damages the NHPC's properties or tampers with documents/records etc.
- (vi) If the Agency does not fulfil the obligations as required under the Contract and Violates terms & conditions of the Contract which has serious affect for continuation of the Contract.
- (vii) If the work awarded to the Agency has been terminated by NHPC due to poor performance of the contract in the preceding 5 years.
- (viii) If the CVC, CBI or any other Central Government investigation Agency recommends such a course in respect of a case under investigation or improper conduct on agency's part in matters relating to the Company (NHPC) or even otherwise.
- (ix) On any other ground upon which business dealings with the Agency is not in the public interest
- (x) If business dealings with the Agency have been banned by the MOP, GOI or

any PSU/ any other authority under the MOP if intimated to NHPC or available on MOP Website, the business dealing with such agencies shall be banned with immediate effect for future business dealing except banning under Integrity Pact without any further investigation

The above examples are illustrative only and not exhaustive and the Competent Authority may also decide to ban business dealing for any good and sufficient reason.

6. Procedure for Banning of Business Dealings

An Investigating Committee shall be constituted by the authority competent to Ban the dealing comprising members from Engineering/Indenting department (convener), Finance, Law and Contract. The level of the committee members shall be CGM and above for works falling in the competency of CMD/ BODs, General Manager and above for the works falling in the competency of Director/ Executive Director and DGM/SM with at least one member of the level of General Manager for works falling in the competency of CGM and below.

The order of Banning of Business Dealings shall be effective throughout NHPC.

The functions of Investigating Committee are as under:-

- (i) To study the report of the department responsible for invitation of bids and decide if a prima-facie case for banning exists, if not, send back the case to the Competent Authority.
- (ii) To recommend for issue of show-cause notice to the Agency by the concerned department.
- (iii) To examine the reply to show-cause notice and call the Agency for personal hearing, if required
- (iv) To submit final recommendations to the Competent Authority for banning or

otherwise including the period for which the ban would be operative.

7. Show Cause Notice

On approval of the Show Cause Notice by the Competent Authority, a 'Show Cause Notice' (In the specified Format) shall be issued to the delinquent Agency by the Competent Authority or by a person authorized for the said purpose. The Agency shall be asked to submit the reply to the Show Cause Notice within 15 days of its issuance with an opportunity for Oral hearing to present its case in person, if the Agency so desires. The date of Oral Hearing shall necessarily be indicated in the Show Cause Notice.

The grounds on which action is proposed to be taken shall be disclosed to the Agency inviting representation. If the Agency requests for inspection of any relevant document in possession of NHPC, necessary facility for inspection of documents may be provided. After considering that representation of the Agency, orders may be passed.

Reply to the Show Cause Notice given by the Agency and their submissions in oral hearing, if any, will be processed by the Committee for obtaining final decision of the Competent Authority in the matter. In case of non-receipt of reply to Show Cause Notice from the Agency within stipulated time, further reminder shall be given with further period of 10 days and even after that if no reply is received action for processing ex-parte against the concerned Agency shall be initiated.

8. Speaking Order

The speaking order (reasoned order) in the specified Format for banning the business dealing with the Agency shall be issued by the Competent Authority or by a person authorized for the said purpose.

The decision regarding banning of business dealings taken after the issue of a Show Cause Notice and consideration of representation, if any, in reply thereto, shall be communicated to

the Agency concerned along with a reasoned order. The fact that the representation has been considered shall invariably be mentioned in the communication. Also the fact that if no reply was received to the Show Cause Notice shall invariably be indicated in the final communication to the Agency.

9. Period of banning

- (i) In case banning is processed for violation of provisions of IP, the Competent Authority shall decide on the period of banning on case to case basis depending on the gravity of the case/implications for NHPC/intention of the Agency as established from the circumstances of the case etc. The period of banning shall not be less than 6 months and shall not exceed 2 years.
- (ii) If the Contract is terminated due to poor performance of the Agency, the period of banning shall be for 5 years.
- (iii) In case the information/documents submitted by Agency during the tendering process is found to be false/forged then NHPC, without prejudice to any other rights or remedies it may possess, shall recover from Agency the cost incurred in carrying out physical assessment for establishing veracity of such information/documents. In case Agency refuses to reimburse such cost to NHPC then banning period of Agency shall be extended by another one year.

10. Effect of Banning

- (i) The existing ongoing contract(s) with the Agency may continue as far as possible unless the Competent Authority, having regard to the circumstances of the case, decides otherwise, keeping in view contractual and legal issues which may arise thereof. In case the existing Contracts are allowed to continue, the suspension/Banning of Business Dealing along with default of the Contractor shall be recorded in the experience certificate

issued for the work.

- (ii) The Agency, (after issue of the order) would not be allowed to participate in any future tender enquiry and if the Agency has already participated in tender process as stand-alone or constituent of JV and the price bids are not opened, his techno-commercial bid will be rejected and price bid will be returned unopened. When the price bids of the Agency have been opened prior to order of banning, bids of Agency shall not be rejected and tendering process shall be continued unless Competent Authority decides otherwise. However, in case the suspension /Banning is due to default under the provisions IP and the Agency happens to be L1 Bidder, the tendering process shall be annulled and fresh tenders shall be invited.
- (iii) During the Suspension/ Banning period, if it is found at any stage that Agency has participated in tender enquiry under a different name then such Agency would immediately be debarred from the tender/contract and its Bid Security/ Performance Security would be forfeited. Payment, if any, made shall also be recovered.
- (iv) The Suspended/ Banned Agency shall not be allowed to participate as Sub-Vendor/Sub-Contractor in the tenders after Suspension/Banning order.
- (v) There would be no bar on procuring the spares and awarding Contracts towards Annual Maintenance (AMC)/ O&M/ Repair works on Agencies pertaining to the packages for which they have been banned provided the Equipment has been supplied by such Agency.
- (vi) Banning of business dealing shall not be applicable to the Subsidiary Company of the Banned agency provided subsidiary company has not participated on the strength of the Banned agency. However,

in case of a default by a Sub-Contractor, the banning shall be applicable to the Sub-Contractor as well as the Lead Partner of the concerned JV or the Sole bidder as the case may be

11. Hosting at NHPC website

The name and details of the Agency (ies) banned along with period and reasons of banning shall be displayed on the NHPC website.

12. Appeal against the Decision of the Competent Authority

The Agency may file an appeal against the order of the Competent Authority banning of business dealing before Appellate Authority preferably within a period of 30 days from the date of receipt of the order of banning of business dealing. If convinced the Appellate

Authority may constitute another committee for further investigation. The investigation Committee constituted by the Appellate Authority shall study the report of the previous investigating committee and reply submitted by the Agency while filing its case for appeal and call the Agency for personal hearing, if requested by the Agency. Based on the recommendation of the committee Appellate Authority shall pass appropriate Speaking (Reasoned) order which shall be communicated to the Agency as well as the Competent Authority in the specified Format.

13. Circulation of the names of Agencies with whom Business Dealings have been banned

The name of the concerned banned agency shall also be shared with MOP and other PSU in the sector and all the units of NHPC.

तब नया सवेरा आयेगा



प्रदीप जौर्य

सहायक प्रबन्धक (सिविल),
पी०आई०डी० फील्ड यूनिट – पठानकोट

जब देश का जन – जन जाग उठे।
जब हर सीने में, एक आग उठे।
जब देश प्रेम का राग उठे।
तब नया सवेरा आयेगा।।
भारत समृद्ध बन जायेगा।।

जब जन – जन को अधिकार मिले।
बच्चे – बच्चे को संस्कार मिले।
प्रकाश से ना अंधकार मिले।
तब नया सवेरा आयेगा।।
भारत समृद्ध बन जायेगा।।

जब देश का जन – जन प्रहरी हो।
गाँव का हो, या शहरी हो।

जब नजर हमारी, गहरी हो।
तब नया सवेरा आयेगा।।
भारत समृद्ध बन जायेगा।।

जब खेत देश के लहलहायें।
किसान के घर समृद्धि आये।
बिचौलिये के गिद्ध ना मंडराएं।
तब नया सवेरा आयेगा।।
भारत समृद्ध बन जायेगा।।

जब हम सब मुस्तैद रहें।
नजरो में सब कुछ कैद रहे।
काला ना हो बस सफेद रहे।
तब नया सवेरा आयेगा।।
भारत समृद्ध बन जायेगा।।

CHETNA



Srikanth Viswanadhula
Deputy Manager (HR),
Dibang Multipurpose Project

Chetna means Consciousness

"Consciousness poses the most baffling problems in the science of the mind. There is nothing that we know more intimately than conscious experience, but there is nothing that is harder to explain." – David Chalmer

CONSCIOUSNESS: Has no Religion, no belief or ideology, no gender, no sexuality, no race, no age and no nationality. You ARE Consciousness

"I am not what happened to me, I am what I choose to become". – Carl Jung

No matter how many quotes how many articles we read or state, the essence of being a vigilant human being is nothing to do with what we are doing, but it defines what are we doing to ourselves being in a bubble called the world because everything we do defines the future of what we are truly and setting an example for future generations. Every person by himself/ herself is a legend by birth and is born with a reason. No one is born corrupted but why majority of individuals are being slaves

to this disease called corruption. Corruption is not just related to money but corruption is what we are doing to destroy the humanity and the human within us. Great power comes with greater responsibilities but in today's world Great power brings greater ways of corruption and higher levels of corruption. If we go down to the root level of corruption, it is self destruction by the individual who is engaged in corruption because nothing on this earth is real and permanent and by any means of corruption we are only destroying the world how it is supposed to run. Corruption in itself has a negative consciousness and a person who is involved in corruption never does anything wrong unconsciously, it means a person knows what he/ she is doing and what would be the after effects shall be, but the amount of courage he/ she puts in corruption is not less than amount of courage put in the scenario of a suicide. It requires great courage to do corrupted things which are not easy for a simple personality. The one who is determined to go/enter into the corrupted journey can't be easily changed unless and until the goal he/ she has set has been attained.

Nevertheless every action has equal and opposite reaction as Sir Newton's Law states, similarly every corrupted act has a reason behind it which should never be overlooked if

we are talking about corruption and its effects. At this point the word that comes to my mind is consequentialism (Consequentialism is a phenomenon where every action leads to similar actions and it fuses to be a chain reaction and goes forward). In simple words, I have mentioned that there shall be a reason for every corrupted act but what if we investigate it reversely, like what if we find and confirm a corrupted act and put an investigation as to why such act has been done, we may find that behind such act there is another such act which led to another corrupted act. It means that if we are vigilant and put our consciousness in avoiding a corrupt act, there is a sure possibility that another such act shall not be happening just by breaking the chain. Whatever we do only multiplies on greater proportions, if we do good and be vigilant, only such things shall form a chain in the future and if we indulge ourselves in negative acts such as corruption further such similar things shall be propagated.

Chief Justice of India, Sh H L Dattu, in the Vigilance Week of 2015 quoted that-

“The story of any great nation is not merely the summation of its triumphs but also of its challenges and struggles. Today, as India stands on the brink of true greatness, the deep-rooted malaise of corruption is perhaps the biggest challenge that we face. The goals of growth and development that we have set for ourselves can only be achieved through fair and efficacious governance which, in turn, requires robust and independent political and administrative institutions. Corruption not only impedes efficient governance, but is also a threat to our democratic ideals and the moral fabric of our polity. It is because of this reason that punishing individual cases is no longer sufficient. Prevention

is the only effective remedy against the malaise of corruption. What is required is constant and tireless vigilance, not only over the actions of those around us, but over ourselves. Let each and every citizen of this Nation take an oath to police himself, in thought, word and action, that we may, together, step forward into a new tomorrow filled with hope, where the ideals of trust and integrity stand firm as the pillars of our collective public lives.”

There are many doubts of how to indulge vigilance in our daily lives, for that there is a single line explanation *“The world will not be destroyed by those who do evil, but by those who watch them without doing anything”* – Albert Einstein. Following these statements there will be many questions as to how to stop such activities in our vicinity at least in our work environment is to create a strong and independent vigilance cell at workplace which shall either report such activities such as corruption and non transparent negative activities which shall lead to possible loss to the organization. This cell shall work independently under the direct supervision of the Vigilance Department of the organization and this shall not stop at just reporting but having proved of such activities shall lead to possible Disciplinary actions within a short time span and the cell shall be open to all the employees who are willing to report such corrupted activities with proof.

From a HR perspective, to encourage employees to report such corrupt practices, any report with proper evidence shall be rewarded which Vigilance Cell shall be sole authority.

In the entire article, I have only stressed about single entity “Corruption”, but that single entity has no bounds if not controlled where in the present situation its better late than never.

Economic Duress : Scheme and Scope in Law of Contracts



Meenakshi Mittal

Deputy Manager (LAW),
Arbitration Division, Corporate Office

Free consent is the bedrock for formation of the contract. A perusal of Section 14 of the Indian Contract Act 1872 enumerates factors that vitiate free consent in contracts. When the consent of parties is subdued by some overbearing factor which deprives contracting parties of their freedom to contract, their consent can no longer be regarded as 'free'. One such factor which has gradually evolved over time, gaining increased recognition, is economic duress. Although the Indian Contract Act, 1872 does not expressly recognize economic duress as a vitiating factor, this concept has been woven into the fabric of Chapter II of the Act through a jurisdictional interpretation of the provisions contained therein. Economic duress has been many times taken as a tool by contractors or vendors while making claims for compensation. Department/Organization needs to be aware about concept of economic duress while fighting the arbitration cases/ court cases to avoid pitfalls at later stage. This article has made attempt to clarify concept of economic duress along with a preliminary discussion on leading and prominent cases which explains the nitty gritty of the concept.

Doctrine of economic duress has been developed from the traditional concept of duress which finds its origin in the Common Law wherein it was developed primarily through judgments. Duress' refers to undue pressure exerted on the will of a contracting party. It may be regarded as the umbrella term

which may manifest in three forms; duress to person, duress to goods and economic duress. **[GARETH S. VITIATION OF CONTRACTS: INTERNATIONAL CONTRACTUAL PRINCIPLES AND ENGLISH LAW, p.212, Cambridge University Press (2013).**

Duress to goods is covered under section 15 of the Indian Contract Act which deals with coercion. *"Coercion is the committing, or threatening to commit, any act forbidden by the Indian Penal Code (45 of 1860) or the unlawful detaining, or threatening to detain, any property, to the prejudice of any person whatever, with the intention of causing any person to enter into an agreement"*.

Economic duress involves a manipulation of the will of a person to do or not to do something adverse to his commercial interests, which vitiates the consent of a party. It is characterized as 'an unlawful coercion to perform an act by threatening financial injury at a time when one cannot exercise free will.'

Illegitimate pressure must be differentiated from the harsh and turbulent stresses of usual commercial bargaining which induces a sense of moral indignation and appears to be outside the norms of ordinary commercial practice.

In a plethora of judgments, Hon'ble Courts have taken into account following considerations to determine economic duress like-

1. Whether there has been real or perceived threat.

2. Whether there has been an unlawful coercion on the part of the accused.
3. Whether there has been an actual or attempted breach of contract.
4. Whether the person who allegedly applied the coercion acted in good faith or in bad faith.
5. Whether the compulsion was of such a degree that the party was deprived of 'his freedom of exercising his will'.
6. Whether the claimant has an alternative course of action or remedy? If so, did the claimant pursue or attempt to pursue the same?
7. Whether common man of prudence would have behaved in a similar manner in a similar situation.
8. Whether the coerced person protested before or soon after the impugned contract and if he has the benefit of independent legal advice.

In The Oriental Insurance Co. Ltd. & Anr. v. Dicitex Furnishing Ltd., SLP(C) No. 34186 of 2015;(2020) 4 SCC 621; judgment dated 13 November 2019, issue was whether a party can invoke an arbitration clause after it has accepted an amount in full and final settlement of its claim. While arriving at its decision, Hon'ble Supreme Court clarified and relied on the judgment in **National Insurance Co. Ltd v. Boghara Polyfab Pvt Ltd., (2009) 1 SCC 267** to examine whether a dispute is arbitrable in context of no objection certificates or unconditional discharge vouchers being executed. Analyzing the facts and illustrations laid down therein, Supreme Court clarifies that a Court can refer a matter to arbitration if a plea of coercion and economic duress is raised, even if the claimant has accepted an amount in full and final settlement. Some Illustrations mentioned in the judgment are:

“52 (i) A claim is referred to a conciliation or a prelitigation Lok Adalat. The parties negotiate and arrive at a settlement. The terms of settlement are drawn up and signed by both the parties and attested by the Conciliator or the members of the LokAdalat. After settlement by way of accord and satisfaction, there can be no reference to arbitration.

(ii) A claimant makes several claims. The admitted or undisputed claims are paid. Thereafter negotiations are held for settlement of the disputed claims resulting in an agreement in writing settling all the pending claims and disputes. On such settlement, the amount agreed is paid and the contractor also issues a discharge voucher/no claim certificate/full and final receipt. After the contract is discharged by such accord and satisfaction, neither the contract nor any dispute survives for consideration. There cannot be any reference of any dispute to arbitration thereafter.

(iii) A contractor executes the work and claims payment of say Rupees Ten lakhs as due in terms of the contract. The employer admits the claim only for Rupees six lakhs and informs the contractor either in writing or orally that unless the contractor gives a discharge voucher in the prescribed format acknowledging receipt of Rupees Six lakhs in full and final satisfaction of the contract, payment of the admitted amount will not be released. The contractor who is hard pressed for funds and keen to get the admitted amount released, signs on the dotted line either in a printed form or otherwise, stating that the amount is received in full and final settlement. In such a case, the discharge is under economic duress on account of coercion employed by the employer. Obviously, the discharge voucher cannot be considered to be voluntary or as having

resulted in discharge of the contract by accord and satisfaction. It will not be a bar to arbitration.

(iv) An insured makes a claim for loss suffered. The claim is neither admitted nor rejected. But the insuree dis-informed during discussions that unless the claimant gives a full and final voucher for a specified amount (far lesser than the amount claimed by the insured), the entire claim will be rejected. Being in financial difficulties, the claimant agrees to the demand and issues an undated discharge voucher in full and final settlement. Only a few days thereafter, the admitted amount mentioned in the voucher is paid. The accord and satisfaction in such a case is not voluntary but under duress, compulsion and coercion. The coercion is subtle, but very much real. The 'accord' is not by free consent. The arbitration agreement can thus be invoked to refer the disputes to arbitration.

(v) A claimant makes a claim for a huge sum, by way of damages. The respondent disputes the claim. The claimant who is keen to have a settlement and avoid litigation, voluntarily reduces the claim and requests for settlement. The respondent agrees and settles the claim and obtains a full and final discharge voucher. Here even if the claimant might have agreed for settlement due to financial compulsions and commercial pressure or economic duress, the decision was his free choice. There was no threat, coercion or compulsion by the respondent. Therefore, the accord and satisfaction is binding and valid and there cannot be any subsequent claim or reference to arbitration."

In National Insurance Co. Ltd. v M/S Boghara Polyfab Pvt. Ltd. [CIVIL APPEAL NO. 5733 OF 2008; (2009) 1 SCC 267] it was observed that where the discharge voucher is given under threat or coercion, resulting in economic duress and compulsion, such discharge voucher is neither valid nor binding on the claimant, and the dispute relating to the claim survives for consideration

and is arbitrable.

In National Insurance Co. Ltd. v Opera Clothing (Bombay High Court on 13th March, 2015) --This case which highlighted several important issues talked about a future scenario where not the entire transaction but only a particular term/stipulation is vitiated by economic duress. It was held that whenever economic duress ends up in a varied contract then the coerced can refuse to abide by the new term which introduced the variation. It was also held that in specific situations, the coerced party can seek an injunction to restrain the enforcement of the impugned term (imposed on him by economic duress) without setting aside the whole transaction and the court can, after proper analysis, grant such an injunction. This judgment emphasized on the need to clearly distinguish between permissible commercial pressure and economic duress because the dividing line between the two is very thin.

In the case of Hitesh Anil kumar Jajuv The Vyasya Bank Ltd Bombay High Court on 12th March, 2015- Illegitimate, legitimate, unlawful pressures were discussed. The pressure which the contracting party is not expected to submit to is an illegitimate pressure as against legitimate pressures which the law does not take into account. Unlawful pressure occurs when the coercive party threatens to do something that is a breach of common law or a statutory duty. It may be a crime, a tort or a breach of contract. A contract executed under such pressure may be set aside by the other party. However the position is different where what is threatened is not an unlawful act. It was held that it is not duress to threaten to do something which one has a legal right to do. The threat to prosecute or let a litigation continue legally would not constitute illegitimate pressure. Hence the settlement entered into between the parties could not be termed as under coercion or economic duress.

In Democratic Builders v Union of India Delhi High Court on 29th February, 1996- A

plea for duress must be specifically pleaded and clear, convincing evidences should be given to prove duress. Mere assertion of a particular position would not be considered proof.

The effect of economic duress on a contract renders a contract voidable and not void due to the fact that duress results in the impairment of consent and not the absence of it.

One of the most common problems in the economic duress scenario is that the coercive party threatens to or actually breaches the contract and usually the coerced party needs the performance of the contract, in order to maintain his reputation or protect against losses. **[Dai-ichi Karkariavs ONGC case AIR 1992 Bom 309 Bombay HC]**. The coerced

person is thus cornered in such a way that no other reasonable alternative is available to him and he is forced to either accept the contract or suffer serious losses.

The concept of economic duress plays a vital role in the negotiation and conclusion of commercial contracts. The doctrine is extremely subjective due to determination of “fairness” of the demand and gravity of threat. No presumption should be applied merely on the basis of status of the contracting party. Each stage of the contract including tender process, award of contract as well as execution of contract should be dealt holistically and carefully by dealing officers in order to minimize the scope of economic duress.

सतर्क बनो - समृद्ध बनो



प्रदीप मौर्य

सहायक प्रबन्धक (सिविल),
पी०आई०डी० फील्ड यूनिट – पठानकोट

भारत की धरती सोना है।
पर भूखा हर एक कोना है।
बेईमानी का ही रोना है।
बस और नहीं कुछ खोना है।
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
हर लूट पर टोका – टाकी हो।
हर खेल की ताका – झाकी हो।
हर एक के मन में खाकी हो।
कोई ना बस अब बाकी हो।
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
हर सीने में एक आग रहे।
बदलाव का बस एक राग रहे।
गुलजार हमारा बाग रहे।

ना कोई अब दुर्भाग्य रहे।
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
हर भ्रष्टाचार पर वार करो।
इस सीमा के उस पार करो।
उन पर अपना अधिकार करो।
भारत माता से प्यार करो।
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
संतोष ही सबसे बड़ा धन है।
सुख चैन का ये एक आँगन है।
ईमानदारी से बढ़कर क्या पावन है।
देश के लिए मन भावन है।
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥
सतर्क बनो – समृद्ध बनो॥

सतर्कता-संयम पल पल की प्राथमिकता



भावना नरयाल
प्रमुख सहायक ग्रेड-1,
चमेरा पावर स्टेशन III

सीढ़ियाँ हम चढ़ते-उतरते रहते हैं हर रोज
यदि कोई पूछते संख्या उनकी, करने लगते हैं सोच !
इसी प्रकार रोज जाते शौचालय, हल्का करने बोझ,
पहले मूत्र निकलता है या मल,
इसका फिर भी नहीं बोध!
ऐसे प्रश्न छोटे- छोटे से कहलाते हैं तर्क-कुतर्क,
साबित ये कर देते हैं, कौन कितना रहता है सतर्क !
मानो यही प्रश्न आ जाए, परीक्षा या साक्षात्कार में,
शून्य अंक ही मिल पायेंगे, यदि हम पड़े विचार में!
छोटी बड़ी दोनों ही बातें, रखती अपना-अपना महत्व,
समय आने पर दोनों ही दिखाती अपना सम्पूर्ण घनत्व !
हाथी महाकाय होकर भी, चींटी को न मार सकता,
चिपट जायें यदि चिटियां उसके,

उनको न उतार सकता!
जीवन में सतर्कता संयम, रखना होगा सदा पल-पल
नहीं तो कभी भी मच सकती है हाहाकार और हलचल!
सतर्कता जागरूकता अभियान चलाने की
हम सबने कसमें खाई है
भ्रष्टाचार निवारण में हम सबकी बारी आई है!
दुनिया में रोशन करना है यदि भारत का नाम,
भ्रष्टाचार मिटाने का फिर करना होगा काम!
सतर्कता जीवन का आधार है,
भारत को बना सकता है जो सम्पूर्ण ईमानदार!
सतर्क भारत, स्मृद्ध भारत,
यह स्वप्न सच कर दिखाना है
भारत को सर्वोपरि बनाकर विश्व गुरु बनाना है!



**भ्रष्टाचार को
जड़ से मिटाना है,
हमें ये अभियान
चलाना है।**

सतर्कता



कमलेश कुमार

परियोजना सतर्कता अधिकारी,
सलाल पावर स्टेशन

जीवन एक अभिलाषा है, बनना नहीं तमाशा है।
सतर्क हमेशा रहने को शिक्षा हमें सिखाता है।
जीवन के अनेकों राहों में, राही बदलते जाना है।
इस राह में या उस राह में, चौराहे बहुत हो जाना है।
घनघोर जंगल भी मिलते हैं, अंधकार की साया है,
हो पहाड या हो दरिया, पार उसे कर जाना है।
बचपन में सिखा अंगुली पकडना, पाव डगमगाना है।
कोशिश किया प्रत्येक बार, उठ खड़ा हुआ अब जाना है।
जीवन के इस राहों में राह बहुत अनजानी है।
माता-पिता के साये में पल कर बड़े हो जाना है।

साथ मिले तो अच्छा है या किस्मत की पाशा है।
घड़ी बदलती जानी है, पड़ी नहीं पछतानी है।
सतर्क रहने की अब हमने मिलकर ठानी है।
घर से निकले बड़े हुये या सीमा पर पड़े हुये।
दुश्मन के हर चाल को चलनी करते अड़े हुये।
सतर्क रहने की है जिम्मेदारी, क्योंकि अब हम बड़े हुये।
सतर्क रहे, अगर हम तत्पर भारत माँ के लाल हुए।
भारत को समृद्ध बनाये, चाहें जो हो हाल।
क्योंकि सतर्कता ही है समृद्धि की पहचान।

स्वतंत्रता दिवस



मेथान्ला बाथरी

पुत्र श्री नवनीत दास बाथरी,
सहायक प्रबन्धक (आई०टी०),
सुबानसिरी लोअर परियोजना

आजाद हुआ था हिन्द ये मेरा, खुशबू थी आजादी की।
हर तरफ बिक रहीं थी टोपियाँ,
जो बनी थी खादी की।।

पहली बार लहराया था तिरंगा, अंग्रेजों के आँगन में।
आया था खुशी का मोती, इन रूखी हुई सी आँखों में।।

खुशबू थी मिट्टी में अपनी, लगे थे जोशीले नारे।
आखिरकार अहिंसा से ही, अंग्रेज थे हम से हारे।।
भगतसिंह, मंगलपाण्डेय की मेहनत आखिर रंग लाई थी।

अस्त हुआ था गुलामी का सूरज,
और आजादी की वर्षा आई थी।।

आँखों में थे बलिदानों के अश्रु,
मुख पे थी आजादी की शान।
भारत को महान बनाना है, लिया था ये ठान।।

राष्ट्रगान गाया था दिल से, मन में था जयहिंद का गर्व।
इसी तरह मनाया हमने, पहला स्वतंत्रता दिवस का पर्व।।
जय हिन्द, जय भारत, वन्दे मातरम।।

CORRUPTION



A SHYAM PRASAD RAO

Senior Manager (HR),
TLD III Power Station

Ethics are codes of conduct that decide what is wrong and what is right in a particular circumstance. These are also known as morals and are a result of evolution of mankind. No doubt corruption is not a new concept in India and it's existence prevails from our ancient times. The definition of Corruption has been defined by many intellectuals. Corruption is dishonest behavior by those in positions of power, such as managers or government officials. Corruption can include giving or accepting bribes or inappropriate gifts, double-dealing, under-the-table transactions, manipulating elections, diverting funds, laundering money, and also implies perversion of morality, integrity, character or duty out of mercenary motives. The causes of corruption in India include excessive regulations, complicated taxes and licensing systems, numerous government departments each with opaque bureaucracy and discretionary powers, monopoly by government controlled institutions on certain goods and services delivery and the lack of transparent laws and processes. To eradicate corruption from society, we need to prepare a stringent code of conduct for parliamentarians, legislatures, bureaucrats and emphasis is to be given how it will be enforced in judiciously. Special courts should be set-up to take up such issues and speedy trial is to be endorsed. Law and order machinery should be functioned without political/bureaucratic interference.

Now-a –days all become materialistic oriented,

there is no importance exists on ethics and morals in any fields/activities. During the Covid -19 Pandemic we have witnessed at how corruption undermines states' capacity to respond to emergencies by diverting funds from essential services. All Stakeholders should come forward to spread awareness against corruption in society.

Today in all organizations Playing Safe game are the most common phenomena.

Some of areas everybody can emphasize in order to reduce Corruption in our country

1. By Providing Education since beginning: with the help of education, we can spread awareness to reduce corruption.
2. Change in Government Policies in Election Processes: No politician should be elected the persons who have criminal records. If we see the record of politicians
3. Transparency in all sectors should be seen to the Public by using electronic media. Professional Accountability is to be fixed on every employees. We should be honest to ourselves. Until and unless we will not be honest, we cannot control corruption. If everybody is honest automatically corruption will disappear in the offices at least.
4. Speedy disposal of corruption cases. Because of weak actions and proceedings towards corrupt people. People do not have any fear of this acts and the court. Any act should be implemented and executed in such a way that culprit will not escape from it.

स्वतंत्र भारत @75, राष्ट्र आत्मनिर्भरता में छात्रों की भूमिका



भारत भूषण

सहायक प्रबन्धक (आईटी),
सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय

**हर युवा और बच्चे को सिखाना है,
सतर्क रहकर भारत को आत्मनिर्भर बनाना है।**

किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए वहां के नागरिकों का सतर्क एवं शिक्षित होना अति आवश्यक है। जब हम अपने बच्चों को शिक्षित करते हैं तो हम राष्ट्र के निर्माण में अपनी भागीदारी निभाते हैं क्योंकि यही बच्चे आगे चलकर देश को एक सही दिशा और दशा दे सकते हैं। अगर हम अपने देश के बच्चों को अशिक्षित रखेंगे तो, हमारा देश कभी भी तरक्की नहीं कर सकता है। हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी शिक्षा का उपयोग सतर्कता के साथ अपने समाज, अपने देश की तरक्की के सर्वांगीण विकास के लिए करें।

हर देश की असली पूंजी छात्र और युवा होते हैं। जो राष्ट्र को अन्य पूँजियों से भर देने का साहस रखते हैं और विश्व पटल पर अपने देश को आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, धार्मिक, आध्यात्मिक रूप से एक शानदार पहचान दिलाने में मददगार होते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के बचपन का अधिकतम समय और युवावस्था के प्रारंभिक वर्ष एक विद्यार्थी के रूप में ही व्यतीत होते हैं। भारत में शिक्षा व छात्र जीवन को प्राचीन काल से ही महत्व दिया गया है। प्राचीन काल में माता पिता द्वारा अपने बच्चों को गुरुकुल में शिक्षा लेने हेतु भेजा जाता था। भारत में विद्यार्थी वर्ग की आबादी कुल राष्ट्रीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा है। जो भविष्य के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। आजादी के 75 वर्षों बाद भी भारत शिक्षा के क्षेत्र में काफी पीछे है। भारत में 14 साल तक के बच्चों के लिए "शिक्षा का अधिकार कानून" बनाया गया है। फिर भी लाखों की संख्या में ऐसे बच्चे हैं जो अपने घर के आर्थिक हालातों के कारण स्कूल का रुख

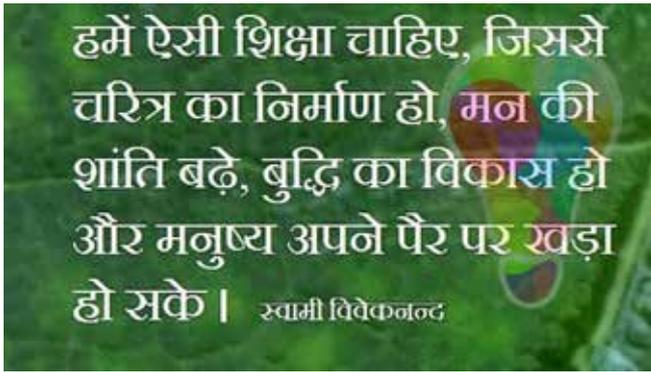
नहीं कर पाते हैं। भारत में ऐसे भी कई गांव या कस्बे हैं जहां पर स्कूल, कॉलेजों की अच्छी व्यवस्था नहीं है। और कुछ गांवों या कस्बों में तो प्राथमिक स्कूल तक नहीं है। ऐसे में बच्चे कहां से विद्या ग्रहण करेंगे। इसीलिए सबसे पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हर बच्चा स्कूल जाकर विद्या ग्रहण करें। क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति ही राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय और जिम्मेदार भूमिका को पूर्ण रूप से निभा सकता है।

छात्रों के अंदर असीमित प्रतिभा और ऊर्जा होती है। इसीलिए वो समाज में व्याप्त अनेक बुराइयां जैसे भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, अनुशासनहीनता, लिंग भेद, अन्याय, दमन-शोषण, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, उग्रवाद, आतंकवाद आदि के खिलाफ एक मजबूत अभियान छेड़ कर, उसे समूल जड़ से नष्ट कर सकते हैं।

**शिक्षा सबसे शक्तिशाली
हथियार है जिसका उपयोग
आप दुनिया को बदलने के
लिए कर सकते हैं।**

-- नेल्सन मंडेला

सुझाव : किसी भी विषय को मज़ेदार बनाने के लिए उसके प्रायोगिक उपयोग को समझें



छात्र, सरकार द्वारा चलाए जाने वाले राष्ट्रीय स्तर के अभियानों को बड़ी तेजी व सफलतापूर्वक चला सकते हैं। लोगों के अंदर इन अभियानों के प्रति जागरूकता पैदा कर सकते हैं। कोई भी अभियान छात्रों के माध्यम से सफलता पूर्वक चलाया जा सकता है।

अगर छात्रों को पहले से प्रशिक्षण दिया जाए तो, वह किसी भी राष्ट्रीय आपदा के वक्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जरूरत है तो उनकी क्षमताओं का सही उपयोग करना, उनका सही मार्गदर्शन करना।

छात्रगण भूकंप, बाढ़, सूखा एवं भीषण दुर्घटना जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय भी राष्ट्र को अपनी बहुमूल्य सेवाएँ दे सकते हैं। राष्ट्र के लिए जरूरत की घड़ी में N.C.C तथा स्काउट दल जैसी छात्र संस्थाओं ने उल्लेखनीय और प्रशंसनीय सेवाएँ दी हैं।

वैसे तो विद्यार्थी वर्ग हर देश के राष्ट्रीय विकास में मजबूत आधार स्तंभ की भूमिका निभाते हैं लेकिन यही समय

होता है जब विद्यार्थी को सही मार्गदर्शन ना मिले तो, उनमें भटकाव की स्थिति भी आ जाती है। और वो अपनी क्षमताओं और ऊर्जा का गलत कामों में इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं।

विद्यार्थी जीवन वह समय होता है जब कोई बच्चा व युवा गजब के आत्मविश्वास, उत्साह, ऊर्जा और जोश से भरा रहता है। और उनके दिमाग में प्रतिदिन नए-नए विचार जन्म लेते हैं, नई-नई योजनाएं आकार लेने लगती हैं। असंभव को संभव कर दिखाने का जज्बा इनके अंदर समाया रहता है।

यही वह समय होता है जब विद्यार्थियों को एक सही मार्गदर्शन, एक सच्चे अर्थों में प्रेरक या मार्गदर्शक की जरूरत होती है। जो उनके अंदर की अपार क्षमताओं, संभावनाओं और असीमित ऊर्जा को एक सही दिशा दे सके। अगर उस समय उनका सही तरह से मार्गदर्शन किया जाय तो, देश को प्रगति के मार्ग पर चलने और विश्व में एक अलग पहचान बनाने से कोई नहीं रोक सकता।

विद्यार्थी जीवन में ही व्यक्ति के अंदर अच्छे संस्कारों व आदर्श मूल्यों को स्थापित करना आवश्यक है। क्योंकि अपने देश के सम्मान व गौरव के लिए अपनी जान कुर्बान करने का जज्बा इनके दिलों में पलता है और देश का सर्वांगीण राष्ट्रीय विकास कर भारत को एक आत्मनिर्भर भारत बनाने का सपना इन्हीं के दिमाग से होकर गुजरता है।

“

If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher.

- APJ Abdul Kalam



बेटियाँ

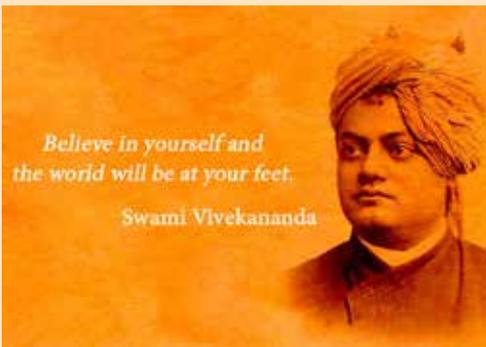


दिवाकर प्रसाद अवधिया

परियोजना सतर्कता अधिकारी,
दुलहस्ती पावर स्टेशन

रुग्ण तन, मन मार कर वह जी रहा था आसरे में
बेटियों की शादियाँ, फिर करूंगा उपचार अपना
धन लुटाता, लुट गया वह लोभियों के हाथ में
ख्वाब पूरे न हुए दो बेटियों का बाप था।
विदा कर बेटी को घर से मां विलख मूर्छित हुई
जिगर का टुकड़ा, सभी से दूर होता जा रहा था,
पिता के हिय में उभरती, विरह की संवेदना।
भाइयों की सिसकियाँ, घर व्यथित रोता जा रहा था।
व्याह के पश्चात बिटिया आ गई ससुराल से
खिल उठे माता-पिता, त्यौहार सब गुलजार हैं
छा गई रौनक खुशी की, घर में बहना आ गई
भाइयों की राखियाँ, खुशहाल सब परिवार है।
गुडिया वो बचपन की पुरानी, बया करती एक कहानी
उस दौर के खेले खिलौने, याद बचपन की दिलाने
पेड़ पीपल का पुराना, बया करता एक जमाना
वो गांव का कालू मदारी, गाल पिचके पेट भारी
आ गया भालू नचाने, बालकों का मन लुभाने
साथ थी सखिया सलोनी, धो रही बर्तन बरौनी

पास ही काकी खड़ी है, हाँथ में धारे छड़ी है
डालते हैं बड़ी, पापड़, छनियो में और छत पर
पड़ी है आंगन में खटिया, टंगी है खूटी में लुटिया
बिटिया देख रंभानी गैया, आ गई है घर में बैया
पड़ोस की बीमार बुढ़िया, जोहती है राह बुढ़िया
कब आएगी बूटी हमारी, लाड़ली, प्यारी, दुलारी
दूध वाला और माली, आ गए दर पे सवाली
झलक बिटिया की दिखाओ, हाल उसका तो बताओ
पास में ही बनी मढ़िया, भक्ति का संगीत बढ़िया
मन में ए सब झूमता है, याद में सब घूमता है
भाग्य में क्या-क्या लिखा है, काल में क्या-क्या छुपा है
बेटियों का भाग्य है, भाग्य या दुर्भाग्य है,
ससुराल अब घर बन गया है, सौभाग्य अब वर बन गया है
बेटियाँ रिश्ते संवारे, साथ में दो घर उबारे
प्राण पतियों के बचाए, यमराज को वापस भगाए
शक्ति का संचार बेटी, धर्म का आधार बेटी
हम सभी यह मनन करते, तुझे शत-शत नमन करते।



**जन जन का ये नारा है,
अब से भारत को आत्मनिर्भर बनाना है।
पूरे विश्व में भारत का हो मान,
आत्मनिर्भर होना ही होगी हमारी पहचान।
आत्मनिर्भर भारत होगा हर युवा की उन्नति का कल।**

व्यंग—सतर्कता के मायने



उमेश कुमार

परियोजना सतर्कता अधिकारी,
क्षेत्रीय कार्यालय, बनीखेत

Vigilance implies watchfulness by all employees in day-to-day implementation of systems & procedures as well as judicious, transparent & reasoned decisions.

Vigilance मायने जागरूकता। मैं छोटे से उदाहरण के साथ अपनी बात रखता हूँ – हम सुबह उठते हैं – Alarm लगाकर रखा होता है, बाशरूम गए, सुबह की चाय ली, उसके बाद प्रातः की सैर, व्यायाम, नाश्ता—मतलब अभी तक आप पूरे सतर्क हैं, पाँच मिनट की भी deviation नहीं क्योंकि दफ्तर पहुंचना है, नाश्ते के बाद तैयार हुए, सब कुछ check किया – घड़ी, मोबाइल, पर्स, कंधी, रुमाल, टिफिन और आजकल मास्क भी, नहीं तो चालान हो जाएगा। हर चीज बारीकी से चेक की, गाड़ी में बैठे—पैट्रोल की सूई भी देखी, कम तो नहीं—दफ्तर पहुंचे— पूरे 9.30 से पहले, biometric Attendance लगाई— तसल्ली हो गई— रु० 3000—4000 की दिहाड़ी पक्कीमतलब सारे काम हाजरी से पहले पूरी सतर्कता बरतते हुए।

उसके बाद का दृश्य:— आप दफ्तर की कुर्सी पर बैठे, कम्प्यूटर ऑन और कुछ भी याद नहीं कि बॉस ने पिछले कल क्या काम दिये थे। बॉस ने याद दिलाया, परिपत्र टाइप करना शुरू, ध्यान कहीं और – सतर्कता खत्म – अधमने दिल से परिपत्र बना कर बॉस के हवाले – और बॉस बेचारा बैठकर गलतियाँ सुधार रहा है।

आइए निजी जिंदगी के कुछ और मजेदार उदाहरण साझा करते हैं :-

- हम जब सड़क पर पैदल चलते हैं तो कितने सतर्क रहते हैं कि कहीं किसी गाड़ी के नीचे न आ जायें।
- एटीएम से पैसे निकालने के बाद कितनी सतर्कता से उन्हें गिनते हैं।
- मॉल में शॉपिंग करने के बाद कितनी सतर्कता से सामान को बिल के साथ मिलान करते हैं कि कहीं कुछ छूट तो नहीं गया।
- बॉस से बात करते हुए हम अपने शब्दों के प्रति कितने सतर्क और सजग रहते हैं कि कहीं कोई गलत शब्द हमारे मुँह से न निकल जाए।
- मंदिर में जाने पर कितनी सतर्कता से अपनी चप्पलें छिपा कर जाते हैं कि कहीं कोई चुरा न ले। माथा टेकते हुए भी हमारा ध्यान अपनी चप्पलों पर ही रहता है।
- देर रात पार्टी करने के बाद जब कभी घर आते हैं तो कितने सतर्क हो कर हम बीवी से झूठ बोलते हैं कि दोस्त को अस्पताल छोड़ कर आ रहे हैं।

देखिये मनोस्थिति का अंतर – जब तक हमें अपने फायदे—नुकसान का अंदेशा है, हम पूरी सतर्कता बरतते हैं और जैसे ही सरकारी कार्य कि बारी आई – सतर्कता गायब।

हमें जब ERP में काम करने को कहा जाता है, कई बहाने बना कर हम अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं कि हमें तो किसी ने ट्रेनिंग नहीं दी, हम ने कभी ERP में कार्य किया ही नहीं। लेकिन अपनी छुट्टी, अपने क्लेम – मेडिकल हो या वाहन प्रतिपूर्ति भत्ता या अपनी टेलीफोन

अदायगी का बिल, हम बिना किसी ट्रेनिंग के ESS में आराम से भरते हैं, क्योंकि इस में हमारा व्यक्तिगत हित शामिल है। यह अपने और सरकारी कार्य में हमारी रूचि के अंतर का जीता-जागता उदाहरण है।

मैंने कुछ लोगों को कहते सुना है कि काम करना तो गुनाह है क्योंकि काम करो – तो खतरा मोल लो, क्योंकि उस में गलती का अंदेशा रहता है, उसके बाद ऑडिट, नहीं तो सतर्कता विभाग वाले पकड़ लेते हैं। मैं यह कहना चाहता हूँ कि काम न करना तो सब से बड़ा अपराध और भ्रष्टाचार है। Risk तो इंसान को हर कदम पर लेने

पड़ते हैं। यह तो वही बात हुई न कि एक जवान फौज ने तैयार किया और लड़ाई के समय वह कहे कि मैं बार्डर पर नहीं जाऊंगा, क्योंकि वहाँ जिंदगी का खतरा है या मान लो फ्लाइट तैयार है, boarding pass लेकर यात्री प्लेन में बैठ गए हैं और पायलट कहे कि मैं जहाज नहीं उड़ाऊंगा, क्योंकि ऊपर आसमान पर बड़ा खतरा है, हो सकता है इंजन फेल हो जाए। इस तरह की मनोस्थिति से हमें बाहर निकलना होगा और सतर्क होकर, कानून कायदे में रहकर, अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर न जाकर और मौजूद दिशा निर्देशों का अनुसरण करते हुए हमें एनएचपीसी के लिए मिल कर कार्य करना होगा।

प्रेरणादायक कविता



प्रनीता चौहान

उप प्रबन्धक (सचिव)
क्षेत्रीय कार्यालय बनीखेत

बैठ जाओ सपनों की नाव में,
मौके की ना तलाश करो।
सपने बुनना सीख लो।

खुद ही थाम लो हाथों में पतवार,
माझी का न इंतजार करो।
सपने बुनना सीख लो।

पलट सकती है नाव की तकदीर,
गोते खाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।

अब नदी के साथ बहना सीख लो,
डूबना नहीं, तैरना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।

भंवर में फंसी सपनों की नाव,
अब पतवार चलाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।

खुद ही राह बनाना सीख लो,
अपने दम पर कुछ करना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।

तेज नहीं तो धीरे चलना सीख लो,
भय के भ्रम से लड़ना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।

शिक्षा



सुरेश कुमार
वरिष्ठ टी जी टी,
क्षेत्रीय कार्यालय बनीखेत

अनेकों शिक्षाविदों ने शिक्षा के बारे में परिभाषाएँ दी हैं। इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि सच्ची शिक्षा वह है, जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। वह शब्दों को रटना मात्र नहीं है। वह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास है, जिससे वह स्वयं ही स्वतंत्रता से विचार कर निर्णय कर सकें। शिक्षा का अर्थ यह भी नहीं कि हमारे मन में ऐसी बातें भर दी जाएं कि अनिर्णय की स्थिति बन जाए और हमारा मस्तिष्क उसे ग्रहण ही न कर सके।

शिक्षा वह हो जिससे हम अपना जीवन—निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें और चरित्रवान बनकर अपने विचारों को पुष्ट कर सकें। यदि हम पाँच—दस वाक्यों को पचाकर उसके अनुसार अपना जीवन चला सके तो हमारी शिक्षा उनसे श्रेष्ठ है जिन्होंने बड़ी—बड़ी उपाधियाँ ली हैं और चरित्रहीन हैं। शिक्षा केवल पुस्तकों का पठन या परीक्षा पास करना नहीं है, यह ऐसा ज्ञानार्जन है जिससे संयम प्राप्त कर इच्छा—शक्ति के प्रवाह को वश में लाकर फल प्राप्त हो जाए वह शिक्षा है।

क्या वह शिक्षा है जो मनुष्य को धीरे—धीरे यंत्र बना रही है जो स्वयंचालित यंत्र के समान कार्य करता है, इससे शिक्षा निषेधात्मक होती जा रही है, छात्र कुछ नहीं सीख

पाते बल्कि जो कुछ अपना है उसका भी नाश हो जाता है। इस कारण ही उनमें श्रद्धा का अभाव हो जाता है। जो श्रद्धा वेद—वेदान्त का मूल मंत्र है, जिस श्रद्धा ने नचिकेता को प्रत्यक्ष यम के पास जाकर प्रश्न करने का साहस दिया, जिस श्रद्धा के बल पर यह संसार चल रहा है।

प्रत्येक मनुष्य शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम है यदि उसे उसकी ग्रहण शक्ति के अनुसार शिक्षा दी जाए। सारी शिक्षा तथा प्रशिक्षण का एक ही उद्देश्य होना चाहिए (मनुष्य निर्माण) मनुष्य का विकास। वह मनुष्य जो अपना प्रभाव सब पर डालता है जो अपने साथियों के दुख—सुख में साथ खड़ा रहता है और शक्ति का केंद्र है। जब ऐसा मनुष्य तैयार हो जाता है तो वह हर वस्तु पर प्रभाव डालकर उसे कार्यशील बना देता है।

यथा

**विद्या ददाति विनयम्, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वा धनमापनोति, धनो धर्मम् तत सुखम्।**

अर्थात् :- विद्या हमें विनय सिखाती है, विनय से ही हम सदाचारी चरित्रवान मनुष्य बनते हैं, चरित्रवान बन कर धन की प्राप्ति करते हैं और उस धन से धर्मकार्य करके सुख प्राप्त करते हैं।

**हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सबका है यह नारा। ईमानदारी से
बढ़ता सत्य, अहिंसा, प्रेम, भाईचारा।।**

ईमानदारी है राष्ट्रप्रगति का पथ। हम लें आज अभी इसकी शपथ।।

सत्यनिष्ठा : समृद्धि एवं आत्मनिर्भरता



सत्येंद्र कुमार सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

सत्यनिष्ठा—ईमानदारी सुशासन के दो नयना।
जिसने इसको अपनाया उसको कोई भय ना।।

सत्यनिष्ठा ही है आत्मनिर्भरता का मूलमंत्र।
रहता इससे सजग और सचल हमेशा तंत्र।।

सत्य का मतलब क्या है आओ इसे हम जानें।
है सत्य बड़ा ही निराला इसकी ताकत पहचानें।।

सत्य ही शिव है, सत्य है सुंदर, सत्य है कल्याणकारी।
सत्य सा कुछ भी शुभ नहीं, है सत्य ही मंगलकारी।।

सत्य है ज्योति, सत्य है मोती, सत्य ही करतार है।
सत्य देव है, सत्य सनातन, सत्य ही परवरदीगार है।।

सत्य खुशी है सत्य है शांति सत्य सुखों का सार है।
सत्य खिलाता सत्य जिलाता सत्य ही पालनहार है।।

सत्य है शक्ति सत्य है भक्ति सत्य ही तारनहार है।
सत्य की ताकत से चलती शासन और सरकार है।।

है सत्य की राहें कठिन बड़ी चलने से हम कतराते हैं।
है झूठ बड़ा ही मनभावन सब देख इसे ललचाते हैं।।

लेकिन सत्यमेव जयते की देखो अपनी संस्कृति है।
पंख लगाकर जितना उड़ ले झूठ तो एक विकृति है।।

सच्चाई में ताकत इतनी सबको सफल बनाती है।
ईमानदारी तो यारों जग में खुशिया फैलाती है।।

देखो यहाँ पर सभी कमाते अपने-अपने ज्ञान से।
लेकिन बरकत तो आती है बस सच्चे ईमान से।।

सच्चाई और ईमानदारी तो साख बढ़ाते शासन की।
गर यह दोनों मिल जाएँ तो धाक जमाते शासन की।।

नियमों और अधिनियमों का पालन हो सच्चाई से।
शासन और सत्ता मुक्त रहे हर भ्रष्टाचार बुराई से।।

सत्य है आँखें जो शासन को सही राह दिखाता है।
ईमानदारी बन पांव शासन को सही राह चलाता है।।

गर शासन को साथ मिले सच्चाई—ईमानदारी का।
फिर नहीं हो सकता है बोलबाला भ्रष्टाचारी का।।

वैसे तो इस देश में योजनाएँ हजारों दिखती है।
पर मानवता आज भी फुटपाथों पर बिलखती है।।

सत्यनिष्ठा और ईमानदारी से शासन जब चलता है।
तब अमन—चैन—खुशहाली से देश फलता—फूलता है।।

सुशासन है वहीं जहाँ पर सबको सबका सम्मान मिले।
भय—भूख—भ्रष्टाचार मुक्त,
होठों पर सदा मुस्कान खिले।।

आंदोलन—हड़ताल न हो, कोई झूठी जांच—पड़ताल न हो।
मेहनत कर सब बढ़ें बराबर, यूँ ही मालामाल न हो।।

समय पर सबको न्याय मिले हो दूर सभी शिकवे गिले।
फिर सुशासन के फल होंगे मीठे — मीठे और रसीले।।

याद करो बापू ने कैसे सत्य का साक्षात्कार किया।
शासन और सुशासन के गुरुमंत्र का उपहार दिया।।

सत्य जहाँ पर है वहाँ कार्रवाई होती है।
है जहाँ ईमान न गलत कमाई होती है।।

अब तक जो कुछ बोला मैंने वह ज्वलंत—सजीव है।
आत्मनिर्भर नए भारत की सत्यनिष्ठा ही नींव है।।

तो आओ हम सब मिल कर स्वदेशी का अनुसंधान करें।
सत्यनिष्ठ भाव से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करें।।

स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता



पीयूष मनोचा

प्रबंधक (विधि)

आर्बिट्रेशन सेल, निगम मुख्यालय

आजादी के 75 साल - क्या खोया क्या पाया !

जो भी सपना देखा था, क्या पूरा अब तक हो पाया ?

चौतरफा विकास का सपना;

देश में हर्षोल्लास का सपना;

भारतवासी की हर आस का सपना;

न्याय प्रणाली में विश्वास का सपना;

सपना - बच्चे-बूढ़े और जवान का;

सपना - भारत के आत्मसम्मान का।

सपना - हर क्षेत्र में प्राप्त महारथ का;

सपना - आत्मनिर्भर भारत का।।

भारत की आत्मनिर्भरता की खातिर ...

बहुत बातें करनी हैं पूरी।

किन्तु सभी बातों से ऊपर ...

सत्यनिष्ठा है सबसे जरूरी।

स्वयं के प्रति सच्चा होना, दूसरों के प्रति ईमानदारी,

अपने काम में किसी वजह से ...

कभी न बनना भ्रष्टाचारी।

देना अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन और प्रवृत्ति का रखना मान,

कहे पीयूष सुनो जी साहब ...

सत्यनिष्ठा की यही पहचान।

अपनाया अगर यह नियम स्वयं में,

नहीं रुकेगा कोई काम,

आत्मनिर्भरता की प्राप्ति का सपना ...

पाना होगा अति आसान।।

आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर,

हम सबको प्रण करना होगा,

भारत आत्मनिर्भर बन जाए, हर योगदान करना होगा।

आत्मनिर्भरता राष्ट्र में हो, समय यही अब करे पुकार,

इसके बिना अधूरा है सब, हर उन्नति भी है बेकार।

भ्रष्टाचार रूपी अभिशाप को, नहीं पनपने देना है,

सत्यनिष्ठा से करना कार्य, खुद को न भटकने देना है।

ज्यादा कुछ नहीं है करना, केवल सत्यनिष्ठा अपनाएँ,

सब काम करें ईमानदारी से,

आत्मनिर्भर भारत बन जाए।।

**सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता,
आत्मनिर्भरता से सक्षमता,
और सक्षमता से ही प्रतिष्ठा।।**

सतर्कता जागरूकता सप्ताह मार्गदर्शन नोट (2021)



राजेश कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)

सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के तत्वावधान में, भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल (31 अक्टूबर) के जन्मदिन की विशिष्ट गतिविधि के रूप में प्रत्येक वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है ताकि भ्रष्टाचार के प्रतिकूल परिणामों के बारे में नागरिकों और सरकारी कर्मचारियों को संवेदनशील बनाया जा सके तथा इसे खत्म करने के तरीकों के साथ भ्रष्टाचार के प्रतिकूल परिणामों एवं इसके खतरे के बारे में जागरूकता पैदा हो सके।

इस वर्ष सीवीसी ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2021 की विषय के रूप में "Independent India @75 : Self Reliance with Integrity –स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता" विषय को चुना है। आत्मनिर्भर भारत, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने सम्बन्धी एक दृष्टि (विजन) है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का कहना है कि जब भारत आत्मनिर्भर बनने की बात करता है तो वह आत्मकेंद्रित व्यवस्था की वकालत नहीं करता। भारत की आत्मनिर्भरता में; सारी दुनिया के सुख, सहयोग और शांति की चिंता है। प्रधानमंत्री जी ने आत्म निर्भर भारत अभियान के तहत आर्थिक पैकेज की घोषणा भी की है, ताकि हमारे देश को आत्मनिर्भर बनाकर कोरोनावायरस संकट से बाहर निकाला जा सके। इसी क्रम में केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह- 2021 की थीम भी 'स्वतंत्र भारत @75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' रखा है।

आयोग, सतर्कता जागरूकता सप्ताह के विभिन्न साधनों के माध्यम से सभी हितधारकों तक पहुंचने का प्रयास करता है। इसके विशिष्ट गतिविधियों के हिस्से के रूप में तथा भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों के व्यापक प्रसार के लिए

आयोग ने महाविद्यालयों और विद्यालयों में गतिविधियों के लिए एक मार्गदर्शन नोट और टेम्पलेट तैयार किया है। आयोग ने विद्यालयों में सत्यनिष्ठा क्लब स्थापित करने के लिए एक मार्गदर्शन नोट भी तैयार किया है जो निम्न प्रकार है :

सत्यनिष्ठा क्या है? What is integrity?

एक व्यक्ति के लिए, सत्यनिष्ठा का अर्थ है, आंतरिक नैतिक संहिता का पालन, पारदर्शिता में प्रतिबिंबित, ईमानदारी और संकल्प, कथन एवं कृत्य (आचार-व्यवहार) में सम्पूर्ण सामंजस्य। एक संगठन के लिए, सत्यनिष्ठा का अर्थ है कि संगठन के कार्य सम्पूर्ण ईमानदारी और विश्वास के साथ आंतरिक सुसंगत सिद्धांतों के ढांचे पर आधारित होते हैं।

लोग या संगठन जो सत्यनिष्ठा का प्रदर्शन करते हैं उन्हें समाज में सम्मानित किया जाता है क्योंकि वे विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं। वे सिद्धांतबद्ध हैं तथा सम्माननीय तरीकों से आचरण करने के लिए जाने जाते हैं, भले ही कोई भी नहीं देख रहा हो।

ईमानदारी क्या है? What is honesty?

ईमानदारी का अर्थ है, उन चीजों को नहीं करना जो नैतिक रूप से गलत हैं। ईमानदारी सत्य बोलना और सच्चा व्यवहार करना है। ईमानदार होने का मतलब है कि आप जानते हैं कि सही काम किस तरह से करना है।

जब आप कुछ करते हैं तो नैतिक रूप से गलत कार्यों से परिचित होते हैं या जानते हुए जब आपको अपने गलत कार्यों को छिपाना पड़ता है, तो आप ईमानदार नहीं हैं।

सच्चाई (धोखाधड़ी) को नहीं छुपा रहे है, फिर से लाभ (जालसाजी) के लिए नियमों को नहीं तोड़ रहे है तथा ऐसा कुछ नहीं ले रहे है जो आपका नहीं है (चोरी) और कई अन्य कृत्य जिन्हें आप छुपाएंगे क्योंकि इन्हें आपने नैतिक रूप से सही माना हैं, इसमें शामिल है।

रिश्वत क्या है? What is Bribery?

रिश्वत देने वाले को प्रभावित करने के इरादे से कुछ (आमतौर पर पैसा) देने या लेने का कार्य है, कुछ लाभ के लिए जो अन्यथा रिश्वत देने वाले को उपलब्ध नहीं होता।

Bribery is the act of giving or taking something (usually money) with intension of influencing the receiver to benefit the giver, for some benefit which would not otherwise have been available to the giver of the bribe.

भ्रष्टाचार क्या है? What is Corruption?

भ्रष्टाचार में रिश्वत के साथ-साथ निजी लाभ या अनुचित लाभ के लिए अधिकार का उपयोग शामिल है। यह निजी संपत्ति अर्जित करने का रूप ले सकता है या इसमें स्वयं या दूसरों के लिए अधिकार सौंपे गए व्यक्ति द्वारा लिया गया कोई अन्य अनुचित लाभ शामिल हो सकता है।

This may take the form of amassing private wealth or may include any other undue benefit taken by a person entrusted with authority for himself or for others.

हमें भ्रष्टाचार मुक्त भारत क्यों चाहिए? Why should we have Corruption Free India?

क्योंकि भ्रष्टाचार के खतरे ने हमारे देश के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। देश गरीबी, शिक्षा की कमी और कुपोषण जैसी बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा है और भारत से इन बीमारियों को मिटाने के लिए सरकार और नागरिकों को एक आम संकल्प की जरूरत है।

Because the menace of corruption has adversely affected our country's development- The country faces big challenges such as poverty, lack of education and malnutrition and a common resolve is needed by Government and Citizens to eradicate these ills from India.

इस प्रयास में कोई कैसे मदद करता है? How does one help in this effort?

हमें आज ही यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि मैं :-

- जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी तथा कानून के नियमों का पालन करूंगा;
Follow probity and rule of law in all walks of life;
- ना तो रिश्वत लूंगा, और ना ही रिश्वत दूंगा;
Neither take nor offer bribe;
- सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी रीति से करूंगा;
Perform all tasks in an honest and transparent manner;
- जनहित में कार्य करूंगा;
Act in public interest;
- अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करूंगा;
Lead by example exhibiting integrity in personal behavior;
- भ्रष्टाचार की किसी भी घटना की रिपोर्ट उचित एजेंसी को दूंगा।
Report any incident of corruption to the appropriate agency-

एक व्यक्ति कैसे भ्रष्टाचार की रिपोर्ट करता है? How does one Report Corruption?

जब भी आप भ्रष्टाचार देखते हैं तो आप किसी भी प्राधिकारी को शिकायत कर सकते हैं। शिकायत अपने नाम और पते पर की जानी चाहिए। पिन कोड के साथ आपका डाक पता शिकायत पर लिखा होना चाहिए ताकि आपसे संपर्क किया जा सके। संबंधित विभाग द्वारा पूछे जाने पर आपको लिखित में पुष्टि करना चाहिए कि उक्त शिकायत आपके द्वारा की गई है। साथ ही अपने स्व-अभिप्रमाणित मान्य पहचान पत्र की प्रति और आपके पास उक्त शिकायत में लगाए गए आरोपों से संबंधित, यदि कोई अन्य दस्तावेजी सबूत हैं, तो उसे भी पत्र के साथ संलग्न भेजना चाहिए। इस प्रकार अपने शिकायत की पुष्टि अवश्य ही करनी चाहिए। अन्यथा CVC के

नियमों के तहत, संबंधित विभाग द्वारा आपके शिकायत पर संज्ञान नहीं लिया जाएगा।

अतः शिकायत की पुष्टि करना आवश्यक होता है।

यदि आपको खुद को बचाने की आवश्यकता महसूस होती है तो आपकी पहचान गुप्त रखी जा सकती है। आपको PIDPI शिकायत करनी है।

PIDPI शिकायत क्या है? What is PIDPI Complaint?

जनहित प्रकटन और मुखबिरों की सुरक्षा संकल्प (Public Interest Disclosure and Protection of Informers) के तहत की गई शिकायतों को PIDPI शिकायतें कहा जाता है। यदि PIDPI के तहत कोई शिकायत दर्ज की जाती है तो शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी जाती है। शिकायत को सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग को संबोधित किया जाना चाहिए और लिफाफे के ऊपर "PIDPI" अंकित किया जाना चाहिए। केवल केंद्र सरकार के अधिकारियों (सार्वजनिक बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों और संघ शासित प्रदेशों सहित) के खिलाफ शिकायतों को ही संज्ञान में लिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए <http://www.cvc.gov.in> वैबसाइट देखें। "PIDPI" शिकायत करने के दिशानिर्देश:

1. शिकायत एक बंद/सुरक्षित लिफाफे में होनी चाहिए और इसे सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग को संबोधित किया जाना चाहिए। लिफाफे पर स्पष्ट रूप से "जनहित प्रकटीकरण के तहत शिकायत" या "PIDPI" लिखा होना चाहिए।

The complaint should be in a closed/ secured envelope and should be addressed to Secretary, Central Vigilance Commission. The envelope should clearly be inscribed with Complaint under the Public Interest Disclosure or PIDPI

2. शिकायतकर्ता को अपना नाम और पता शिकायत के आरंभ या अंत में या संलग्न पत्र में देना चाहिए। लिफाफे पर नाम और पता नहीं लिखा होना चाहिए

The complainant should give his/her name and address in the beginning or end of complaint or in an attached letter. The name and address should NOT be

mentioned on the envelope.

3. केवल केंद्र सरकार के कर्मचारियों या किसी केंद्रीय अधिनियम द्वारा या उसके तहत स्थापित किसी निगम, केंद्र सरकार के स्वामित्व वाली या उसके नियंत्रण वाली सरकारी कंपनियों, सोसाइटियों या स्थानीय प्राधिकरणों से संबंधित शिकायतें ही आयोग के अधिकार क्षेत्र में आती हैं। राज्य सरकारों द्वारा नियोजित कार्मिक और स्टेज सरकारों या उसके निगमों आदि की गतिविधियाँ आयोग के दायरे में नहीं आएंगी।

Only complaints pertaining to employees of the Central Government or of any corporation established by or under any Central Act, Government companies, societies or local authorities owned or controlled by the Central Government fall under the jurisdiction of the Commission. Personnel employed by the State Governments and activities of the Stage Governments or its Corporations etc. will not come under the purview of the Commission

4. शिकायतें केवल डाक द्वारा ही भेजी जानी चाहिए। ईमेल, शिकायत प्रबंधन पोर्टल या किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्राप्त शिकायतों पर विचार नहीं किया जाएगा।

Complaints should be sent via post only. Complaints received through emails, Complaint Management Portal or any other electronic medium will not be entertained.

5. व्यक्ति की पहचान की रक्षा के लिए, आयोग कोई पावती जारी नहीं करेगा और मुखबिरों को सलाह दी जाती है कि वे अपने हित में आयोग के साथ आगे कोई पत्राचार न करें। आयोग आश्वासन देता है कि, मामले के तथ्यों के सत्यापन योग्य होने के अधीन, यह आवश्यक कार्रवाई करेगा, जैसा कि ऊपर उल्लिखित भारत सरकार के संकल्प के तहत प्रदान किया गया है।

In order to protect identity of the person, the Commission will not issue any

acknowledgement and the whistle & blowers are advised not to enter into any further correspondence with the Commission in their own interest. The Commission assures that] subject to the facts of the case being verifiable, it will take the necessary action, as provided under the Government of India Resolution mentioned above.

6. शिकायतों में सतर्कता दृष्टिकोण होना चाहिए और शिकायत निवारण के लिए नहीं होना चाहिए।

The complaints should have vigilance angle and should not be for grievance Redressal.

7. PIDPI शिकायतों में शिकायतकर्ता की पहचान करने वाले विवरण शामिल नहीं होने चाहिए। यदि इस तरह के विवरण को शामिल करना अपरिहार्य है तो सीवीसी पोर्टल में एक सामान्य शिकायत दर्ज की जा सकती है

PIDPI complaints should not include details that identify the complainant. If the inclusion of such details is unavoidable then a normal complaint may be lodged in the CVC portal

8. PIDPI पर पिछले परिपत्र और पत्र आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं और अधिक जानकारी के लिए इन्हें देखा जा सकता है

Previous circulars and letters on PIDPI are available on the website of the Commission and may be referred to for further details.

भारत में कौन-कौन से भ्रष्टाचार विरोधी तंत्र उपलब्ध हैं? What are the Anti & Corruption mechanism available in India?

सरकार ने भ्रष्टाचार को रोकने में मदद के लिए कई कानून बनाए हैं और भ्रष्टाचार में शामिल होने के दोषी पाए गए लोगों को दंडित भी किया है। भारतीय दंड संहिता अपराधों को वर्गीकृत करती है तथा उन अपराधों के लिए दंड देती है। यह भारत के लिए मुख्य आपराधिक संहिता है और आपराधिक प्रक्रिया संहिता तथा भारतीय

साक्ष्य अधिनियम, 1873 के साथ यह भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली का आधार है।

सरकारी एजेंसियों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के व्यवसायों में भ्रष्टाचार का मुकाबला करने के लिए भ्रष्टाचार रोकथाम अधिनियम, 1988, संसद का एक अधिनियम है। यह कानून परिभाषित करता है कि एक सरकारी कर्मचारी कौन है तथा भ्रष्टाचार या रिश्वत में शामिल सरकारी कर्मचारियों को दंड देता है। यह किसी भी व्यक्ति को, जो भ्रष्टाचार या रिश्वत देने में मदद करता हो, दंडित करता है।

केंद्र सरकार के कर्मचारियों द्वारा रिश्वत और कदाचार के मामलों की जांच के लिए दिल्ली विशेष पुलिस प्रतिष्ठान अधिनियम, 1946 (Delhi Special Police Establishment Act, 1946) द्वारा केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) (Central Bureau of Investigation(CBI)), केंद्र सरकार की एजेंसी के रूप में स्थापना की है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) Central Vigilance Commission(CVC) केंद्र सरकार के संस्थानों में भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए केन्द्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम, 2003 द्वारा स्थापित एक शीर्ष निकाय है। यह सभी केंद्र सरकार के संगठनों में एक प्रशासनिक सतर्कता स्थापना के माध्यम से कार्य करता है। समान तंत्र और एजेंसियां भी विभिन्न राज्यों द्वारा स्थापित की गई हैं।

हम भ्रष्टाचार को कैसे रोक सकते हैं? How do we prevent Corruption from occurring?

संगठन में भ्रष्टाचार का पता लगने के बाद रोकने से बेहतर है पहले रोकना। कई संगठन ऐसे क्षेत्रों की पहचान कर रहे हैं जहां भ्रष्टाचार होने की संभावना है और फिर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए व्यवस्थित नीतियों को लागू करना है। वस्तुओं/सामानों के प्रापण और बिक्री, सार्वजनिक सेवाओं के वितरण, भर्ती इत्यादि जैसे क्षेत्रों को कमजोर क्षेत्रों के रूप में पहचाना जाता है। निवारक सतर्कता उपायों में निम्नलिखित शामिल हैं Preventive Vigilance measures include the following:

Simplification and standardization of rules and process-नियमों और प्रक्रियों के सरलीकरण तथा मानकीकरण।

Use of technology, Information Technology and automation-प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी तथा स्वचलन का उपयोग।

Transparency, accountability and better control & supervision- पारदर्शिता, जवाबदेही और बेहतर नियंत्रण तथा पर्यवेक्षण।

Training & awareness of employees, periodic rotational transfers of staff, conducive work environment and time & bound and effective punitive action- कर्मचारियों के प्रशिक्षण एवं जागरूकता, कर्मचारियों के आवधिक पूर्णतः चक्रानुक्रम स्थानांतरण, प्रेरक कार्य वातावरण और समयबद्ध और प्रभावी दंडात्मक कार्रवाई।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए क्या करता है? What does the Central Vigilance Commission do to end Corruption?

केन्द्रीय सतर्कता आयोग भ्रष्टाचार से लड़ने तथा सार्वजनिक जीवन में सुचिता सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख सत्यनिष्ठा संस्था है। यह केंद्र सरकार तथा उसके संगठनों में सतर्कता प्रशासन के अधीक्षण (देख-रेख) और भ्रष्टाचार विरोधी नीतियों को लागू करने के लिए संसद के एक अधिनियम के तहत स्थापित एक बहु-सदस्य निकाय है।

सार्वजनिक प्रशासन से संबंधित मामलों में पारदर्शिता, निष्पक्ष व्यवहार और वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करने हेतु आयोग ने भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक बहुपक्षीय रणनीति अपनाई है, जिसमें दंडात्मक, निवारक और भागीदारी सतर्कता उपाय शामिल हैं।

आयोग का मानना है कि समयबद्ध और प्रभावी दंडात्मक कार्रवाई जिसके परिणामस्वरूप अनुकरणीय और पर्याप्त सजा का निर्णय दूसरों को इस तरह के कदाचार करने से रोकता है।

आयोग संरचनात्मक उपचार प्रस्तावित करके भ्रष्टाचार मुक्त शासन समर्थकता प्राप्त करने की मांग करना चाहता है जो भ्रष्ट प्रथाओं की संभावना को कम करेगा।

हालांकि भ्रष्टाचार के संभावित क्षेत्र संगठनों/क्षेत्रों के

लिए विशिष्ट हैं, लेकिन कुछ व्यापक क्षेत्रों जैसे कि प्रापण, वस्तुओं तथा सेवाओं की बिक्री, दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों का आवंटन, मानव संसाधन प्रबंधन (भर्ती, पदोन्नति, स्थानांतरण तथा पोस्टिंग), आम नागरिकों के लिए सेवाओं का वितरण, नियमों और विनियमों के कार्यान्वयन और प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र आदि जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

आयोग सार्वजनिक सेवा वितरण और कार्यात्मक गतिविधियों, विशेष रूप से सार्वजनिक प्रापण तथा सभी संगठनों द्वारा अनुबंधों के लिए तकनीकी समाधानों के व्यापक उपयोग को अपनाते हुए पारदर्शिता लाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर दे रहा है।

आयोग का दृढ़ता से मानना है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में सभी नागरिकों की भागीदारी आवश्यक है। भ्रष्टाचार की ओर शून्य सहनशीलता और नैतिक मूल्यों को लागू करना रोजमर्रा की जिंदगी से भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए आवश्यक है। इसलिए, आयोग ने देश भर में सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज, युवाओं और नागरिकों के साथ जुड़ने के अपने प्रयासों का जोरदार प्रयास किया है।

युवा समाज के भविष्य के स्तंभ हैं। आयोग को लगता है कि उनके आचरण में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को आत्मसात करने तथा भ्रष्टाचार को खत्म करने हेतु ध्वजवाहक बनने में उनकी मदद के लिए उनके जीवन में प्रारंभिक हस्तक्षेप करना जरूरी है।

सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और निष्ठा को बढ़ावा देने के लिए, आयोग ने एक नागरिकों के लिए और दूसरा कॉर्पोरेट/संस्थाओं/फर्मों आदि के लिए सत्यनिष्ठा ई-प्लेज की अवधारणा की परिकल्पना की है। आइए हम सभी भारत से भ्रष्टाचार को खत्म करने का वचन दें। सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा www.pledge.cvc.nic.in पर ऑनलाइन ली जा सकती है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत की दृष्टि को समझने के लिए सभी एक साथ काम करें और संकल्प लें कि हम अपने देश की 75वें स्वतंत्रता वर्ष में न सिर्फ एक आत्मनिर्भर देश बनाएँगे अपितु सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर भारत बनाएँगे।

ईमानदारी - एक जीवन शैली



शशांक सिंह

प्रबन्धक (सिविल)

सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय

मनुष्य के जीवन में ईमानदारी का बहुत महत्व होता है। ईमानदारी मानव जीवन का वह हथियार है, जिसके बल पर वह भारी से भारी संकटों पर भी जीत हासिल कर सकता है। मनुष्य ईमानदारी से परिश्रम करके अपने जीवन की हर समस्या से छुटकारा पा सकता है। जीवन में कोई भी कार्य बिना ईमानदारी के किए गए परिश्रम से सफल या संपन्न नहीं हो सकता है। इसलिए कहा गया है कि ईमानदारी से किया गया परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। वह व्यक्ति जो ईमानदारी से किए गए परिश्रम से दूर रहता है वह सदैव दुःखी और दूसरों पर निर्भर रहने वाला होता है। जीवन की दौड़ में ईमानदारी से परिश्रम करने वाला हमेशा विजयी होता है। लेकिन आलसी लोगों को हमेशा हर जगह पर हार का मुँह देखना पड़ता है। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जो परिश्रम से सफल ना हो। इसलिए हमें ईमानदार और कर्मठ बनना चाहिए। ईमानदार बनकर ही हम अपने भाग्य को बदल सकते हैं। ईमानदारी से ही उन्नति और विकास का मार्ग खुल सकता है।

जीवन में कुछ लोग केवल अपने भाग्य पर निर्भर रहते हैं। ऐसे लोग ईमानदारी से परिश्रम करने की जगह भाग्य को अधिक महत्व देते हैं। वे लोग समझते हैं कि जो हमारे

भाग्य में होगा वह हमें अवश्य मिलेगा। लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि भाग्य के भरोसे रहना जीवन में आलस्य को जन्म देता है और आलस्य मनुष्य के जीवन के लिए एक अभिशाप है, जो उन्हें ईमानदारी से परिश्रम करने से रोकता है। इसलिए हमें भाग्य के भरोसे ना रहकर, कठिन परिश्रम करके जीवन में सफलता का रास्ता चुनना चाहिए। परिश्रम और ईमानदारी से कोई भी मनुष्य अपने भाग्य को बदल सकता है।

जो व्यक्ति ईमानदार होते हैं, वे परिश्रमी, चरित्रवान और स्वावलंबी भी होते हैं। मजदूर भी ईमानदारी से परिश्रम करके ही संसार के लिए उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है। अगर हम अपने जीवन, अपने राष्ट्र, अपने देश और अपने कार्यस्थल की उन्नति देखना चाहते हैं तो हम सभी को भाग्य पर निर्भर रहना छोड़कर ईमानदारी से परिश्रमी बनना होगा। सच्ची लगन और निरन्तर ईमानदारी से सफलता अवश्य मिलती है। निरन्तर ईमानदार रहने वाला व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में आसानी से सफलता पा सकता है। जीवन से सफलता पाने के लिए ईमानदारी से किया गया परिश्रम ही सर्वोपरि है।

“जिसका ईमान नहीं, वह इंसान नहीं, ईमान ना बेचो, भले ही सब कुछ बेच दो”

**ईमानदारी से लें हम ईमानदार होने का संकल्प। यही है एक मात्र,
राष्ट्र की प्रगति का विकल्प।।**

जिसके पास है सच्ची ईमानदारी। मानव धर्म का है वह सच्चा पुजारी।।

नैतिक पतन



रामफल मीना

वरिष्ठ प्रबन्धक (सिविल)

सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय

व्यक्ति का चरित्र उसके जीवन की अमूल्य निधि है। सच्चरित्रता मानव का ऋंगार है। यह वह प्रकाश ज्योति है जिसके सामने अंधकार टिक नहीं सकता। सच्चरित्रता की सुरसरि में स्नान करने से तन ही नहीं बल्कि मन और आत्मा भी निर्मल और सबल होती है। यह अध्यात्मिकता का प्रथम चरण है। यह वह सुगंध है जो जीवन कुसुम में महक भरती है। पर आज सच्चरित्रता का द्वास हो रहा है। भ्रष्टाचार जीवन के हर क्षेत्र में महामारी की तरह फैल रहा है। कार्यालयों, न्यायालयों में लगभग जीवन के हर क्षेत्र में इसका बाजार गर्म है। आज कोई जगह नहीं बची जहां भ्रष्टाचार न पहुंचा हो और कोई काम नहीं बचा जहाँ पैसे की ताकत से गलत निर्णय न होते हों। रिश्वत की ताकत के समक्ष कठिनाईयों के पर्वत रेत की तरह बिखर जाते हैं। विपत्तियों की सुनामी टल जाती है इसको आजकल सुविधा शुल्क कहते हैं। कोई भी प्रदेश होए किसी भी जाति अथवा धर्म का हो किंतु इस भाषा को हर एक बोलता समझता है। भ्रष्टाचार के प्रताप से ही गधे घी पी रहे हैं और घोड़े घास को तरस रहें हैं। इसके कारण समाज में अंधी दौड़ शुरु हो चुकी है सुविधाएं जुटाने की और कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता। आज इसी के कारण दारु, दान, दुहिता का खुला इस्तेमाल हो रहा है। आज रिश्वत के रूप में पराया पैसा अमृत हो गया है और राक्षस इसे पीने को लालायित है।

समाज आज इस भ्रष्टाचार के दानव के पैरों तले पड़ा कराह रहा है। विद्या के व्यवसायीकरण के कारण विद्या के पवित्र मंदिर में भी रिश्वत रुपी पिचाशनी का प्रवेश हो चुका है। आज पेपर आउट कराना, विद्यालय निर्माण के नाम पर अभिभावकों से अवैध उगाही, परीक्षा केंद्र पर

पैसा लेकर नकल करवाना जैसे पुण्य के काम हो गए हैं। शासन में चारों ओर यह बादल की तरह सच्चाई के सूरज को ढके हुए है। हमारे नेता, सत्ता व विपक्ष सभी इसमें आकंठ डूबे हैं। राशन की दुकान, विद्युत विभाग का इंस्पेक्टर, जल विभाग का इंस्पेक्टर, ट्रेफिक पुलिस सब इस पर निर्भर हो गये हैं। सच तो यह है कि शासन सरकार नहीं चलाती बल्कि कर्मचारियों के घर का चूल्हा रिश्वत के रुपयों से चलता है। भ्रष्टाचार शासकीय कार्यों में सबसे दुर्भाग्य है आज प्रशासन का कोई विरला ही क्षेत्र है जो इसकी छत्रछाया से बचा है इसका कोई स्तर निर्धारण भी सम्भव नहीं है। यह एक चपरासी से लेकर बड़े अधिकारी या मंत्री तक भी हो सकता है। ऐसा नहीं है कि यह कोई आज ही हो रहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक अनेक सूरमा अपना नाम काले अक्षरों में अंकित करा चुके हैं। हमारे बहुत से नेता तो वर्तमान में जेल यात्रा तक कर रहे हैं।

भारत में केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा अनेक प्रकार के जागरण अभियान भी चलाए जाते हैं किंतु वे सब ऊंट के मुंह में जीरा ही साबित हुए हैं। आज परिपाटी बन गई है कि रिश्वत लेते पकड़े जाओ तो रिश्वत देकर छूट जाओ। भारत में भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए सर्व प्रथम 1941 में विशेष पुलिस संगठन की स्थापना हुई। सन 1962 में इसके निदान और अध्ययन के लिए संथालन कमेटी बनाई गई। और उन्होंने सिफारिश भी की कि भ्रष्टाचार के मामलों में न्यायिक कार्यवाही की शीघ्रता के लिए संविधान की धारा 311 को संशोधित कर केंद्रीय चौकसी आयोग बनाया जाए। सभी लोक सेवक, विधायक, मंत्री, सांसद अपनी सम्पति का ब्यौरा दें, नियुक्तियां, पदोन्नती,

टेका, लाईसेंस, परमिट देने में सावधानी बरती जाए। इस सिफारिश पर केंद्रीय निगरानी आयोग की स्थापना 1964 में की गई। भारत में स्वीडन जैसी लोकपाल व्यवस्था की मांग पिछले चार दशकों से भी अधिक से हो रही है। अनेक धरने प्रदर्शन हो रहे हैं। किंतु कड़े नियम कानूनों को संसद में पास नहीं करवा रही है। नैतिकता आधारित राजनीति स्वप्न की बात हो चुकी है। भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु नैतिकता तथा मूल्यों पर आधारित राजनीति का रास्ता व राज नेताओं को अपनाना होगा। जनता को भी सांप्रदायिकता और क्षेत्रीयता की भावना को त्याग राष्ट्रीय भावना को विकसित करना होगा। जब तक समाज में भ्रष्टाचार के खिलाफ नैतिक संवेदनाओं का संचरण नहीं होगा तब तक लोक पाल या लोकायुक्त भी घने अंधकार में झिल मिलाते दीप मात्र ही होंगे।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ काले कारनामों और घोटालों की बाढ आई हुई है। कारण है सोच का पतन, शिक्षा व आचरण का पतन इस भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए रामबाण है नैतिकता का वरणण स्वयं को दूसरे की जगह रखकर चिंतन करना सत्य शिक्षा का मनन करना, इत्यादि व्यक्ति समाज की मूल भूत इकाई है और व्यक्ति के चरित्र से ही राष्ट्र के चरित्र का निर्माण व निर्धारण होता है। अतः भ्रष्टाचार को नैतिकता व देश प्रेम द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

स्वयं सीखिए आचरण परखना आप,
नैतिकता का नियम यह हरे पाप संताप।

सत्य अमोघ अस्त्र है रखे सब व्याधि,
मानव महामानव करें हो विकसित प्रताप।।




जनहित प्रकटीकरण और मुखविरों की सुरक्षा (PIDPI) संकल्प, 2004

क्या आपके आसपास भ्रष्टाचार है? PIDPI के तहत शिकायत दर्ज करें।

आपकी पहचान गोपनीय रखी जाएगी

शिकायतें लिखित रूप में निम्न को भेजें:
सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग
सतर्कता भवन, ब्लॉक-ए,
जीपीओ कॉम्प्लेक्स, आईएनए
नई दिल्ली - 110 023

(शिकायत के ऊपर "PIDPI" अंकित करें। शिकायतें केवल केंद्र सरकार, सार्वजनिक उपकरणों, सार्वजनिक बैंकों और संघ शासित प्रदेशों इत्यादि के कर्मचारियों के खिलाफ ही होनी चाहिए।)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 की एक पहल



PIDPI शिकायतें: ये क्या हैं? और कब आपको उसे करना चाहिए

- 1 जनहित प्रकटन और मुखविरों की सुरक्षा संकल्प के तहत की गई शिकायतों को PIDPI शिकायतें कहा जाता है।
- 2 यदि PIDPI के तहत कोई शिकायत दर्ज की जाती है तो शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी जाती है।
- 3 शिकायत को सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग को संबोधित किया जाना चाहिए और शिकायत के ऊपर "PIDPI" अंकित किया जाना चाहिए।
- 4 केवल केंद्र सरकार के अधिकारियों (सार्वजनिक बैंकों, सार्वजनिक उपकरणों और संघ शासित प्रदेशों सहित) के खिलाफ शिकायतों को ही संज्ञान में लिया जाएगा।
- 5 अधिक जानकारी के लिए <http://www.cvc.gov.in> वेबसाइट देखें।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 की एक पहल




PUBLIC INTEREST DISCLOSURE AND PROTECTION OF INFORMER RESOLUTION, 2004 (PIDPI)

IS THERE CORRUPTION AROUND YOU? LODGE A COMPLAINT UNDER PIDPI.

YOUR IDENTITY SHALL BE KEPT CONFIDENTIAL

SEND COMPLAINTS IN WRITING TO:
The Secretary, Central Vigilance Commission
Satarkta Bhavan, Block-A
GPO Complex, INA
New Delhi - 110 023

(MARK THE ENVELOPE AS "PIDPI". COMPLAINTS SHOULD ONLY BE AGAINST CENTRAL GOVERNMENT EMPLOYEES, INCLUDING PSUs, PSBs AND UTs etc.)

A VIGILANCE AWARENESS WEEK 2021 INITIATIVE



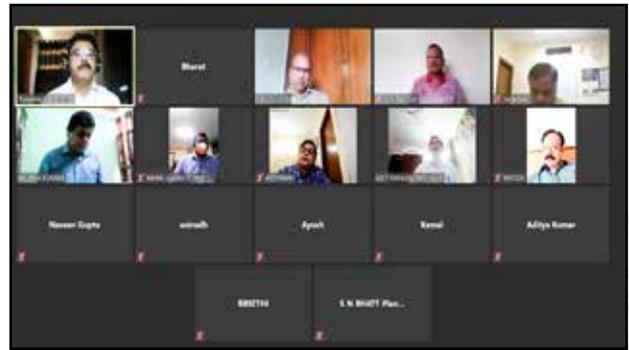
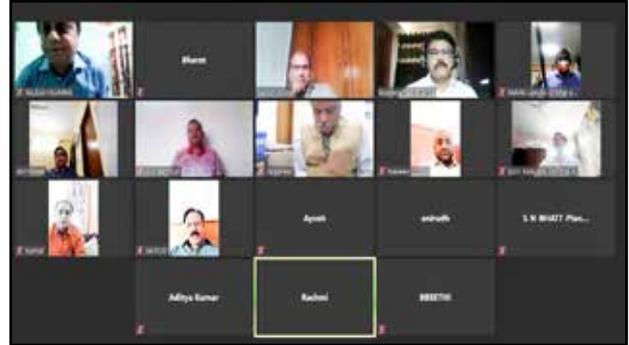
PIDPI COMPLAINTS: WHAT ARE THEY? & WHEN SHOULD YOU MAKE THEM?

- 1 Complaints made under Public Interest Disclosure and Protection of Informers Resolution are termed as PIDPI complaints
- 2 If any complain is made under PIDPI, the identity of the complainant is kept confidential
- 3 The complaint should be addressed to the Secretary, Central Vigilance Commission and envelope should be marked as "PIDPI"
- 4 Only complaints against Central Government officials (including PSBs, PSUs and UTs) will be taken into cognizance
- 5 For more details visit <https://www.cvc.gov.in>.

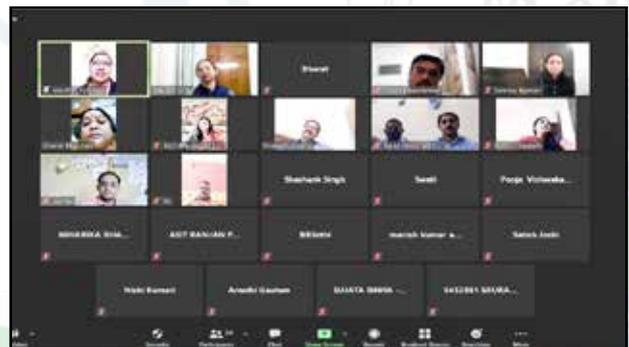
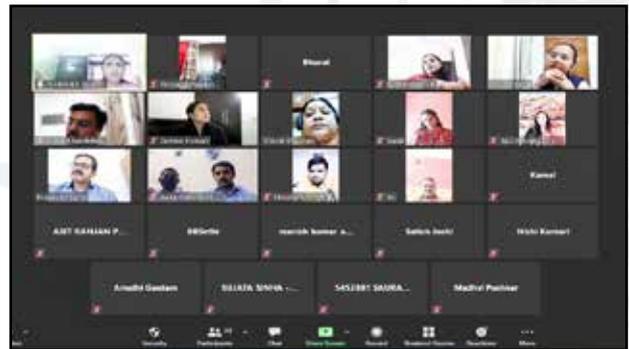
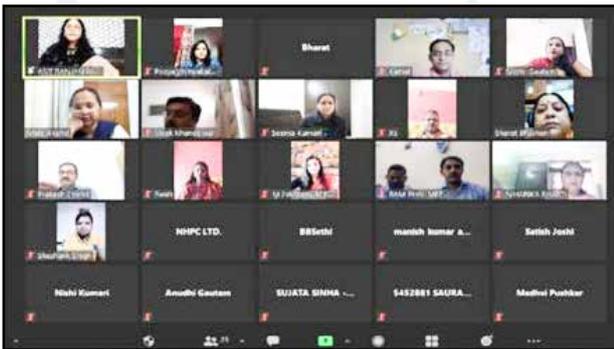


A VIGILANCE AWARENESS WEEK 2021 INITIATIVE

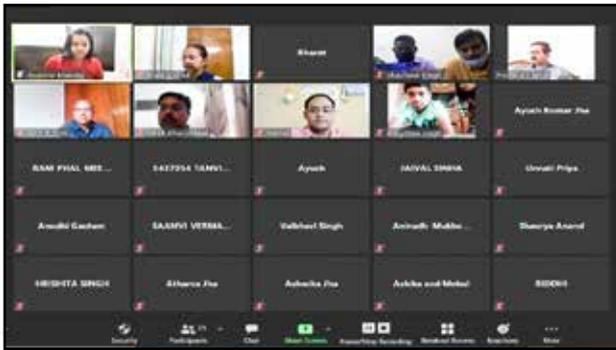
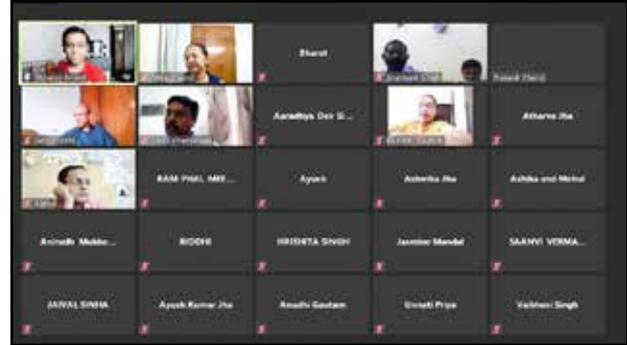
Glimpses VAW 2020: Debate Competition for Employees Posted at Corporate Office



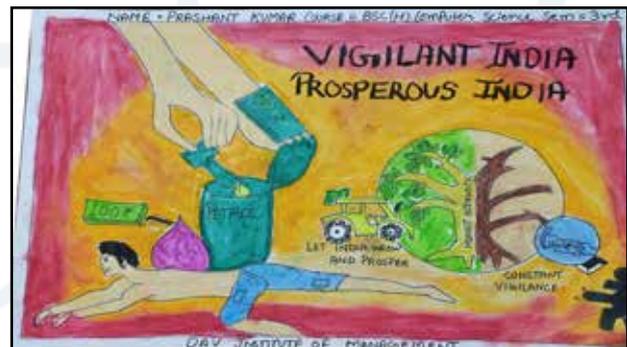
Glimpses VAW 2020: Poem Competition for Females at Corporate Office

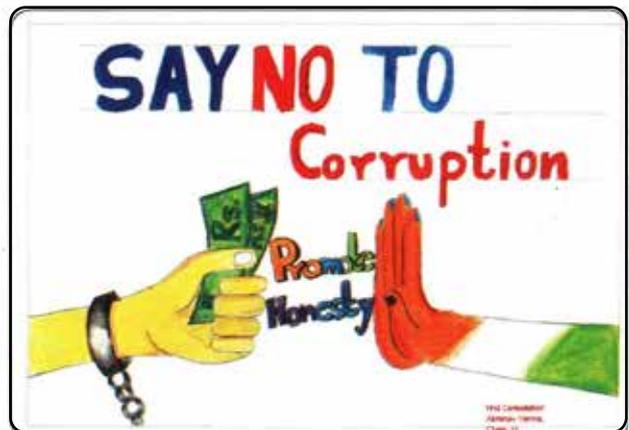
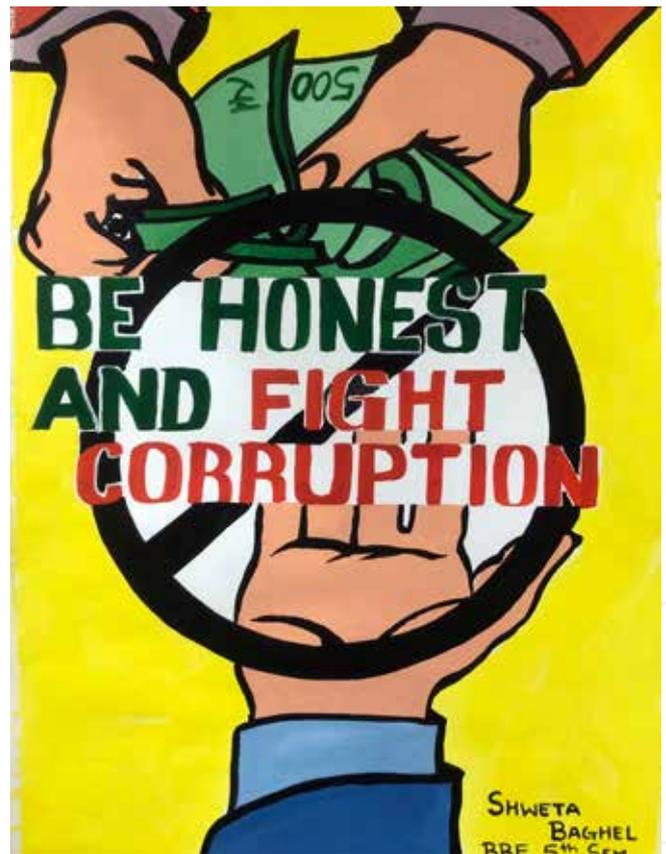
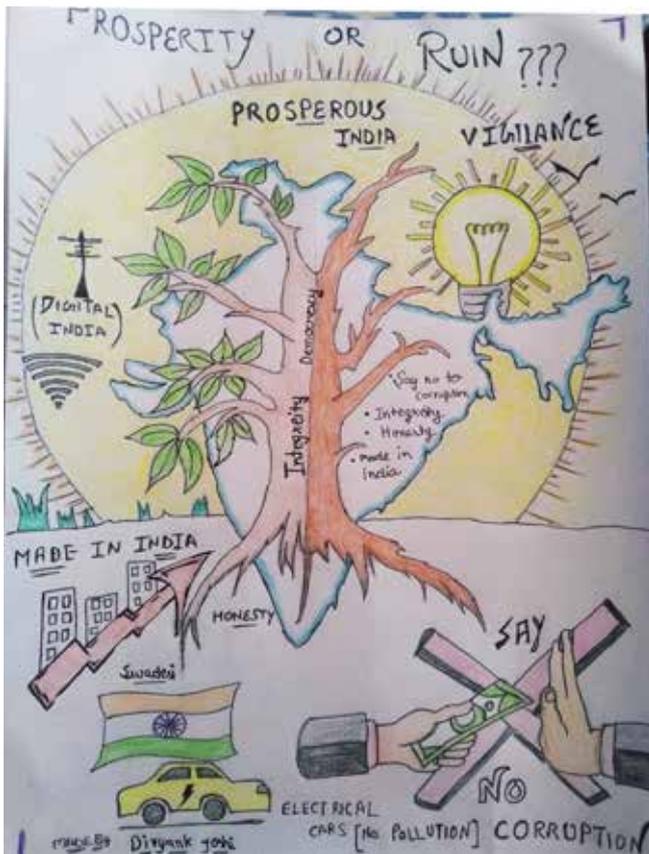


Glimpses VAW 2020: Poem Competition for Kids of Employees Posted at Corporate Office



VAW 2020 Glimpses : Poster Making Competition at DAVIM, Faridabad





VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



BAIRASIUL POWER STATION



BAIRASIUL POWER STATION



CHAMERA POWER STATION – I



CHAMERA POWER STATION – I



CHAMERA POWER STATION – II



CHAMERA POWER STATION – II



CHAMERA POWER STATION – III



CHAMERA POWER STATION – III

VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



CHUTAK POWER STATION, KARGIL



CHUTAK POWER STATION, KARGIL



DHAULIGANGA POWER STATION



DHAULIGANGA POWER STATION



DIBANG BASIN PROJECTS



DIBANG BASIN PROJECTS



DULHASTI POWER STATION



DULHASTI POWER STATION

VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



KISHANGANGA POWER STATION



KISHANGANGA POWER STATION



KOTLI BEHL



LOKTAK POWER STATION



LOKTAK POWER STATION



LOKTAK DOWNSTREAM



NIMMO-BAZGO POWER STATION



NIMMO-BAZGO POWER STATION

VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



PARBATI HE PROJECT STAGE – II



PARBATI HE PROJECT STAGE – II



PARBATI -III POWER STATION



PARBATI-III POWER STATION



RANGIT POWER STATION



RANGIT POWER STATION



RO BANIKHET



RO BANIKHET

VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



RO JAMMU



RO CHANDIGARH



RO SILIGURI



RO ITANAGAR



SALAL POWER STATION



SEWA – II POWER STATION



SOLAR POWER PROJECT, TN



SOLAR POWER PROJECT, TN

VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



SUBANSIRI LOWER PROJECT



SUBANSIRI LOWER PROJECT



TANAKPUR POWER STATION



TANAKPUR POWER STATION



TEESTA LOW DAM III PS



TEESTA LOW DAM III PS



TEESTA IV PROJECT



TEESTA IV PROJECT

VAW-2020 : Integrity Pledge at various offices of the Corporation



TEESTA V POWER STATION



TEESTA V POWER STATION



URI-I POWER STATION



URI-I POWER STATION



URI-II POWER STATION



URI-II POWER STATION

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation

Debate Competition



BAIRASIUL POWER STATION



CHAMERA-II POWER STATION



CHAMERA-III POWER STATION



CHUTAK POWER STATION



DHAULIGANGA POWER STATION



DIBANG BASIN PROJECT

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



DULHASTI POWER STATION



KISHANGANGA POWER STATION



KOTLI BHEL PROJECT



LOKTAK POWER STATION



NIMMO BAZGO POWER STATION



PARBATI HE PROJECT STAGE - II



PARBATI -III POWER STATION



RANGIT POWER STATION

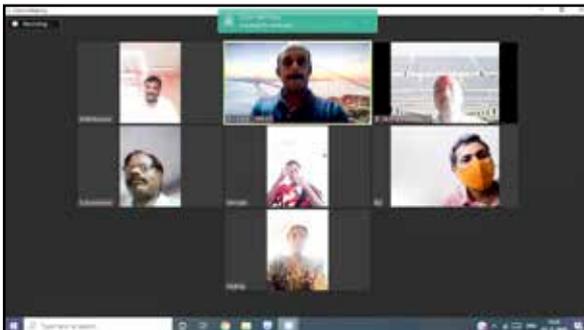
VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



RO BANI KHET



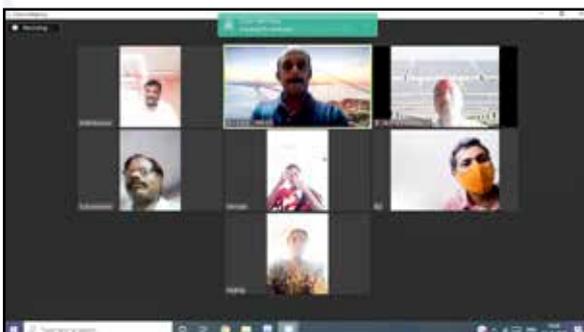
RO JAMMU



RO SILIGURI



SALAL POWER STATION



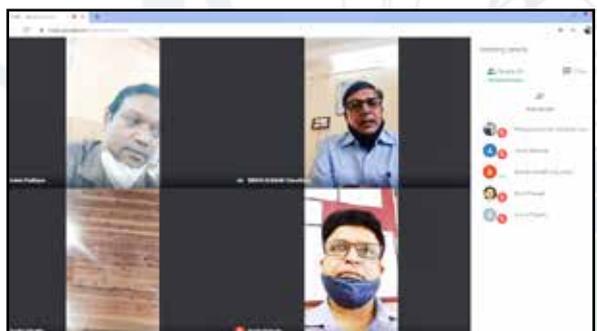
SOLAR POWER PROJECT, TN



SUBANSIRI LOWER PROJECT



TANAKPUR POWER STATION



TEESTA LOW DAM-III POWER STATION

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



TEESTA LOW DAM –IV POWER STATION



TEESTA IV PROJECT



TEESTA V POWER STATION



URI-I POWER STATION



URI-II POWER STATION

Online E-Pledge Booth



PARBATI HE PROJECT STAGE - II

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation

Essay Writing Competition



BAIRASIUL POWER STATION



CHAMERA - I POWER STATION



CHAMERA - II POWER STATION



CHAMERA - III POWER STATION



CHUTAK POWER STATION



DIBANG PROJECT



DULHASTI POWER STATION



KISHANGANGA POWER STATION

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



KOTLI BEHL



LOKTAK POWER STATION



NIMMO BAZGO POWER STATION



PARBATI HE PROJECT STAGE - II



PARBATI - III POWER STATION



RANGIT POWER STATION



RO BANIKHETH



RO JAMMU

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



RO CHANDIGARH



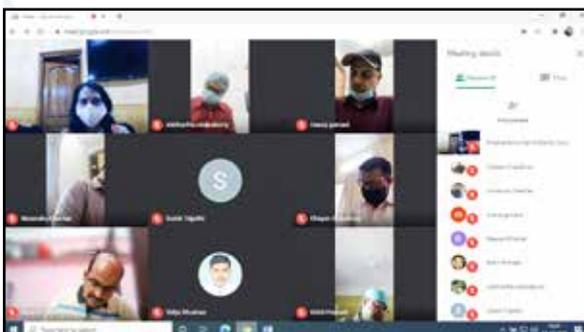
RO SILIGURI



SEWA – II POWER STATION



SUBANSIRI LOWER HE PROJECT



TEESTA LOW DAM III POWER STATION



TEESTA LOW DAM IV POWER STATION



TEESTA V POWER STATION



URI-I POWER STATION

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



URI-II POWER STATION

Poem Recitation Competition



BAIRASIUL POWER STATION



CHAMERA - I POWER STATION



CHAMERA - II POWER STATION



CHUTAK POWER STATION

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



DULHASTI POWER STATION



DULHASTI POWER STATION



DIABANG



KISHANGANGA POWER STATION



KOTLI BEHL



LOKTAK POWER STATION



NIMMO BAZGO POWER STATION



PARBATI HE PROJECT STAGE - II

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



PARBATI – III POWER STATION



RANGIT POWER STATION



RO BANIKHET



RO CHANDIGARH



RO SILIGURI



SEWA – II POWER STATION



SUBANSIRI LOWER HE PROJECT



TANAKPUR POWER STATION

VAW-2020 : Competitions Organized at various offices of the Corporation



TEESTA LOW DAM III POWER STATION



TEESTA LOW DAM IV POWER STATION



TEESTA V POWER STATION



URI-I POWER STATION



URI-II POWER STATION

VAW-2020 : Prize Distribution Ceremony at various offices of the Corporation



CHAMERA II POWER STATION



CHAMERA III POWER STATION



CHUTAK POWER STATION



DHAULIGANGA POWER STATION



DIBANG PROJECT



DULHASTI POWER STATION

VAW-2020 : Prize Distribution Ceremony at various offices of the Corporation



KISHANGANGA POWER STATION



KOTLI BEHL PROJECT



NIMMO BAZGO POWER STATION



PARBATI HE PROJECT STAGE - II



PARBATI III POWER STATION



RANGIT POWER STATION



RO CHANDIGARH

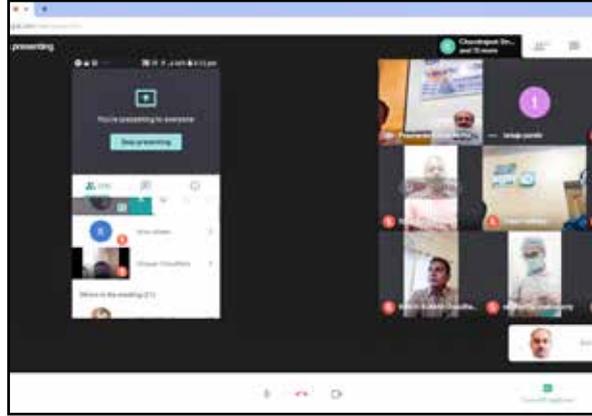


SOLAR POWER, TN

VAW-2020 : Prize Distribution Ceremony at various offices of the Corporation



TANAKPUR POWER STATION



TEESTA LOW DAM III POWER STATION



TEESTA LOW DAM IV POWER STATION



TEESTA V POWER STATION



URI-I POWER STATION

हम हैं कर्मचारी



सत्येंद्र कुमार सिंह

उप प्रबन्धक (राजभाषा)

प्रथम पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020
क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी

चाहे राष्ट्र निर्माण हो
या फिर जनकल्याण हो
हम कार्मिकों की भूमिका
इसमें बहुत बड़ी है
विकसित और खुशहाल राष्ट्र की
हम एक अहम कड़ी हैं

योजनाएँ बनाते हैं
लागू उन्हें कराते हैं
फाइलें निपटाते हैं
देश को आगे बढ़ाते हैं
ऐसे में लापरवाह हुए तो
देश हमारा लुट जाएगा
जात-धरम के खंडों में
छिन्न-भिन्न हो टूट जाएगा
तो हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है
सत्य-निष्ठा-ईमानदारी
और सतर्कता ही धर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है

बिन माँगे मिल जाता यूँ ही
ये कैसा कुतर्क है
दूसरों से तुलना कर के
जीवन को बनाते नर्क है
फालतू की इच्छाएँ इतनी
लगती सभी अधूरी हैं
जब वेतन है अच्छा खासा
फिर घूस की क्या मजबूरी है
गर शांति से जीना है तो

सतर्कता बेहद जरूरी है
खुशहाल जीवन की मित्रों
जागरूकता ही धुरी है

यही जीवन का मर्म है जी
यही जीवन का मर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है
सत्य-निष्ठा-ईमानदारी
और सतर्कता ही धर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है
लेकिन इनके झांसे में
हमें न यारों आना है
सत्य-निष्ठा-ईमानदारी
और सतर्कता ही अपनाता है
एक यही सत्कर्म है जी
एक यही सत्कर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है
सत्य-निष्ठा-ईमानदारी
और सतर्कता ही धर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है

समय से दफ्तर आएंगे
घर समय पर जाएंगे
मिलकर हर फाइल को
उचित समय निपटाएंगे
जो भी हो सरकारी सूचना
जन-जन तक पहुंचाएंगे
भोली-भाली जनता को

सरकारी लाभ दिलाएँगे
काम करेंगे हम सबका
बिना किसी भेद-भाव के
चाहे लाला-मंत्री-संतरी
बिना किसी प्रभाव के
जैसे-जैसे काम आएँगे
नंबर वैसे बिटाएँगे
जिसकी बारी जब आएगी
उसको तब निपटाएँगे
रिश्वत और कमीशनखोरी
का चलन हम तोड़ेंगे
गर कोई करता है ऐसा
फिर उसको ना छोड़ेंगे
खाएँगे ना एक पैसा
और ना खाने देंगे
स्वच्छ रहेगा सिस्टम
इसे ना भ्रष्ट बनाने देंगे
यही हमारा कर्म है जी
यही हमारा कर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है
सत्य-निष्ठा-ईमानदारी
और सतर्कता ही धर्म है

जनता के दुःख-दर्द का
जब भान नहीं होगा
क्या बाबू क्या साहब
किसी का मान नहीं होगा
जो अगर हम ठीक-ठाक
रोड नहीं बनवाएँगे
तो बोलो जनता को क्या
गड्डे में दौड़ाएँगे
पुल नहीं मजबूत हुआ तो
हर रोज हादसे होंगे
मरनेवाले रोती-बिलखती
किसी माँ के लाडले होंगे
गर भर्ती में चूक हुई तो
भ्रष्ट लोग घुस जाएँगे
ऐसे में पूरे सिस्टम की
मिलकर बैंड बजाएँगे
पर ऐसा हम नहीं करेंगे

हम इतने नहीं बेशर्म हैं
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है
सत्य-निष्ठा-ईमानदारी
और सतर्कता ही धर्म है
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है

गर हैं अधिकारी तो
अधिकारों का मान रखेंगे
हैं अगर कर्मचारी तो
इस बात का ध्यान रखेंगे
कि जब देश दौड़ेगा दफ्तर में तो
सबका काम सफर होगा
भीड़ बढ़ेगी दफ्तर में
और परेशान हर घर होगा
फिर लगेगी बोली रोज
पहले काम कराने की
निकल पड़ेगी भ्रष्ट प्रथा
पॉकेट को गरमाने की
ऐसे में कई उल्टे-सीधे
काम भी लेकर आएँगे
कई बनाएँगे प्रेशर
कई नोट दिखा ललचाएँगे
हम हैं कर्मचारी हमारा
ड्यूटी निभाना कर्म है

सावधान इक प्रहरी बनकर, सजग समाज बनाने से।
प्रगति नहीं असंभव जनजन के सतर्क हो जाने से।।
अभियंता-चिकित्सक की थोड़ी भी चूक बड़ी होती।
सजग-सतर्क ना हुए तो जनता की खाट खड़ी होती।।
वैज्ञानिक अनुसंधान हो या यानों का प्रक्षेपण हो
रासायनिक विश्लेषण हो या भूगर्भीय सर्वेक्षण हो।।
कार्यालय का काम-काज हो या परिवार चलाना हो।
या फिर जीवन-नैया खेकर भवसागर पार लगाना हो।।
सीना ताने सीमा पर यदि प्रहरी खडे सतर्क नहीं।
फिर जीवन रक्षा, देश सुरक्षा और शांति का अर्थ नहीं।।
सजग, सतर्क, सावधानी की जीवनशैली अपनायें हम।
और कर्मठता का परिचय देकर समृद्ध देश बनाएँ हम।।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



सुश्री विदुषी सिन्हा, कक्षा 6
सुपुत्री, श्री राजेश सिन्हा,
वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.)

प्रथम पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020,
क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी

अलग-अलग है, बोली सबकी, अलग-अलग है भाषा,
वसुधैव कुटुम्बकम ही, भारत की है आशा।।

भ्रष्टाचार और घूसखोरी, से त्रस्त हुआ अब देश है,
नहीं चाहिए ऐसा सिस्टम, जिसमें इतना द्वेष है।।

नया सवेरा लाएँगे हम, हमने मन में ठाना है,
भ्रष्टाचार और घूसखोरी को, सतर्कता से हटाना है।।

विश्वगुरु अब बनकर हमको, भारत को समृद्ध बनाना है,
मातृभूमि का कर्ज है हम पर, इसको नहीं भुलाना है।।

सतर्क प्रहरी हम भारत के, भारत का गौरव बढ़ायेंगे।
फिर से नया सवेरा होगा,
सोने की चिड़ीया फिर से कहलाएँगे।।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



श्रीमती खुशबू चौधरी
धर्मपत्नी, श्री राजेश सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.)

प्रथम पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020,
क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी

समृद्धता के लिए सतर्क रहें,
सतर्कता ही समृद्धता की कुंजी है।
आँख, कान, दिमाग खुलें रखें,
यही तो सतर्क व्यक्ति की पूंजी है।।
ध्यान रहें, न घूस लें, न घूस दें,
चाहे हो बच्चे की दाखिले की बात,
या हो बेटे को नौकरी का सवाल,
ये भी ना कहें, कि भाई हमारा मिनिस्ट्री में है
उस फलाने से पहचान,
ये भी भ्रष्टाचारी का है एक बड़ा विधान।।
चुनाव होने को है, ध्यान रहें सतर्क रहें,
किसी भ्रष्टाचारी को भारत की डोर न दें।
सतर्क रहें, उम्मीदवारों के कार्यों को लेकर,

वोट देकर अपनी भारतीयता का प्रमाण दें।।
सतर्कता के पथ पर पग पग चलें,
ध्यान रहें, राह में किसी बेटी को कोई छेड़ ना दे,
सवाल दूसरे से नहीं, पहले घर वालों से करें,
अपने बच्चों को सही शिक्षा दें।।
आज हर किसी ने यह बात मानी,
सतर्कता ही है, भारत की सही निगरानी।
देश स्वच्छ हो, समृद्ध हो, यह सपना हमारा,
विश्व में सर्वोपरि हो भारत हमारा।।
हम स्वदेशी हैं स्वदेशी इस्तेमाल करेंगे,
और अपने सामान को ग्लोबल करेंगे।
भारत हैं, हम ऐसे वैसे नहीं-2
फिर से विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त करेंगे।।

आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है...



दुर्गेश चंद्रा

सहायक प्रबंधक (विद्युत)

तृतीय पुरस्कार - कविता पाठ वी ए डबल्यू 2020

क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी

भ्रष्टाचार में लिप्त का देर सवेर जो अंत समय में हाल होता है जेल आदि भी जाना पड़ता है, के ऊपर भ्रष्टाचार से मुक्त आजाद की कटाक्ष भरी चंद पंक्तियाँ आप सब के सामने पेश कर रहा हूँ—

आज जमीन भी मेरी और आसमान भी मेरा है,
तेरे हिस्से में बस तेरा बनाया हुआ बंद कमरा है,
आज महफिल मेरी और सन्नाटा तेरा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

आज वक्त का हर झोंका,
हर पल बना साथी मेरा है,
तेरे लिए तो आने वाला समय,
काल का इशारा है!!
आज मैं मुस्कराता हूँ
और तुझ पर दुखों का डेरा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

आज सावन, बहार और बसंत से
मेरा रिश्ता गहरा है,
तुझसे तो पतझड़ की पत्तियों ने भी
किया किनारा है,
आज पूर्णिमा मेरी और अमावस तेरा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

आज सागर, नदी, झरनें पर बस हक मेरा है,
तेरे लिए पानी की हर बूंद भी शक का घेरा है,

आज उजाला मेरा और अंधियारा तेरा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

आज सूरज भी मेरा और ये चांद सितारे भी मेरे हैं,
तेरे सामने तो तेरे ही अनगिनत
नकाबपोश चेहरे हैं,
आज मैं निडर और तू भय का मारा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

आज जंगल, पर्वत, मरुस्थल सब मेरी जागीर है,
तू दया की भीख मांगता एक मामूली फकीर है,
आज मैं निश्चित और तू बेसहारा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

आज तेरी बनाई हर सृष्टि, हर भगवान भी मेरा है,
तेरी तो हर चाहत,
हर अधिकार पर लग गया पहरा है,
आज मैं अग्नि और तू राख का ढेरा है...
आज मैं आजाद और ये पिंजरा तेरा है!!

**अगर चाहते स्वस्थ समाज की रचना।
भ्रष्टाचार से हम सभी को होगा बचना।।**

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



जितेंद्र सिंह पाल

सहायक प्रबन्धक (सिविल)

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
पीआईडी पठानकोट

“तू भारत का गौरव है, तू जननी सेवारी है।
सच कोई मुझसे पूछे, तो तू ही तू भारत है।
”जन जन का यही है नारा,
सतर्क व समृद्ध हो देश हमारा”

प्रस्तावना: आज का ताकतवर भारत एक समृद्ध होती अर्थव्यवस्था के साथ वैश्विक पहल की गतिविधियों को संचालित करने की ओर अग्रसर देश है। बहुआयामी गतिविधियों में आई यह तीव्र वृद्धि अपने साथ-साथ भ्रष्टाचार के खतरे में भी वृद्धि करती है। भ्रष्टाचार देश की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक विकास की ज्ञात बाधाओं में सबसे बड़ी बाधा है।

किसी भी राष्ट्र को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान वहाँ की जनता का होता है। प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति सतर्क और प्रतिबद्ध होना चाहिए।

सतर्क व समृद्ध भारत का अर्थ : सतर्कता का अर्थ है विशेष रूप से कर्मियों और सामान्य रूप से संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिए स्वच्छ तथा त्वरित प्रशासनिक कार्यवाई सुनिश्चित करना। क्योंकि अक्सर यह देखा गया कि जो समाज या देश जागरूक और सतर्क नहीं होता तो उसे बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

सतर्क व समृद्ध भारत:- एक अभियान

भारत देश को जागरूक एवं समृद्ध बनाने के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग के द्वारा हर वर्ष अक्तूबर के अंतिम सप्ताह को “सतर्कता जागरूकता सप्ताह” के रूप में मनाया जाता है।

कैसे रहे सतर्क और इसका समृद्धि पर प्रभाव :-

i) स्वयं के स्तर पर:- जीवन के सभी क्षेत्र में ईमानदारी और पारदर्शी रीति से किया गया आपका

हर आचरण आपको सतर्क बनाता है तथा अपना सकारात्मक प्रभाव आपके कार्यक्षेत्र के हर क्षेत्र में छोड़ता है। जैसे: प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का एक नारा “न खाऊँगा, न खाने दूँगा” का ईमानदारी और पारदर्शी रीति से किया गया कार्यान्वयन देश को आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक रूप से समृद्ध कर रहा है। वहीं पूर्व के अखबारों में छपे घोटालों के नकारात्मक प्रभाव को भी धीरे धीरे मिटा रहा है।

ii) संस्थान/समाज/परिवार के स्तर पर:- किसी भी संस्थान/समाज/परिवार के कार्य का मुख्य उद्देश्य जनहित और समानता होना चाहिए। इसका अनुपालन संस्थान/समाज/परिवार को सतर्क एवं समृद्ध बनाता है इससे संस्थान/समाज/परिवार में एक अच्छे कार्य का वातावरण एवं कर्मठता का निर्माण होता है।

iii) देश के स्तर पर:- ज्ञान, विज्ञान, पर्यावरण, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, नागरिकों की सुरक्षा आदि के प्रति सतर्क होना देश की दशा और दिशा को ही परिवर्तित कर देता है।

उपसंहार:- भ्रष्टाचार एक ऐसी कुरीति है जो समाज और देश के विकास में बाधा पैदा करती है। यदि हमें ऐसी कुरीतियों से अपने समाज को मुक्त करना है तो हमें मिलजुल कर प्रयास करने की जरूरत है। सतर्कता तथा जागरूकता की शुरुआत हमें खुद से ही करनी होगी तभी जाकर हमारा देश “सतर्क भारत, समृद्ध भारत” बनेगा।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



रमेश कुमार
सहायक प्रबंधक (प्रशासन)

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
क्षेत्रीय कार्यालय-बनीखेत

इस पूरे संसार में विभिन्न जीव जन्तु, पक्षी पेड़ पौधे इत्यादि पाए जाते हैं। जिसमें मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जोकि सबसे समझदार समझा जाता है, और अपना जीवन यापन स्वयं करता है। दूसरे शब्दों में कहूँ तो एक ऐसा प्राणी जिसमें सोचने समझने की क्षमता होती है। वह अपना अच्छा-बुरा सोच सकता है तथा कई तरह के अधिकार उसे दिये गए हैं जिनका वह उपयोग कर सकता है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है जहाँ प्रत्येक नागरिक को सभी प्रकार की गतिविधियों से संबन्धित सूचनाएँ जानने का अधिकार है किन्तु वर्तमान समय में कुछ लोग अपने लालच के लिए आज भी भारत की जड़ों को खोखला कर रहे हैं। वह जहाँ खाते हैं, रहते हैं, जिस हवा में सांस लेते हैं उसी मातृभूमि को बदले में भ्रष्टाचार, आंतकवाद, काला धन इत्यादि बुराइयों को दे रहे हैं।

भारत में निरंतर फैल रही ये बुराइयाँ अपना शिकंजा कसती जा रही हैं। जिसका एक मात्र निवारण सतर्कता ही है। सतर्कता का अर्थ होता है विशेष रूप से कर्मियों और सामान्य रूप से संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिए स्वच्छ तथा त्वरित प्रशासनिक कारवाई सुनिश्चित करना क्योंकि सतर्कता का अभाव अपव्यय हानि और आर्थिक पतन का कारण बनता है। भारत में भ्रष्टाचार पर ध्यान रखने हेतु केंद्रीय सतर्कता आयोग का गठन किया गया जोकि केंद्रीय सरकार के अंतर्गत सभी सतर्कता गतिविधियों की निगरानी करता है। इसी के तहत हर वर्ष अक्टूबर के अंतिम सप्ताह को "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" के रूप में मनाते हैं, इस वर्ष 2020 में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत मुख्य विषय "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" है जिसका अर्थ है भारत जितना अपने अधिकारों के लिए सतर्क रहेगा, उतना ही समृद्ध होगा।

आज आवश्यकता है हमें इतिहास के कुछ पृष्ठों को पलटकर देखने की। इतिहास गवाह है जब-जब भारत में बुराई रूपी रावण आया है, तब-तब राम ने अवतार लेकर उसका सर्वनाश किया है। आज उसी रावण का रूप भ्रष्टाचार, घूसखोरी, कालाबाजारी, जमाखोरी इत्यादि ने ले लिया है। अतः इसका समाधान हर नागरिक द्वारा राम का अवतार लेकर उसका वध करने से होगा।

सर्वप्रथम आवश्यक है कि हर व्यक्ति अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाए, कुछ गलत होते देखकर उसका विरोध करे क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जहाँ जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन चलता है। अतः वास्तविक शक्ति तो हर एक नागरिक में विद्यमान है, साथ ही हमें अपना व्यावहारिक परिवर्तन करने की विशेष आवश्यकता है। क्योंकि अगर विचारों को शुद्ध कर दिया गया तो कोई भी ताकत नहीं जो हमें लालच का भागीदार बना सके क्योंकि कहा भी गया है व्यक्ति जैसा बोता है, वैसा ही काटता है।

हर व्यक्ति यह संकल्प लें कि वह न गलत करेगा न गलत होने देगा, अपने अधिकारों के प्रति सतर्क रहेगा तभी यह भारत कोहीनूर की भांति सर्वश्रेष्ठ पद पर चमकता रहेगा और तब हम शान से कह सकेंगे कि

**"जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का पग पग लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा"**

उपसंहार : भ्रष्टाचार एक ऐसी कुरीति है जो समाज और देश के विकास में बाधा है। यदि हमें ऐसी कुरीति से अपने समाज को मुक्त करना है तो हमें मिलजुल कर प्रयास करने की जरूरत है। सतर्कता तथा जागरूकता की शुरुआत हमें खुद से ही करनी होगी तभी जाकर हमारा देश "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" बनेगा।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



अश्वनी कुमार
सहायक (विशेष)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
क्षेत्रीय कार्यालय-बनीखेत

किसी भी राष्ट्र को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान उस राष्ट्र की जनता का होता है। भारतवर्ष विविधता से भरा हुआ एक विशाल राष्ट्र है। भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जिसमें अलग-अलग प्रान्तों की सांस्कृतिक रूपरेखा, रहन-सहन, भाषा व खान-पान दूसरे प्रांत की अपेक्षा सर्वथा अलग-अलग है किन्तु इतनी भिन्नता के बावजूद इस खूबसूरत देश के सभी प्रांत व निवासी परस्पर एक दूसरे से किसी न किसी रूप से जुड़े हुए हैं, इसलिए सांस्कृतिक रूप से और न ही भौगोलिक एवं भाषाई रूप से, कोई हमें अलग नहीं कर सकता। आज अगर हम किसी सुदूर पूर्वोत्तर अथवा दक्षिण भारत के किसी भी राज्य में जाएँ तो भले ही सांस्कृतिक भाषाई एवं भौगोलिक तौर पर हम उस राज्य में एक परदेसी समझे जायें, परंतु जैसे ही उस राज्य का कोई व्यक्ति हमसे टूटी-फूटी हिन्दी में संवाद करता है तो मन एकदम प्रफुल्लित हो जाता है और आपके चेहरे पर एक मुस्कान दौड़ जाती है।

इस समय भारत के साथ-साथ पूरा विश्व गम्भीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन विश्वव्यापी चुनौतियों के बीच जो भारत उभरकर आएगा वो यहाँ की जनता की मेहनत एवं निष्ठा का ही परिणाम होगा। अतः यह समय की मांग है कि प्रत्येक नागरिक अपने देश के प्रति ईमानदार, सतर्क एवं प्रतिबंध रहे। क्योंकि अक्सर देखा गया है कि जो समाज या देश जागरूक और सतर्क नहीं होता, उसे बहुत ही मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। हमारा इतिहास ऐसे अनेक संस्मरणों से भरा पड़ा है कि कैसे जागरूकता व सतर्कता के अभाव से बड़े-बड़े साम्राज्यों का पतन हो गया और वो इतिहास के पन्नों में दफन हो गए।

अतः हम सरकारी/अर्ध-सरकारी एवं निजी क्षेत्र में कार्यरत संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिए स्वच्छ एवं त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई सुनिश्चित करें। क्योंकि यह हमारा व्यवहार सुनिश्चित करेगा कि हम आने

वाली पीढ़ियों को कैसा भारत सौंप कर जा रहे हैं। अगर हमारे आचरण व व्यवहार में सतर्कता एवं जागरूकता होगी तो निश्चित तौर पर आने वाली पीढ़ियों को एक सशक्त एवं भ्रष्टाचार मुक्त भारत विरासत में मिलेगा। सतर्क एवं समृद्ध भारत के निर्माण के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग की भूमिका बेहद अहम है। भ्रष्टाचार से लड़ने व लोक प्रशासन में पारदर्शिता एवं ईमानदारी सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम 2003 के अंतर्गत देश में लागू किया गया है। इसके अतिरिक्त केंद्रीय सतर्कता आयोग अपनी विविध गतिविधियों के साथ भ्रष्टाचार मुक्त समाज एवं प्रशासन प्राप्त करने की नीति के प्रति देश के युवाओं को भी जागरूक करने का प्रयास करता है। इसी के अंतर्गत केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा हर वर्ष अक्तूबर के अंतिम सप्ताह को "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" के रूप में मनाया जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि सरदार वल्लभभाई पटेल जी का जन्म 31 अक्तूबर को हुआ था और आजादी के पश्चात भारत को एक सूत्र में पिरोने व एकत्रित करने में उनका अहम योगदान है।

अतः हम सभी का यह परम कर्तव्य है कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लें तथा समाज से भ्रष्टाचार रूपी रावण के संहार हेतु संकल्प लें।

अंत में, मैं पुनः यह दोहराना चाहता हूँ कि भ्रष्टाचार एक ऐसी कुरीति है जो समाज एवं देश के विकास में बाधा उत्पन्न करती है यदि हमें ऐसी कुरीति से समाज को मुक्त करना है तो हमें आपस में मिल-जुल कर सतत प्रयास करने की जरूरत है। हमें अपने कार्यक्षेत्र में, समाज, संस्थानों में और जीवन के हरेक क्षेत्र में सतर्क रहना होगा। कभी-कभी एक छोटी सी कोशिश एक जन आंदोलन का रूप ले लेती है। व्यक्ति, व्यक्ति से समाज व समाज से राष्ट्र, इस कड़ी द्वारा हम अपने देश को समृद्ध एवं सतर्क बना सकते हैं।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



गौरव बिंदल

वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
निम्नो बाजगो पावर स्टेशन

भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना होगा,
सतर्क और समृद्ध भारत बनाना होगा ।

PREAMBLE :

Why Vigilance : It is a tool which protects person, society and nation from threats / dangers coming from internal as well as external factors. If a society/nation is not vigilant then it has to suffer from lot of difficulties. This can be understood from the example of entry of British Rule in our country due to lack of vigilance and awareness of society/nation due to which we lost our independence. Later we got independent nation just because of vigilant and awareness of the society towards their fundamental rights. Vigilance and Awareness in the society is first prerequisite to get prosperity because it cannot be attained in the dependency. We can see it from the development made by the countries which are independent since very long.

Vigilant India - Prosperous India : A Movement

Central Vigilance Commission every year observes "Vigilance Awareness Week" in our Country during last week of October month on the occasion of birthday of "Sardar Vallabh Bhai Patel" a man who is known for high integrity. This year theme of aforesaid week is termed as "Vigilant India - Prosperous India". Every year this week is celebrated across the Country to spread awareness in the society towards their fundamental rights. During this

movement, it is attempted that a Country may know that how corruption is eating the values of a nation and how to eradicate it.

Vigilant India - Prosperous India : Objective of Movement

Objective of the movement is to spread the awareness in the society/nation about their fundamental rights, depth roots of corruption in the society, citizen charters. Such movements are celebrated throughout the nation with help of "Nukkad Natak", Electronic Media, Print Media, Pamphlets, various awareness based competitions, Radio etc. Such type of movements aware society as well as Government, Government servants, public administration about the rights as well as duties of all stakeholders on the various aspects towards building nation so that one can understand about the corruption blended in every corner of our society and how we can eradicate it. During this movement, a common man particularly youngsters could know how they can contribute towards the value building in finding out path of corruption movement in every phase of life and how to tackle from it. Due to such awareness programmes, a common man knows about the citizen charter and their rights and become vigilant for neither taking bribe nor giving bribe. Such type of movement creates an alertness in various stakeholders towards flow of working in the

organizations so that unwanted issues may be eliminated in advance. It not only creates smooth public administration but it also creates faith in the society towards their contribution in the building nation.

Conclusion : Take Away

From aforesaid it may be said that to be aware and vigilant is an important tool in our life to overcome various threats/dangers. If we got vigilant and aware then we can catch the leakage points of various resources in

our daily life and may create a good wealth, prosperity for us which in turn will prosper our Country. From such type of movements/awareness programmes we can be vigilant and aware towards our rights and responsibilities. If this is followed in true spirit by every citizen then it can be very much believed that India will be a corruption free country very soon and due to stopping of leakage of resources, we can prosper ourselves and then our Country. Hence by such movements, vigilant India will be prosperous India.

**“भारतीय है हम, सतर्क और समृद्ध रहेंगे हम,
सतर्कता और समृद्धता है हमारा अधिकार, जिसके बिना स्वतंत्रता भी बेकार।”**

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



पी एस रावत,

वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिकी)

तृतीय पुरस्कार -निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
तीस्ता लो डैम IV परियोजना

सतर्क भारत समृद्ध भारत,
रिश्ता है अनमोल ।
विश्व गुरु बन उभरे भारत,
पथ निष्ठा के खोल ॥

सोने की चिड़िया भारत,
स्वर्ण का है मोल ।
यशस्वी हो भारत,
जय भारत की बोल ॥1॥

काम करें पूरी निष्ठा से,
कर्मनिष्ठ बनकर ।
निपटाएं शीघ्रता से,
धर्मनिष्ठ बनकर ॥

उपयोगी जनधन करें,
परीक्षक बनकर ।

निःस्वार्थ करें निर्णय,
निरीक्षक बनकर ॥2॥

विकट स्थित है विश्व की,
फैला है संकट ।
कहीं फैली है बीमारी,
गन्दगी का संकट ॥

तृष्णा के भँवर से,
भ्रष्टाचार का संकट ।
आक्रामकता के निजाम से,
आतंक का संकट ॥3॥

स्वयं अपेक्षा त्यागकर,
विकसित करें सम्मान ।
स्वावलम्बी बने भारत,
बनें ऐसे संस्थान ॥

आधुनिक परिकल्पना कर,
उत्कीर्ण अपना ज्ञान ।
प्रतिभागी बन विकास का,
बढ़ा अपना मान ॥4॥

विश्व पटल पर चमके भारत,
लक्ष्य का ही मोल ।
हमारा भारत, महान भारत,
दृष्टि ऐसी खोल ।

सबका साथ सबका विकास,
नारा अब तो बोल ॥
सतर्क भारत, समृद्ध भारत,
जय भारत की बोल ॥5॥

सतर्क भारत, समृद्ध भारत

सौरभ नामदेव
प्रबंधक (विद्युत)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
निम्नो बाजगो पावर स्टेशन



जन- जन का है यह नारा,
सतर्क समृद्ध हो देश हमारा।

परिचय : किसी भी देश का सार्वभौमिक विकास उस देश के नागरिकों की सतर्कता व निष्ठा पर निर्भर करता है। भविष्य में जब भारत एक समृद्ध देश बनकर उभरेगा, इसमें इसके नागरिकों की मेहनत, जागरूकता व देशप्रेम का मूल आधार होगा।

सतर्क भारत - समृद्ध भारत : सतर्कता का आशय मुख्य रूप से कार्मिकों एवं सामान्य रूप से संस्थानों की दक्षता व प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए स्वच्छ व त्वरित प्रशासनिक कार्यवाही से है। सतर्कता का अभाव होते ही अपव्यय, हानि एवं आर्थिक क्षति होने लगती है। आज लालच, स्वार्थ व बढ़ती प्रतिस्पर्धा के चलते कतिपय लोग देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी भूलकर भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, घुसखोरी में संलिप्त हो गए हैं। अतः इनको जड़ से समाप्त करने के लिए सतर्कता रूपी अस्त्र का प्रयोग किया जाना आवश्यक हो गया है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहाँ सभी नागरिकों को सूचना का अधिकार प्राप्त है, जिसका उपयोग नागरिक भ्रष्टाचार व अन्य देश विरोधी गतिविधियों का पता लगाने में कर सकते हैं। जन सामान्य में सतर्कता के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा देश भर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है, जिसका इस बार का शीर्षक सतर्क भारत-समृद्ध भारत है, जिसका तात्पर्य है कि यदि जनता अपने अधिकारों के प्रति सतर्क होगी, तभी परिणामतः देश समृद्ध होगा।

समाज में फैली कतिपय बुराईयों को दूर करने में जनता का योगदान सर्वोपरी है, क्योंकि भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन है।

इस बात के उदाहरण मौजूद है जब एक सामान्य नागरिक ने अपने अधिकार के लिए कानून का उपयोग किया जिसके परिणामस्वरूप न सिर्फ उसे बल्कि अन्य नागरिकों को भी राहत प्राप्त हुई चाहे इसे नौकरी की चयन प्रक्रिया, बैंकों से लोन लेने की प्रक्रिया या किसी विभाग द्वारा ज्यादा धन वसूली के संबंध में देखा जाए। इसे इस रूप में वर्णित कर सकते हैं कि "एक कदम मैं चलूँ, एक कदम तू चल, भूल कर आपसी वैमनस्य, देश को सतर्क- समृद्ध करने को बढ़ाएं सामंजस्य।

उपसंहार : सतर्कता का मुख्य आशय अपने अधिकारों को जानने से है, क्योंकि बुराईयों का विरोध सिर्फ वह कर सकता है जो जागरूक है। इसके अतिरिक्त हमें अपने विचारों के प्रति भी जागरूक रहना है, क्योंकि आज हम जैसा सोचते हैं, भविष्य में वैसा ही आचरण अनायास हो जाता है। ऐसे देश जहाँ शिक्षा का उच्च स्तर है, नागरिकों को सरकारी तंत्र की सूचनाएँ उपलब्ध है, वहाँ भ्रष्टाचार-जमाखोरी जैसी घटनाएँ अन्य पिछड़े देशों के मुकाबले कम होती हैं और ऐसे देश इसलिए समृद्ध-विकसित देश हैं।

हमें अपने गौरवशाली अतीत की तरफ देख कर यह निर्णय लेना है कि भ्रष्टाचार, जमाखोरी, घुसखोरी जैसे विशाल रावण को स्वयं राम बनकर सतर्कता, जागरूकता रूपी बाण से मार गिराना है। अतः देश को सतर्क-समृद्ध बनाने का प्रण हर नागरिक को लेकर स्वयं से ही इसकी शुरुआत कर देश के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान सुनिश्चित करना है।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



प्रदीप कुमार

सहायक प्रोग्रामर

तृतीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
निम्नो बाजगो पावर स्टेशन

"Success is a journey, not a destination. It requires constant effort, vigilance and re-evaluation" – Mark Twain.

Corruption is a wide spread not only in India but across the globe. It is not very new to the modern society but is having footprints since the age of Mauryan Dynasty. As described by the great scholar "Kautilya" there are more than 40 types of corrupt ways. Corruption has many meanings & synonyms but in simplest meaning – it is to favour someone by adopting malpractices for bribery or gains by some other means.

Reasons :

- (1) Lack of Education : Illiteracy is the main cause of corruption, as people are not aware of the laws and systems, due to which they do not know the consequences of adopting malpractices, just to get their work done. As per a survey conducted by "India Today", Kerala is the least corrupt state in India. The only reason is highest literacy rate of the State.
- (2) Improper Governance : If a state is governed by proper rules, chances of corruption will be bleak in the system. Politicians with malicious images contest & win the elections. A Politician who is involved in malafied activities, can affect the system & country with the help of his power & status. Everyone should

be governed by the same rule to avoid corruption.

- (3) Fear : People tend to overlook the rules to get their job done by pleasing their seniors, as they think that there will not be any punishment to the seniors due to system failure & lack of transparency. There have been instances in the past when whistle-blowers have been punished by the management/system. There are a lot of other reasons like poverty, population explosion, low salary of Government Employees etc. which push people to adopt corruption leaving behind their moral values & ethics.

Preventive Measures :

In a civilized society, corruption can never be a choice.

- (1) Education : Education imparts awareness to self & society. An educated person understands the rules and regulations of the system and will abide by them.
- (2) Proper Governance : Constitution is there, rules are there, the requirement is to implement them. Anyone with malafied practices should be punished.
- (3) Transparency : System should be

transparent enough where all the processes are made clear to public at large. The Central Vigilance Commission introduced “PIDPI” (Public Interest Disclosure and Protection of Informers) in 2004. The complainant can write a complaint in sealed envelope without writing his name & address on it along with a second envelope sent directly to the Secretary, CVC with his details printed on it and the envelope for complaint with a title – “In the Public Interest Disclosure” as CVC do not accept unnamed complaints. If the system is fair & transparent, a complainant won't be afraid of raising a hand against malpractices of the system.

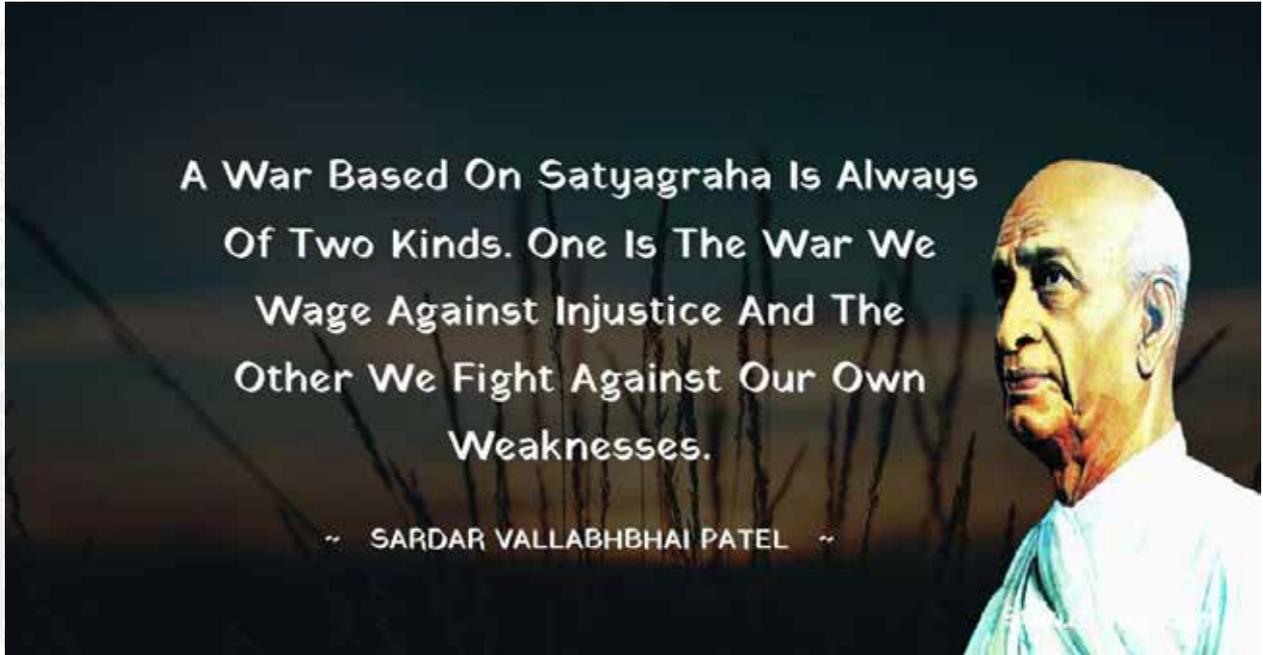
- (4) Full proof Laws : Education brings awareness but mighty & mischievous

persons find loopholes in the system thereby getting benefitted. Laws should be made full proof so that no-one can escape.

Conclusion :

Only vigilant country prospers. Vigilance helps to accomplish one's job attentively with honest & integrity. Being vigilant does not mean to not working one's job rather it makes a person aware of his roles & responsibilities which should be accomplished in a vigilant manner. As very well said by our respected General Manager Sir – “Vigilance should be preventive not punitive”. We have to abide by the laws, work in the most efficient way to accomplish the task at hand, only then our organization can prosper & flourish.

“सतर्क भारत तभी तो समृद्ध भारत”



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



पंकज कुमार

उप प्रबंधक (विद्युत)

प्रथम पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020

निम्नो बाजगो पावर स्टेशन

यूँ कहने को तो मेरा भारत महान है,
पर जब बात आये भ्रष्टाचार की तो
छू रहा आसमान है।
मुद्दा बड़ा है ये मुद्दा बड़ा है,
पर अफसोस मेरा देश अभी हिन्दू और
मुसलमान करने में अड़ा है।

किंवदंतियों अनाज गोदामों में सड़ा है,
ये देख मेरे देश का किसान रो पड़ा है।
फाँसी लगाना उसकी मर्जी नहीं है साहब, मजबूरी है,
ये दौर अभी और चलेगा क्योंकि सरकारों की किसानों
से अभी भी बहुत दूरी है।

दिन रात मेहनत करके वो कमाता है,
मुनाफखोर उससे दोगुणा जो ले जाता है।
बेटी की शादी में बैंक से कर्ज उठाता है,
और फिर वो कर्ज, अपनी जान से प्यारी
मिट्टी को बेच चुकाता है।

अब रहा ही क्या उसके पास जो रोके
उसे रस्सी को गले लगाने से,
वो भारत माँ भी रोती है इक सच्चे बेटे को खोने से।
ये (भ्रष्टाचार) चारों ओर फैला है,
कहना तो नहीं चाहता, पर हो रहा
भारत माँ का आँचल मैला है।

ये जो एक बीमारी है, पड़ी अब तक सब पे भारी,
किसान तो इससे अछूता रहा नहीं

ऐ सैनिक अब तेरी बारी है।
मशक्कत कर रहा है वो दो वक्त की रोटी जुटाने की,
और लुट गया उसका ही ईमान जिसने कसमें खाई थी
इसको जड़ से मिटाने की।

सैनिक खुद को गोली मारे किसान रस्सी को गले
लगाए, ये भ्रष्टाचार की ही तो निशानी है,
इससे पार पा लेना अभी तो नाना-नानी वाली परियों
की कहानी है।
देख मेरे देश की ये हालत, वो भारत माँ भी रोती है,
पोंछ अपने मैले आँचल को वो हमसे कुछ कहती है।

ये पेड़ ये पत्ते ये शाखाएं भी मुरझा जाएँ,
गर इनपे बैठने वाले पंछी भी
हिन्दू और मुसलमान हो जाएँ।
सूखे मेवे भी ये देख हैरान रह गए,
ना जाने नारियल कब हिन्दू और
खजूर मुसलमान हो गए।

मेरा यही अंदाज जमाने को खलता है,
कि मेरा चिराग इनकी हवा के खिलाफ क्यूँ जलता है।
मैं अमन पसंद हूँ मेरे देश से दंगे रहने दो,
इसे लाल हरे में ना बाँटो,
मेरी छत पे तिरंगा रहने दो,
मेरी छत पे तिरंगा रहने दो।

जय हिन्द जय भारत

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



संजीव कुमार मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)

द्वितीय पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020
निम्नो बाजगो पावर स्टेशन

भ्रष्टाचार से लड़ाई सतर्कता से ही कर पाएंगे मेरे भाई,
सतर्क भारत से ही भारत फिर से सोने की चिड़िया से
नवाजा जाएगा।

ऊपर की कमाई फाईल को देती गति जरूर है,
माना, दफ्तरों का यही दस्तूर है,
पर यह हमारे सिस्टम का कसूर है,
क्योंकि जहाँ धन है, वहीं जी हजूर है।

ऊपर की कमाई हमारे देश को खा जाएगी,
ऐसे तो तरक्की खुशहाली नहीं आएगी,
यदि करेंगे हम मेहनत-ईमानदारी से काम,
हमारे और देश के ही काम आएगी।

ऊपर की कमाई कब किसी को खुश रख पाई है,
कर्म ही पूजा है, इसमें ही सबकी भलाई है।
इस भ्रष्टाचार ने ही देश की कद्र पिटवाई है,
भ्रष्टाचार उन्मूलन की सतर्कता ही दवाई है।

ऊपर की कमाई कभी न करना मेरे भाई,
मेहनत की रोटी बहुत स्वादिष्ट होती है।
देश की इज्जत विशिष्ट होती है,
जो मेहनत का नहीं, वो निकृष्ट होती है।

ऊपर की कमाई तुमको बाई-बाई,
हम भारत के लिए कार्य करेंगे।
राष्ट्र निर्माण में योगदान करेंगे,
तभी बच्चे हमारे तिरंगे पर शान करेंगे,
अपने पूर्वजों का सम्मान करेंगे।

ऊपर की कमाई जिसने यह मलाई नहीं खाई,
वह क्या जाने इसका क्या स्वाद है,
यह तो भोजन के साथ सलाद है।
ऊपर की कमाई इसकी महिमा अपरम्पार है,
जो जान गया, उसका बेड़ा पार है,
अन्यथा उसका जीवन ही बेकार है।

ऊपर की कमाई मन को संतोष देता है,
काम करने का जोश देता है, वेतन के अलावा कोष
देता है।

ऊपर की कमाई गांधी जी का व्यापार होता है,
अधिकारियों का अधिकार होता है, अतत: जनता का
शिकार होता है।

ऊपर की कमाई बेकार है, यह नहीं हमारा संस्कार है,
ये तो अशिष्टाचार है, काम नहीं करना भी भ्रष्टाचार है।

ईमानदारी है राष्ट्र की शान। इससे होता है राष्ट्र महान।।
ईमानदारी बढ़ाती आत्म-विश्वास। जीवन में लाती हर्ष उल्लास।।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



राहुल

सहायक प्रबंधक (सिविल)

तृतीय पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020

निम्नो बाजगो पावर स्टेशन

सतर्कता का अर्थ होता है विशेष रूप से कर्मियों और सामान्य रूप से संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता के प्राप्ति के लिए स्वच्छ तथा त्वरित प्रशासनिक कार्यवाही सुनिश्चित करना क्योंकि सतर्कता का अभाव अप्रत्यक्ष, हानि और आर्थिक पतन का कारण बनता है। इस वर्ष 27 अक्टूबर 2020 से लेकर 02 नवम्बर 2020 में केन्द्रीय सतर्कता आयोग की मुख्य थीम सतर्क भारत, समृद्ध भारत को मनाया जा रहा है जिसका अर्थ जितना भारत अपने अधिकारियों के लिए सतर्क रहेगा उतना ही भारत समृद्ध रहेगा।

भारत है सतर्क संज्ञा विराग की, उज्ज्वल आत्म-उदय की,
भारत है समृद्ध आभा मनुष्य की सबसे बड़ी विजय की,
भारत है सतर्क भावना दाह जग-जीवन को हारने की,
भारत है समृद्ध कल्पना मनुज को राग-मुक्त करने की,
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है।

सतर्कता निवारण ही एक मात्र उपाय,
भारत को जो पूर्णतः समृद्ध बनाए,
एक पथ-पथ पर चलना सिखाए,
दूसरी ओर सर्वश्रेष्ठ बनाये,
है विज्ञान क्षेत्र में अपनी प्रगति, हुई बढ़ चढ़कर,
चौद देख आये हैं हम भी, नील गगन में चढ़कर।

विश्व दबा जाता मंदी के, विश्व बोझ के नीचे,
तब अपनी वाणिज्य जगत ने, नए ग्राफ हैं खींचे,
हर संकट से बचने को, सतर्कता बहुत जरूरी है,
कोरोना के काल में भी, यह विचार जरूरी है,
सतर्क रहें, सुरक्षित रहें यह बात हर क्षेत्र में पूरी है।

जंगल छोड़ भेड़िए, शहरों में आने लगे,
सुन्दर लिबासों में शरीफों को लुभाने लगे,
ख्वाब बेचने का व्यापार चल पड़ा,
भ्रष्टाचार के लालच में हर कोई मचल पड़ा,
इस भारत भूमि पर जन्म मिला,
तो इसका कर्ज उतारेंगे,
लाखों लोगों की आजादी, बर्बाद न होने देंगे,
भारत को फिर से गुलाम हम ना होने देंगे,
सतर्कता का पालन कर, भारत को समृद्ध होने देंगे।

कदम दर कदम रख जन-जन सदाचार निभायें
सतर्क विचारधारा को आधार, देश को परस्पर समृद्ध बनायें

भ्रष्टाचार की फैली महामारी है
सतर्क और जागरूक रहने की बारी है।

कब होगा देश भ्रष्टाचार से मुक्त
चलो सब मिलकर हो जाएँ एकजुट
रिश्वतखोरों में लिप्त दुनिया सारी है
दीन ईमान छोड़कर बैठे, दफ्तरों में जो रिश्वत है लेते
अमीरी के सामने फिर से गरीबी हारी है,
अब हमें सतर्क रहने की बारी है।

भ्रष्टाचारियों को जेल के अंदर पहुँचाएंगे
सबको हम कड़ी सजा दिलाएंगे
समृद्ध भारत बनाने के बारी अब हमारी है
सतर्क और समृद्ध रहने की बारी है।

अब तो ऐसे भारत का निर्माण होगा
भ्रष्टाचार का ना नामोनिशान होगा
परिवर्तित करनी यह व्यवस्था सारी है,
सतर्क और समृद्ध रहने की बारी है।

अपनी एकता अखंडता, संस्कृति,
रहन-सहन अलग-अलग भाषाएँ हैं
जो सही मायने में भारत के असली ताकत और पहचान दे
पुनः प्रतिस्थापन का देखें, समय आ गया है अब
भारत की गरिमा महिमा फिर से सब के सर चढ़ बोले।

भारत रंग नहीं आतंकवाद का
ना ही रंग है भ्रष्टाचार का
यह तो रंग है सतर्कता का
समृद्धि जिसका आधार है।

Vigilant India Prosperous India



श्रीजा वीएस

सहायक प्रबंधक (सिविल)

द्वितीय पुरस्कार -निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
तीस्ता लो डैम IV परियोजना

Our beautiful country, India, is well-known for its 'Unity in Diversity'. Ancient India was known as "Golden Bird" because it was wealthy, prosperous and had established socio-economic relations. Corruption is an age-old pan-India problem. Great Indian scholar Kautilya mentions the presence of forty types of corruptions in his contemporary society. It exists in Sultanate and Mugal emperors' time also. When British East India Company took control of India, the corruption reached its new heights. Now corruption has become the major problem in India as people averse to think without it.

Every country's success depends on its citizens success as the citizens of any country is prosperous and developed, the country also be. Vigilance is the quality of being careful or watching or guiding someone or something. Vigilant citizen is must in every country as vigilant citizens can involve the proper development of the country.

To say that we live in an independent country but when we look into the actual facts, then the reality is something else. Yes, this is true, but bitter when we look into the present time, everywhere there is presence of certain evil. Whether, it is from Delhi to Hathras or Khap panchayat of Haryana, on every day, baby girls to old-aged women who have been molested. On the one hand, alliances have been made by rulers or politicians with criminals or anti-social activities, as a result of the country plagued by explosions, riots and accidents and we say that we are living in a prosperous and independent country. Economic issues in any forms are well-neigh now-a-days without corrupt means or platforms. Corruption is mingled in our blood. Our former Prime Minister Rajiv Gandhi has gone on record that one rupee spent by Government for the welfare of the downtrodden, only 15 paise there of reaches among those people those are really meant it.

As ours is a democratic country, about Government of the people, by the people and for the people. Citizens of India have the right to ask questions about corrupt actions of the government. If politicians defects from their parties, wrong utilization of funds etc., those activities can be challenged by vigilant people as they have the awareness about corruption. They can also challenge the corrupt actions of their representatives at any platform. There is a cry to be vigilant in every sphere of life.

One of the reasons of corruption is people need more and more money to live a luxurious life. That thought forces them to earn more money in any way. Corruption exists in education system also. Now we prefer an excellent result rather than values from our children. That must be avoided. Another reason for corruption is reservation system persists in India. We need quality works from all sectors. We have sufficient quantity of people but lack of quality prevails in every sector. Qualified people are not selected for works because they are not reserved. We must become vigilant by asking questions. Government should be more transparent and digitalization and cashless transaction should be improved to avoid corruption in all ways. In that way we can make our country prosperous and fully developed.

We celebrate vigilance awareness week in the last week of October every year to spread the awareness of being vigilant and those who are illiterate to have awareness about the corruption and its corruptive measures. So we conclude that vigilant India is prosperous India. Our former president, the Missile Man of India, APJ Abdul Kalam said that "Dream is not that you see in sleep, but it is something that does not let you sleep".

**"Don't watch and don't wait,
Raise your hands now itself,
until it's too late".**

- JAI HIND -

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



बिष्णु कुमार सिंह

सहायक प्रबंधक (यांत्रिक)

तृतीय पुरस्कार –निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

तीस्ता लो डैम IV परियोजना

“सतर्कता से ही समृद्ध बनेगा भारत”

भारत को विश्व पटल पर एक सशक्त तथा समृद्ध रूप से स्थापित करने हेतु लोक प्रशासन से भ्रष्टाचार का समूल विनाश करना ही एकमात्र उपाय है। आज समग्र विश्व सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की ओर आँखें गड़ाए बैठा है। आज भारत एक आर्थिक महाशक्ति बनने की और अग्रसर होता हुआ दिखाई देता है। इसमें सबसे बड़ी बाधा भ्रष्टाचार ही दिखाई दे रहा है।

गांधी जी ने एक बार कहा था कि भ्रष्टाचार गरीबों के साथ अन्याय है। इस समय जबकि आर्थिक गतिविधियाँ देश को विकास के नए सोपान पर ले जाने को तत्पर हैं तब लोकप्रशासन के उच्चस्थ पदों पर बैठे लोगों में भ्रष्टाचार अन्य आय का साधन बनता जा रहा है गरीब और गरीब तथा अफसर, भ्रष्टाचारी नेता और समृद्ध होते जा रहे हैं। जन जागरूकता, जन सहभागिता तथा विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा जनमानस में स्थानीय स्तर पर होने वाले विकास के कार्यों के भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सकता है।

महामना सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्म दिवस 31 अक्टूबर के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाला “सतर्कता जागरूकता सप्ताह” सही मायने में उनके द्वारा पाँच सौ से अधिक देशी रियासतों को देश की आजादी के समय भारतीय गणतन्त्र में समाहित करना तभी सार्थक हो सकता है जब हम मानवीय मूल्यों के उच्च मानदंडों को स्थापित करते हैं विश्व पटल पर एक मजबूत पहचान बनाएँ। आज के समय भारत को समृद्ध बनने में सबसे बड़ी बाधा देश को खोखला करने वाला दीमक भ्रष्टाचार ही है जो देश के विकास की दर को खोखला करती है।

आज आर्थिक, सामाजिक तथा मानसिक रूप से समृद्ध भारत की जनता जनार्दन ही हमें नई ऊचाईयों की ओर ले जा सकती है। जागरूक नागरिक ही विकास कार्यों की सही समीक्षा कर सकता है तथा इसमें सबसे अधिक युवाओं की सहभागिता सुनिश्चित करना पड़ेगा क्योंकि आज का युवा ही कल देश का भविष्य बनाएँगे।

इस परिप्रेक्ष्य में यह कहना समीचीन ही होगा की:-

“अगर सतर्क रहेगा भारत तो समृद्ध बनेगा भारत”

किसी भी देश के नागरिक, लोक प्रशासन, राजनेता तथा कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के लोग जीवन में जितना सुचिता का पालन करते हैं यह उस देश विशेष की दशा तथा दिशा तय करता है।

सतर्क भारत से समृद्ध भारत बनने हेतु निवारक उपाय

जब उच्च पदस्थ लोग अपने जीवन में भ्रष्टाचार नहीं करेंगे तो यह समाज में आदर्श स्थापित करेंगे तथा ऐसे लोगों का महिमामंडन, सम्मान करने से किशोर अवस्था के बालक बालिकाएँ अपने जीवन को इसके अनुरूप ढालने का प्रयास करेंगे। यह प्रयास जड़ से भ्रष्टाचार को समाप्त करने में सहायक हो सकता है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा दिये गए निर्देशों का पालन करते हुए हम भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को देश को समृद्धशाली बनाने हेतु यह प्रण लेना होगा कि न हम भ्रष्टाचार करेंगे और न हम भ्रष्टाचार सहेंगे।

देश की विकास योजनाओं का सही क्रियान्वयन तथा देश में उपलब्ध संसाधनों का सम्पूर्ण दोहन हमें करने हेतु हमें भ्रष्टाचार पर पूर्ण प्रभावी अंकुश देश के नागरिक, लोक प्रशासन द्वारा ही लगाया जा सकता है। जिस देश के युवा अपने देश से भ्रष्टाचार को मिटाने हेतु कृतसंकल्पित हो जाएँ तो उस देश को समृद्ध बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

भारत आध्यात्मिक रूप से विश्व गुरु के रूप में पहले से ही स्थापित है इस शक्ति को भी मानसिक रूप से स्वस्थ युवाओं, जो मानसिक रूप से दृढ़ता के साथ देश को समृद्ध बनाने हेतु तत्पर हों, को आगे आना होगा तथा आजादी के समय के महानायक महात्मा गांधी, नेहरू, सरदार बल्लभभाई पटेल, सुभाष चन्द्र बोस के सपनों के भारत का निर्माण भारत को भ्रष्टाचार मुक्त करके ही किया जा सकता है। अंततः यह कथन ही इस विषय के उपसंहार को सही रूप से परिलक्षित करता हुआ प्रतीत होता है।

भ्रष्टाचार मिटाओ । देश को समृद्ध बनाओ ।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



जावेद अख्तर
उप प्रबंधक (वित्त)

प्रथम पुरस्कार -कविता वी ए डबल्यू 2020
टीएलडी III पावर स्टेशन

संकल्प

तर्क हो वितर्क हो, न जीतने की शर्त हो।
महानता बढ़ी रहे, समानता बनी रहे।
कर्म कोई दुष्ट हो न मन को कोई कष्ट हो,
ये देश भी बढ़ा रहे और मान भी चढ़ा रहे।
कोई तो जतन करो, ये भ्रष्ट-ताप कम करो,
धर्म और अधर्म कृत्य में तो कोई फर्क हो।
संकल्प लो सतर्क हो, संकल्प लो सतर्क हो,
नेक बनो एक हो, तो देश भी समृद्ध हो।।

भक्ति भाव हो सबल और मेधा शक्ति हो प्रबल,
प्रशस्त एक राह हो और जीतने की चाह हो।
कर्म से सुपथ्य हो फिर मन वचन के तथ्य हो।
सद विचार आग हो.., न कर्ण प्रिय राग हो।
संपत्ति न जुटे सही, ईमान न झुके कहीं।
द्वार शूल न चढ़े, हर घर मे एक स्वर्ग हो।
संकल्प लो सतर्क हो, संकल्प लो सतर्क हो,
नेक बनो एक हो, तो देश भी समृद्ध हो।।

जतन करो जो शुद्ध हो, विचार कर प्रबुद्ध हो,
जन मन की इस बुराई से, अब एक साथ युद्ध हो,
न फिर कोई प्रभाव हो, न कोई भी अभाव हो,
कर्तव्य बोध हो सभी को, सौम्य हर स्वभाव हो।
नवीनता गढ़ो नई, आयाम नित चढ़ो कई।
बढ़ना है खुद भी औरों के, बढ़ने की कोई शर्त हो..।
संकल्प लो सतर्क हो, संकल्प लो सतर्क हो,
नेक बनो एक हो, तो देश भी समृद्ध हो।।

तर्क हो कि चाइना भी दूर ही रहे सदा,
तर्क हो कि पाक भी नापाक न बने कभी,
तर्क हो कि देश तुष्टि-शांति से सजे सदा,
तर्क हो कि दुश्मनों की चाल न चले कभी।
हष्ट पुष्ट जग रहे, कोरोना से सजग रहे,
बातें ये जावेद की जो मान तो हर्ष हो।
संकल्प लो सतर्क हो, संकल्प लो सतर्क हो,
नेक बनो एक हो, तो देश भी समृद्ध हो।।



खुरी तब मिलेगी जब
आप जो सोचते हैं, जो
कहते हैं और जो करते हैं,
सामंजस्य में हों

महात्मा गांधी

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



चंदा कौशिक

धर्मपत्नी बीजेन्द्र कौशिक, प्रबंधक (भू-विज्ञान)

प्रथम पुरस्कार -कविता वी ए डबल्यू 2020

पार्वती II परियोजना

सोचती हूँ आवाज दूँ आगाज करूँ
शंखनाद से शुरुआत करूँ,
सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर,
कुछ पंक्तियाँ व्यक्त करूँ।

सरदार पटेल के जन्म उपलक्ष्य में,
यह सप्ताह मनाते हैं,
सतर्कता तथा जागरूकता के उद्देश्य से,
यह अभियान चलाते हैं।

एकजुट भारत था उनका लक्ष्य
सतर्क जागरूक देश बनाना था,
प्रगति देश की करनी थी,
सजग समाज बनाना था,

सपना था उनका भ्रष्टाचार उन्मूलन,
जीवन रक्षा, देश सुरक्षा, अमन शांति लाने थे,
प्रगति देश की करनी थी,
सजग समाज बनाने थे।

मुख्य उद्देश्य है इस अभियान का,
निरक्षर हो या साक्षर,
जागरूक सबको करना है,
भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु जागरूकता बढ़ाना है।

डॉक्टर हो या इंजीनियर,
राजनेता हो या मान्यवर,
कार्यालय हो या काम काज,
नहीं करना हमें जालसाज।

मौजूदा प्रमुख समस्या देखो,
कोरोना की जागरूकता नहीं,
तो देखो कैसे बढ़ रहे,
पूरा विश्व धराशाई, जीवन खत्म हो रहे।
तो जागरूक अब करना है
संकुचित विचारों को भगाना है

रोकना है अपव्यय, हानि और पतन,
सजग, सतर्क और उन्नत हो,
अपना यह प्यारा वतन।

हां, सफल हो रहा इस अभियान का, मौजूदा उदाहरण।
शौचालय प्रयोग हो या हो नोटबंदी प्रकरण।
हम रोकेंगे, हम जागेंगे,
नया भारत बनाएंगे।
भ्रष्टाचार और समाज की बुराई को,
जड़ से उखाड़ फेकेंगे।

निर्मल अनुराग स्नेहिल भाव हो,
लक्ष्य पर विजय पाने का विश्वास हो,
स्वप्न कठिन हो प्रण अटल हो,
बाधाओं को खंडित करने की आतुरता हो।

आइए मिलकर लें शपथ,
पालन करेंगे सभी कानूनों का।
लेंगे न देंगे रिश्तत कोई,
ना जाएंगे कभी उस कुपथ।

ईमानदार बनाऊंगी परिवारों को,
पारदर्शी बनाऊंगी व्यवहारों को।
गर, हम बदलेंगे तो परिवार बदलेगा,
परिवार बदलेगा तो समाज बदलेगा।
समाज बदलेगा तो देश बदलेगा।
यदि देश बदलेगा तो विश्व बदलेगा।

जय हिंद जय भारत

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



विनोद राणा

धर्मपत्नी हरबंस राणा, वरि. प्रबंधक (यांत्रिक)

द्वितीय पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020
पार्वती ॥ परियोजना

महिला हूं इसलिए महिला का गुणगान करूंगी,
सतर्क और समृद्ध समाज में महिला का व्याख्यान
करूंगी।

महिला का शिक्षित होना है बहुत ज़रूरी,
बिना शिक्षा जागरूकता ही अधुरी।
जागरूक महिला स्वावलंबी और संपूर्ण होगी,
शिक्षा एवं संस्कारों से परिपूर्ण होगी।
महिला कम है भ्रष्टाचारी,
व्यापारी हो या फिर हो कर्मचारी।

ट्रैफिक पुलिस में भी रिश्वत का अभाव दिखा,
जब से हर चौक पर महिला कॉस्टेबल का प्रभाव दिखा।
पेरू और मेक्सिको जैसे देशों को ऐसा ख्याल आया था,
उसी तर्ज पर भारत को भी यह अंदाज आया था।
जिस विभाग में महिलाओं की होगी ज्यादा भागीदारी।
बिना रिश्वत से सब काम करेगी अधिक, प्रतिशतता में
देखी जाएगी ईमानदारी।

गांव-गांव में अब पंच प्रधान और
सूबे-सूबे में है पटवारी,
शिद्वत से काम कर रही दिखा रही है अपनी समझदारी।

गाड़ी मोटर की बात नहीं

अब वो लड़ाकू विमान उड़ा रही है,

कंधे से कंधा मिला कर सीमा पर भी जा रही है।

जिस शहर में मैं रह रही हूं उसको कैसे कर दूं अनदेखा,

यहां भी मैंने कर्मठ महिला अधिकारी की देखी है

थोड़ी सी जीवन रेखा।

यहां प्रशासनिक विभाग में भी डॉक्टर रिचा शर्मा दिखा

रही है अपना दमखम,

सर्वोत्तम अधिकारी का पुरस्कार मिला, कहीं नहीं है

पुरुषों से कम।

जागरूक महिला समृद्ध भारत का निर्माण कर सकती है,

रूढ़िवादी समाज को बदलकर

नव निर्माण कर सकती है।

स्वच्छता एवं नशा मुक्ति

जैसे आंदोलनों से महिला जुड़ी हुई,

“बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” और

अपने अधिकारों के लिए अड़ी हुई है।

भारत को समृद्ध बनाने में महिलाओं का

पूरा सहयोग रहा,

भले ही पुरुष प्रधान समाज में

महिलाओं का अभाव हुआ।

महिला गृहणी हो या हो व्यवसायी

सतर्क रहने में करें कोताही,

बेवजह ना कोई उनका लाभ उटाएं

गंदी निगाहें न डाल न पाएं।

विडंबना यह है हमारी कुछ निम्न वर्ग के परिवारों में

आज भी महिला की दंडनीय दशा है,

जहां पुरुष सत्ता की मानसिकता है

और इसका मुख्य कारण नशा है।

छोटी उम्र में शादी कर के बच्चे जनने की

पीड़ा को सहती है,

पुरुषों के अत्याचारों को सह कर भी चुप रह जाती है।

खुशी होगी मुझको तब जब यह महिलाएं भी समृद्ध

भारत का हिस्सा कहलाएंगी।

खुद को सुरक्षित महसूस करेंगी और

अपने मन की बात कह पाएंगी।

सर्तक एवं साक्षर बेटी को बनाएं

आत्म रक्षा के गुर उसे सिखाएं।

जवां बेटी अत्मनिर्भर बन पाएंगी

ऐसे भेड़ियों से तभी बच पाएंगी।

जब नशा रेप, बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार मिट जाएगा

तभी देश स्वच्छ, साक्षर, सतर्क एवं समृद्ध बन जाएगा।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



राहुल श्रीवास्तव
प्रबंधक (पर्यावरण)

प्रथम पुरस्कार –निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
पार्वती III पावर स्टेशन

1. **प्रस्तावना:**—इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत विषय सतर्क भारत समृद्ध भारत रखा गया है। किसी भी व्यक्ति, स्थान या राज्य का विकास समृद्धता उसकी सतर्कता पर निर्भर करता है। यदि जीवन में हम स्वयं सतर्क नहीं रहेंगे तो स्वयं का विकास नहीं कर सकते हैं। इसी तरह यदि किसी देश के नागरिक सतर्क नहीं रहेंगे तो उस देश/राज्य का विकास संभव नहीं है। सतर्कता नहीं होगी तो सीमाएं सुरक्षित नहीं होंगी। सतर्कता नहीं होगी तो स्वस्थ नहीं होगा। इस वर्तमान परिदृश्य में जैसा हम सभी जानते हैं कि कोविड-19 महामारी से बचाव हमारी सतर्कता ही है। अतः वर्तमान परिपेक्ष में सतर्कता ही समृद्धि का मूल है।

2. **सतर्क भारत, समृद्ध भारत:**— केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा हर वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर को हुआ था। इनको लौह पुरुष के नाम से भी जानते हैं। भारत को सतर्क एवं समृद्ध बनाने में सरदार पटेल का बड़ा योगदान रहा है। अतः अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में हर वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो द्वारा 03 दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के साथ ही मनाया जाएगा। इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सतर्कता एवं समृद्धता के सम्बन्ध को बताते हुए यह कहा कि भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगाने से यह एवं वंशवाद परंपरा बनती जा रही है, जिससे देश, समाज व हर व्यक्ति को खतरा है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को सतर्क रहकर अपने स्वयं के स्तर पर प्रयास करके सतर्क रहते हुए भारत को समृद्ध बनाना है।

3. **सतर्क भारत समृद्ध भारत का उद्देश्य:**— किसी संस्था, समाज एवं राज्य की समृद्धता का आधार उसकी सतर्कता ही है। यदि किसी संस्था में कार्य करने वाले कर्मचारी सतर्क रहते हुए अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में संस्था के हितों का ध्यान नहीं रखेंगे तो संस्था समृद्ध नहीं हो सकती है। अतः सतर्क भारत, समृद्ध भारत का उद्देश्य निम्न से व्यक्त किया जा सकता है।

- भ्रष्टाचार की रोकथाम।
- भ्रष्टाचार का उन्मूलन।
- लोक प्रशासन में पारदर्शिता।
- नागरिकों के हितों का ध्यान।
- प्रशासनिक कार्य प्रणाली में सुधार।
- ईमानदार व्यवस्था और स्थितियों का निर्माण।

4. **सतर्क भारत, समृद्ध भारत की आवश्यकता:**— विगत कई दशकों में यह पाया गया है कि देश में भ्रष्टाचार



अपने चरम पर रहा है तथा इससे देश को काफी आर्थिक हानि हुई है। उदाहरण के तौर पर 2जी घोटाला, कोयला घोटाला आदि इस घोटालों से देश को करोड़ों-अरबों का नुकसान हुआ है। यदि समय रहते हुए सतर्कता बरतते हुए इन पर शुरू में ही ध्यान दिया जाता तो परिस्थितियाँ कुछ और होती तथा देश को आर्थिक हानि से बचाया जा सकता था। यहाँ पर वर्तमान में एक और उदाहरण द्वारा मैं यह बताना चाहूँगा की सतर्कता की आवश्यकता सिर्फ भ्रष्टाचार स्तर पर ही नहीं, अपितु हर स्तर पर चाहिए। जैसे भारत-चीन सीमा पर यदि हमारे प्रहरी सतर्क न होते तो हम सीमा को चीन से समय पर सुरक्षित नहीं कर पाते और सामाजिक दृष्टि से देश को बड़ा नुकसान उठाना पड़ता। इसलिए सतर्कता की आवश्यकता ही समृद्धि की राह के कांटों को अभिभूत समय पर पहचानकर हटा सकती है।

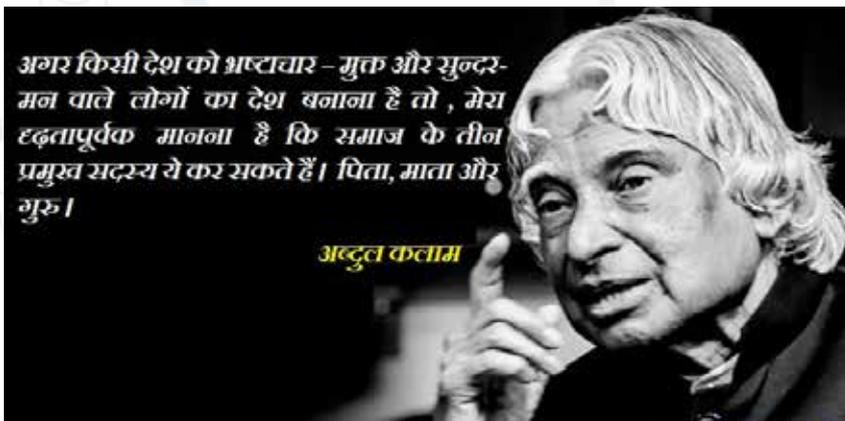
5. सतर्क भारत, समृद्ध भारत का क्रियान्वयन:- अभी तक हमने सतर्कता की आवश्यकता, उद्देश्य एवं उपयोगिता के बारे में ही जाना है। अब प्रश्न उठता है कि इसका क्रियान्वयन कैसे किया जाए? जिससे इसका संपूर्ण लाभ सभी को मिल सके। इसके लिए अति आवश्यक है कि इसका प्रसार एवं प्रयोग समाज के सबसे निचले स्तर से करते हुए ऊपर की ओर बढ़ना चाहिए। अतः इसको प्रभावशाली एवं बहु-उपयोगी बनाने के लिए निम्न प्रकार से कार्य करने की आवश्यकता है।

- जनमानस की भाषा में प्रचार-प्रसार (रेडियो, टीवी)।
- जनमानस से इसकी शुरुआत करना।
- उपयोग एवं लाभ का विवरण प्रदान करना।
- पूर्व में घटित हानियों का डाटा तैयार करना।

- वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रशासन को सुदृढ़ बनाना।
- पूर्व में घटित हानियों का डाटा तैयार करना।
- आईटी एवं अन्य तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देना।
- पारदर्शिता को अधिक महत्व देना।
- लोक कल्याण योजनाओं की जानकारी को सुलभ व सरल बनाना।
- प्रशासन एवं राजनीति का पृथक्करण।
- सबका सहयोग सबकी सतर्कता, सबका विकास को प्रेरणा स्रोत बनाना।

6. सतर्क भारत, समृद्ध भारत की ओर बढ़ता देश:- जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वर्तमान भारत पहले से अधिक सतर्क व समृद्ध है। परिस्थितियाँ पहले जैसी नहीं रही है और कुछ ही अल्प समय में भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है, जिसका आधार हमारी सतर्कता पर निर्भर है। भारत में बड़ी बड़ी परियोजनाओं को आगे बढ़ाया गया, जिसमें किसी भी तरह का कोई भ्रष्टाचार नहीं पाया गया है। इससे यह जाहिर है कि किसी भी राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए सतर्कता मूल है तथा यही आधार स्तम्भ भी है।

7. उपसंहार:- यह बहुत ही आवश्यक है कि किसी भी विकास का आधार ईमानदारी होनी चाहिए जिससे विकास प्रभावी और कल्याणकारी हो। यदि किसी भी विकास को सतर्कता के साथ क्रियान्वित नहीं किया जाएगा तो उस विकास कार्य का अस्तित्व ज्यादा समय तक नहीं रह सकता है। अतः हम सतर्क भारत समृद्ध भारत की कल्पना तभी कर सकते हैं जब हम सतर्क रहें।



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



विशाल कुमार त्यागी
प्रबंधक (सिविल)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
पार्वती II परियोजना

सतर्क भारत, समृद्ध भारत
सतर्क हो जाओ भारतीयों अब
ऐसा नहीं हो पाएगा।
अभी समृद्ध नहीं हुआ तो
फिर नहीं हो पायेगा।

भरा नहीं जो भावों से
बहती जिसमें रसधार नहीं,
हृदय नहीं वो पत्थर है
जिसमें स्वदेश को प्यार नहीं।

भारत प्राचीन काल से ही एक समृद्ध देश रहा है। हमारी समृद्धता हमारे रहन सहन, हमारे विचार, हमारी दान करने की आदत, क्षमा करने की आदत इत्यादि थी। भारत में खनिजों की भी भरपूर मात्रा उपलब्ध है। भारत में दान करने की आदत से भारत के मंदिरों तथा पूजा स्थल भरपूर रूप से संपन्न थे। हमारी इसी समृद्धता ने कुछ लुटेरों को भारत की तरफ आकर्षित किया तथा ये लुटेरे समय-समय पर भारतीयों की संपदा को लूटने में कामयाब रहे। भारतीयों की विचारों की समृद्धता ने इस लूट को नजरांदाज कर दिया, क्योंकि हम ऐसा मानते हैं कि माया आती जाती है तथा धन तो हाथों का मैल है जिसे फिर से अर्जित कर लिया जाएगा। भारतीयों को तब तक किसी बात पर विरोध करना उचित नहीं लगता जब तक वो धर्म से अलग है लेकिन जैसे ही भारतीय की धर्म पर आँच आ जाती है वह उसके विरोध में खड़ा हो जाता है। अंग्रेजों ने भी वर्षों तक भारतीयों को लूटा तथा भारत की खनिज संपदा, धन इत्यादि को वर्षों तक लूटा, लेकिन विरोध जब हुआ जब धर्म पर बात आयी, चाहे वो मांस से बने कारतूस थे या धर्म विरोधी बातें।

भारतीयों के लिए ये चुप्पी शायद भारी पड़ गई, क्योंकि अगर आप किसी भी गलत कार्य का विरोध नहीं करते हैं तो इसका मतलब है कि आप उस गलत कार्य को स्वीकार कर रहे हैं। भारतीयों की चुप्पी ने वर्षों तक इस देश को लूटने दिया। एकजुटता में भी कमी की वजह ने इस लूट को प्रोत्साहन दिया। क्योंकि हर आदमी अपने स्वयं के हितों को ध्यान में रखकर कार्य कर रहा था। शायद देशहित कुछ के दिलों में ही जगा हुआ था।

गांधी जी ने देश को सतर्क किया तथा एक जागृति देश के जन जन में फैला दी। इसी सतर्कता एवं जागृति के कारण देश का जन मानस अंग्रेजों के विरोध में खड़ा हुआ और देश से विदेशी ताकतों को भगा दिया। गांधी जी की इस सतर्कता ने देश की बची हुई समृद्धि को सुरक्षित करने का कार्य किया।

देश में आज फिर उसी तरह के हालात उत्पन्न हो रहे हैं। विदेशी शक्तिओं के साथ-साथ कुछ भारतीय भी देश को लूटने में लगे हुए हैं और इसकी पूर्ण रूप से सिर्फ एक ही वजह है वह है भारतीयों की चुप्पी तथा चुप्पी का एक कारण सतर्कता की कमी। किसी भी देश को समृद्ध होने में कितना समय लगता है। जापान की तरफ अगर देखें तो शायद अपनी सतर्कता एवं देश के प्रति निष्ठा से उनसे अच्छा और कोई उदाहरण नहीं है। हमारे देश को आज आजाद हुए 70 वर्ष से भी ज्यादा हो चुके हैं, लेकिन अभी तक पूर्ण रूपेण समृद्ध नहीं हो पाया है।

आज हम यह शपथ लेते हैं कि देश को समृद्ध बनाने में हम अपनी पूरी सतर्कता का ध्यान रखेंगे। हर छोटी बड़ी सतर्कता हमारे देश को समृद्ध बनाने में सहायक होगी। शुरुआत मुझे अपने आप से करनी है क्योंकि अगर कोई कार्य की शुरुआत में स्वयं नहीं कर सकता या कोई बात में स्वयं अमल नहीं कर सकता तो दूसरे उस बात के लिए कैसे मानेंगे? भारत की समृद्धता के लिए मैं अपने हर कर्म को ईमानदारी के साथ निर्वहन करने के लिए तैयार हूँ, तथा हर छोटी बड़ी गलतियों को भी उजागर करने के लिए तैयार हूँ। चाहे वह गलतियाँ मेरे द्वारा की गई है या किसी और सहयोगी के साथ के द्वारा।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



बिजेन्द्र कौशिक

प्रबंधक (भू-विज्ञान)

तृतीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
पार्वती II परियोजना

"Eternal vigilance is the price of eternal development"

- Gordon B Hinckley

किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के सर्वांगीण, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और कौशल विकास की लक्ष्य - प्राप्ति के लिए सतर्कता एक उपकरण के समान है। पारदर्शिता, निष्पक्षता, प्रतिस्पर्धात्मकता और 'जवाबदेही' सतर्कता के वे सिद्धांत हैं जो किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त और सुदृढ़ बनाते हैं। भारत जैसे प्रगतिशील और तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सतर्कता के सिद्धांतों का अनुपालन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

"Vigilance is not only the price of liberty, but success of any sort"

- Henry Ward Beecher.

सतर्कता मूल रूप से एक प्रबंधकीय कार्य है जो किसी भी प्रशासन की सत्यनिष्ठा, विश्वसनीयता, दक्षता तथा विकासशीलता को बनाए रखने में सहायक होता है सतर्कता के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं:-

- पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखना।
- संसाधनों का अपव्यय और क्षति को रोकना।
- जवाबदेही सुनिश्चित करना।
- कार्य-तंत्र और कार्य-विधि में सुधार, भ्रष्टाचार-मुक्त कार्य निष्पादन और स्वस्थ विकास को भी प्रोत्साहित करना।
- भ्रष्टाचारियों को अनुशासित/दंडित करना और प्रदर्शनों (performers) को संरक्षित करना।

यद्यपि भ्रष्टाचार एक सर्वकालिक समस्या है, इस विषय पर गहन अध्ययन एवं शोध वर्ष 1995 के बाद ही आरंभ हुए जब विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थानों (जैसे विश्व बैंक European Commission, United Nations, EBRD) ने भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभाव को पहचाना। विभिन्न संस्थानों और

शोधकर्ताओं ने अर्थव्यवस्था के वृहत और सूक्ष्म आर्थिक संकेतकों पर भ्रष्टाचार के प्रभावों का अध्ययन और विश्लेषण किया। इन अध्ययनों में आर्थिक संकेतकों जैसे GDP, निजी एवं सार्वजनिक निवेशों, रोजगार, विदेशी निवेश इत्यादि पर भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभाव का विश्लेषण किया गया, जो यह दर्शाते हैं कि भ्रष्टाचार किस प्रकार सार्वजनिक और निजी निवेशों को बाधित करता है, GDP की वृद्धि-दर को कम करता है, संसाधनों के संतुलित वितरण को प्रभावित करता है, धन के असमान वितरण को बढ़ाता है और तकनीकी तथा कौशल विकास को क्षति पहुंचाता है। विश्व बैंक द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार भ्रष्टाचार के उच्च स्तर वाले देशों में औसत आय भ्रष्टाचार के निम्न स्तर वाले देशों की तुलना में एक-तिहाई है। साथ ही भ्रष्टाचार के उच्च स्तर वाले देशों में शिशु मृत्यु दर करीब तीन गुनी अधिक और साक्षरता दर 25% कम है। विश्व बैंक के अनुसार कोई भी देश भ्रष्टाचार को पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सकता, किंतु विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में भ्रष्टाचार बहुत अधिक है।

भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की राह में सबसे प्रमुख बाधाओं में से एक है। BWF-2020 में जारी किए गए 180 देशों के Corruption Perception Index की सूची में भारत का स्थान 80 वां है जो यह दर्शाता है कि हमें भ्रष्टाचार उन्मूलन की दिशा में अभी भी काफी प्रयास करने हैं, किंतु भ्रष्टाचार उन्मूलन और सतर्कता के कोई भी उपाय और प्रयास तब तक सफल नहीं होंगे जब तक कि प्रत्येक नागरिक सतर्कता के प्रति जागरूक न हो और सतर्कता कार्यकारी की भूमिका को स्वीकार न करें। सतर्कता किसी भी प्रशासन के वांछित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक सोपान होता है। भारत के सतर्क-नागरिक ही भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बना कर उसे विकासशील देशों से विकसित देश के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



औरोबिंदो परमानिक

वरि. प्रबंधक (विद्युत)

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

रंगीत पावर स्टेशन

There is a popular slogan on the above subject, "Vigilant is very expensive gift don't expect from cheap people"

Vigilance is one of the important function of good governance to plug the loopholes in the system. Generally vigilance means it is watchfulness during awareness and precaution. Keeping a careful watch to avoid possible danger or difficulties. Its wider aspect is taking prompt action to promote fair practice, ensure integrity honestly in official transaction /behavior. The vigilance helping hands are as below or to say helping parameters of vigilant people.

- 1) Disciplinary the wrong doers.
- 2) Increasing transparency and fairness
- 3) Giving safe guard to honest performers in every field
- 4) Reforming system/simplification of producers for corruption free delivery
- 5) Ascertaining account liability
- 6) Reducing wastage /leakages
- 7) Promoting culture of honesty and integrity in every vital field such as, education, health, defense, birth control, transport sector etc
- 8) Creation of good governance

The theme vigilant India, prosperous India puts the impetus on the thought that development and progress of the nation further place than individuals, society, state and the entire country area vigilant in safe guarding indignity as a core value. However, a focused attention is required in each unit where

- a) Top official have high discretions.
- b) Rules and producers are very complex.

- c) Account liability is low
- d) Delay in decision making
- e) Simplification in tax structure
- f) Discrimination between PSUS and private sector as far as rules regulation and audit and guidelines are concerned.
- g) Possession of assets, cares of misc. appropriation of assets, wealth kept by top officers (govt. bureaucrats, CEO's etc.)

Sources of preventive vigilance

- 1) Complaints (online & offline)
- 2) Preventive checks, CTE type inspection
- 3) Media should play a unbiased role like in developed countries, USA, European countries viz BBC news
- 4) Audit report, C&AG report, technical reports adjudication orders.
- 5) Intelligence
- 6) Reports of parliamentary committees in vital fields.
- 7) Study of systems/procedure, disciplinary cases

Preventive vigilance measures. Creation of awareness among all stake holders and identify the bottlenecks.

- a) Identify areas involving discretion the exercise of which is not governed by guide lines
- b) Taking steps to prevent commission of improver practice/ misconduct
- c) Regular and routine inspection, surprise inspection, review, audits.

There is a wise say “prevention is better than cure” the purpose of preventive vigilance is to bring about a higher order of morality/rationality in public service and reduce corruption. Corruption does not only mean money laundering in each fields let us say crime, education, post, power, election, health every aspect and impact of human life ever environment and surroundings. The deep rated malaise of corruption is perhaps the biggest challenge that every individual face in day to day life.

The goals of growth and development that been set, can only be achievement through fair and efficacious governance.

One of the major actions would be reduction of human intervention by bringing in technological advancement (IT fields) to reduce corruption. Measures for eradication of corruption are as follows

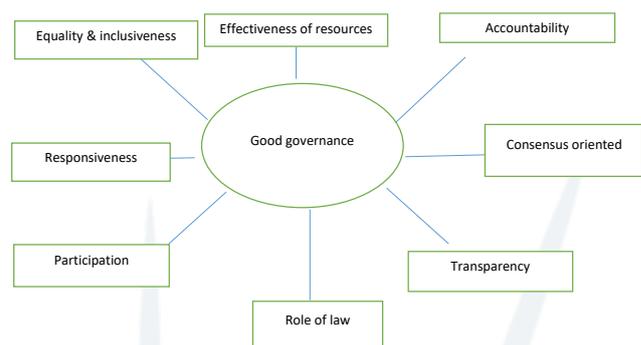
There is a popular slogan on anti-corruption.

“No legacy is so rich as honestly”

- 1) Purchase of land and property through online facility so that transparency will maintain.
- 2) Online tendering system with protection of bidders especially large tender in railway, airline building of bridges, road etc.
- 3) Cashless transaction for big deals (02 lakh and above)
- 4) Campaign for election which is a major part by corruption, many steps to be taken boldly by election commission such as campaign shall only 3 to 4 days on filed. Rest through election media. the public money which is missed for campaign directly/ individually shall be reduced.
- 5) Multiple bank transaction: Politicians, industrialist attempting to convert black money into white by making multiple transaction at different banks branches. People were also getting rid of large amounts of banned currency by setting people in group is to exchange their money at bank.
- 6) Implementation of low currency like in developed countries (viz fifty and hundred

rupee note) so that during bribing the bribe giver and taker face difficulties.

- 7) Improvement in judiciary system in a time bound manner by deputing more judges in local court, high court and supreme court.
- 8) Reduction of population blast, strict implementation of birth control irrespective of religion, language, status etc.
- 9) Education including moral science move the people will educated in true science more the moral value will boost up more will be development in each field will be possible.
- 10) Creation of jobs: More jobs should be created for youth and govt. should look after on priority basis.
- 11) Development of agro sectors with irrupting new technology. Rural areas must be developed economically by producing more and more of all agro products to make India independent.
- 12) Promoting youth power ever involvement in front line politics who will dedicate more for our nation.
- 13) Limitedly my sincere believe that the day will come that every country man should focus for good governance and the components are as below



The significance of good governance is actually needed in India and enable government to make policies and protect the basis rights of human by paying civil servants well, transparency in Govt. procedures, cutting the red tape, formation of business community, implementation of index (BCI) in a proper manner, smart technology, information accuses and empowerment of citizen and finally losing international loopholes.

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



ऋषि राज शेखर

उप. प्रबंधक (सिविल)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

रंगीत पावर स्टेशन

India got Independent in year 1947. Since, then we all are trying for developed and prosperous India. But, till now, developed and prosperous India is still a long road ahead. The reason behind this is the amount and level of corruption existing in all levels of government and management system.

First of all, we have to know. What is vigilance? After that we can imagine about the prosperity of India. Vigilance is defined as the careful watch on any type of corruption or difficulties. Now, how this vigilance can be done and why it is required for prosperous India. The answer is very simple, that by keeping vigilance, the corruption level can be reduce & subsequently, the dream of prosperous India can be achieved.

➤ Why corruption is being done?

- For an extra income.
- The salary of employees is not enough.
- Everyone, is thinking that, if he is taking bribe then why not me?
- In extreme situation, bringing and corruption is the only way to execute the work.
- Less accountability of money of every person.
- Transparency and lack of technology etc.

➤ How these corruptions can be eliminated?

Corruption can be eliminated by vigilance of wrong doings by government, people or a set of people. The vigilance can be of different type.

- Preventive Vigilance:** it means to minimize the lapses of rules.
- Participative Vigilance:** Vigilance is not a single man or single body/organization business. It is the business of every people. Each and every Indian have to participate in this and report any kind of wrongdoing to the central body.
- Punitive Vigilance:** It is the vigilance done as per rules after lapses.
- Detective Vigilance:** It is done by identifying the lapses.

In a whole, we say that it is done by participation of everybody. So, that the corruption level can be minimized.

Proper vigilance can be done by building a TEAM in which.

T refers to: Technology and Transparency.

E refers to: Efficiency and Empowerment.

A refers to: Audit trial and accountability.

M refers to: Metrics measurement & mutual co-ordination.

As all of us know the corruption in India is at high level i.e the corruption rank index reflects 80th rank in the world for India. Also due to corruption the lack of GDP in India is 1.50% i.e

if India minimizes its corruption level. The GDP of India can be increased by 1.50%. The total foreign direct investment can be increased by 12% as per UNDP data. Hence, it is seen that how much corruption affects the country's economy. In addition to this, the materials and food grains etc component at least 30% on an average is going in the black market due to corruption. So, we see that, the level and amount of corruption exist in the system. Now, being a citizen of India, it is our duty to be vigilant and report these type of corruption to prevent.

➤ **How to be vigilant and how to prevent corruption?**

It is everyone's responsibility to prevent corruption apart from this there are central bodies that are monitoring and preventing corruption i.e Central Vigilance Commission. Also, some government bodies also exist through which anyone can get data & report about corruption & those are

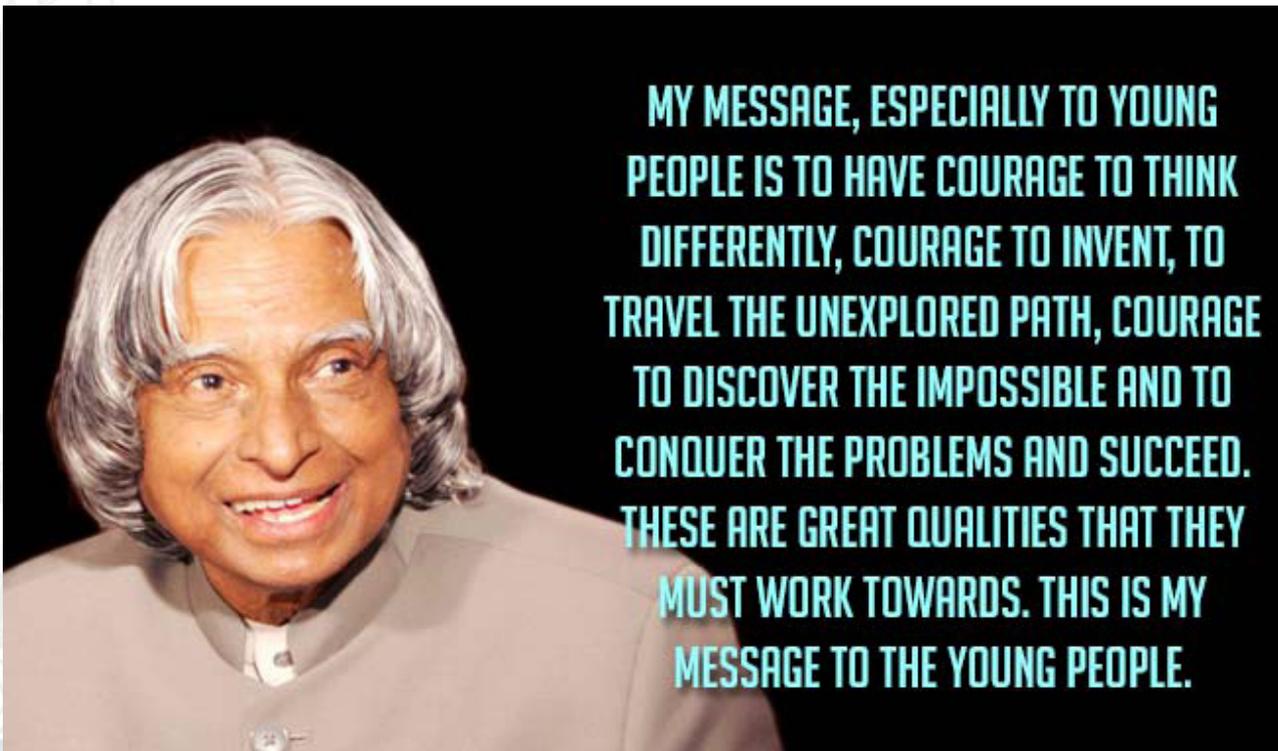
- Lokpal
- RTI Act etc.

In addition to the above E-governance is the effective tool to prevent corruption government has started a number of portals like Income Tax, Excise duty portal, Visa, Passport etc. E-governance can reduce wrongdoings and makes the system transparent to everyone.

So our aim for prosperous India can be executed by vigilance. The corruption in India exists from top level i.e ministers to the lowest level staffs. So, everyone's has to be vigilant & report the wrongdoings. Also by making string and robust laws, corruption can be prevented.

Hence, we have analyzed that the amount & level of corruption is too high, which is anti-nation, anti-poor and anti-economic which reduces the revenue of India to a lowest extent. Hence, development and prosperity of India is compromised due to corruption.

Conclusion:- We all have to be vigilant at personal as well as professional level to reduce the level of corruption. After that the revenue and financial stand of country will grow and dream of prosperous India can be achieved.



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



“When good people in any country cease their vigilance & struggle, then evil men prevail”

प्रवीण पांडे

उप. प्रबंधक (सेफटी)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

रंगीत पावर स्टेशन

- Perl s. buck

As well quoted if the vigilance & struggle for integrity, corruption cases in any country, corrupt practice prevail. Corruption can only survive in any society if the people of that society no longer struggle to fight against it.

To fight against these corrupt practice, central vigilance commission was set up in India on 11th Feb 1964 on the recommendation of K. Santharaman committee, to fight against corrupt practice in government institute. This requirement for set up of a vigilance commission was not only felt to fight against corruption, but there was also a broader vision to see a prosperous India. Prosperous India without vigilant India could not be imagined. It was felt by the then established K. Santharam committee that a lot of corrupt practice was prevailing in the govt. officers, who were not only exploiting the needs of poor people / under privilege people but a greater amount of money/ cash flow which was assigned to various development projects where not reaching to their designated assignment. Hence the committee felt the requirement for establishment of central vigilance commission. The body has been assigned to work independently & the chief commission of vigilance is being appointed by president of India, on the recommendation of president of India, on the recommendation of prime minister, Home minister & leader of the opposition in Lok Sabha.

Why do we say that to be “Prosperous we need to be vigilant”.

When we look at some of the developed countries like USA, Britan, Germany & even middle east countries like Somali Arabia, we see that some of the development projects (major)

were completed with highest level of technical standard & with in stipulated time frame. Even in very advise environment countries of Loral, agriculture has been seen as ever world. Model for other countries all over world. *“Why these countries were able to achieve success in their respective field?”* the answer to this question lies in the quote. Where people are ready to fight/struggle against corruption, where people are without any greed, that society, that country will definitely travel on the path of success & will prosperous. This need to establish a prosperous India was felt by our visor leaders, who latter led to the establishment of CVC in year 1964. Corrupt practice do prevail not only in Govt. sector but also in private sector & this corrupt practice for further lead to misuse of power & money. To counter this malfunctioning in any organization government has made mandatory to establish a vigilance office in every organization. The officers (Vigilance) are assigned with duty to see that corrupt practice if any exist may be reported to higher competent authority. However, it is the duty of every person to fight against corruption, so that a well-developed society may be established. However, there are certain loopholes in our current vigilance system which are also society against our determination to establish prosperous India. Central vigilance commission is seen as on advisory body with no power, to direct CBI/ other investing agency to lodge corruption case against corrupt officers. The body is only seen as advisory organization. If power like other central agency such as CBI, ED are given to this organization, will reduce corruption cases in India. If corruption is eradicated from India, the vision for prosperous India is not far from achievement.

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



डॉक्टर सुजीत गुक्ला

उप. मुख्य चिकित्सा अधिकारी

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

चमैरा पावर स्टेशन-I

**प्रस्तावना: “हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए”**

प्रसिद्ध कवि श्री दुष्यंत कुमार जी की यह पंक्तियाँ भारत में भ्रष्टाचार के वर्तमान परिवेश में बिल्कुल सटीक बैठती हैं। परंतु भारत सदा से तो ऐसा नहीं था। भारत के विषय में तो यह प्रसिद्ध था :

उपमा बिहीन रचा विधि ने, नस भारत के सम भारत है

प्राचीन भारत तो सर्वश्रेष्ठ व्यापारिक, औद्योगिक एवं कृषि प्रधान देश था और इसलिए स्वर्ण युग के नाम में विश्व विख्यात था। परंतु आज बड़ी ही दयनीय स्थिति में है—हिल गई हैं सब दीवारें—बुनियादें इसकी।

अनेकों विद्यमान समस्याओं में यदि कोई सर्वाधिक विकास को बाधित कर रहा है तो वो है भ्रष्टाचार। इसके उन्मूलन के लिए भारतीय जनमानस को पूर्णतया बदलने की आवश्यकता है। आवश्यकता है सतर्कता की, आवश्यकता है जागरूकता की।

“जागो ग्राहक जागो, यह बात है जन—जन तक पहुंचानी, गरीबी भ्रष्टाचार हटा कर नई नींव है बनानी, सतर्कता की लहर दौड़ा कर, भारत की करनी नई भविष्यवाणी है”

सतर्कता क्या है और क्यों जरूरी है?

सतर्कता यानि सचेत, सावधान और होशियार। प्रत्येक देश की सफलता उसके नागरिकों पर निर्भर करती है, उसके नागरिकों की सत्यनिष्ठा पर निर्भर करती है। यदि किसी देश के नागरिक सफल हैं तो देश भी होगा।

सफल लोकतन्त्र के लिए सतर्क लोगों का होना जरूरी है क्योंकि वे नागरिक अधिकारों व शासन की नीतियों के बारे में जनता में जागरूकता फैलाते हैं जो कि दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। अगर हमें समृद्धशाली देश बनाना है तो हमें एक ही मूल मंत्र की आवश्यकता है वो है सतर्कता। जो समाज व राष्ट्र, सतर्क नहीं होता उसे उसकी भयंकर कीमत चुकानी पड़ती है। उदाहरण के लिए भारतवर्ष ने अपनी असतर्कता से कई वर्षों तक गुलामी की जंजीरें पहनी हैं और आजादी के लिए एक बड़ी कीमत अदा की है।

एक सतर्क भारत का निर्माण तभी संभव है जब सभी जन सतर्क हों:—

“खबरदार, एक प्रहरी बनकर, सजग समाज बनाने से उन्नति वतन की हो सकती है, जन सतर्क हो जाने से”

सतर्कता से समृद्ध भारत का निर्माण: हम निम्न क्षेत्रों में सतर्कता बरतकर एक समृद्धशाली भारत का निर्माण कर सकते हैं।

- 1) बच्चों में सदगुणों व सतर्कता का प्रतिष्ठापन : व्यक्ति के युवा चरित्र में सतर्कता, दृढ़ता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा व सेवा भावों को अधिष्ठापन कर देना चाहिए। तब वह इनके साथ बड़े होंगे और दृढ़ता—प्रलोभन का विरोध, ईमानदारी—कार्य के प्रति सच्चाई, कर्तव्य—सभी सामाजिक कुरीतियों का विरोध व सेवा भाव—शोषण करने से रोकेगा। इस प्रकार उचित पालन—पोषण, स्कूली शिक्षा, संस्कार, सतर्कता उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में समृद्ध भारत बनाने में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

2) राजनैतिक भ्रष्टाचार को समाप्त कर समाज सेवा की ओर बढ़ाना: सरकार की मजबूत पहल व सजग नागरिकता से राजनीतिक भ्रष्टाचार भारत में अन्य भ्रष्टाचार को पोषण व प्रश्रय देने का स्रोत नहीं रह पाएगा।

सरकार को एक मजबूत पहल कर सबसे पहले चुनावी बौण्ड में सशोन्धन करके दानदाताओं के नाम उजागर करने होंगे ताकि वे जीतने पर जिन कार्पोरेट घरानों से चन्दा लेते हैं उन्हें टैक्स छूट जैसे अन्य लाभ जनता के हितों के ऊपर रखकर न दे सकें।

नागरिकों को भी अपने उम्मीदवार बहुत ही सतर्क हो करके उनके कार्यों का ध्यान रख, उनके शैक्षणिक योग्यता MPLAD वर्कस, आपराधिक छवि व जनता से उनके संवाद आदि को ध्यान में रखकर करना चाहिए न की पार्टी विशेष को।

अगर मतदाता अतिव्यय व रिश्वत देने वाली पार्टियों व उम्मीदवारों को नकार दें तो लोकतंत्र स्वयं ही एक स्तर ऊपर उठ जाएगा। पंचायत स्तर पर भ्रष्टाचार कम करने के लिए सांसद एवं विधायकों के स्तर पर ही पंचायत में चुने हुए प्रतिनिधियों को उचित मानदेय देने के प्रबंध हों।

3) ई-प्रशासन में सतर्कता: जिन जिन सेवाओं को ई-सेवा के दायरे में लाया गया है वहाँ वहाँ बिना मुश्किल की और सेवाएँ पाना सुलभ हो गया है। जैसे ई-सेवाओं व प्रौद्योगिकी का दायरा बढ़ता जा रहा है सेवाएँ पाना आसान हो चला है। उदाहरण के लिए ई-गवर्नेंस, ई-निगरानी, ई-आरक्षण ई प्रशासन आदि

4) पुलिस व्यवस्था : सुदृढ़ पुलिस व्यवस्था किसी भी राष्ट्र में व्याप्त भ्रष्टाचारियों व अनैतिक तत्वों को काबू में रखकर एक समृद्ध राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इसके लिए पुलिस सुधार समय की मांग है। अगर जनता को SMS ऑनलाइन ई-मेल द्वारा FIR कराने की अनुमति दी जाये/विकल्प दिया जाए तो पुलिस स्टेशन की मनमानी को अंकुश लगाया जा सकता है

5) न्यायपालिका में जनता का विश्वास एक सुदृढ़ राष्ट्र का सूचकांक है। दंड अपराध के अनुरूप व अपराधी के मन में भय पैदा करने वाला होना चाहिए। जटिल कानून व्यवस्था ईमानदारी से न्याय पाने में एक रोड़ा है। न्यायप्रणाली आसान होनी चाहिए।

सामाजिक सुधार से समृद्धि : जनता को व सरकार को अपनी विचारधारा बदलने की आवश्यकता है उन्हें अपनी मानसिकता और ईमानदार करने की आवश्यकता है। व्यक्ति के गुणों की कद्र सीखनी होगी।

सरकार की मजबूत पहल

- अधिनियमों द्वारा सरकार ने सतर्कता से समृद्धि और विधायिका में नेतृत्व के रूप में सामने रखी है। इनमें महत्वपूर्ण है:
- भ्रष्टाचार विरोध अधिनियम
- स्वतंत्र CVC
- स्वतंत्र लेखा परीक्षक
- लोकपाल एवं लोकायुक्त अधिनियम (2013)
- बेनामी संपत्ति (अधिनियम) निषेध

इंटीग्रीटी इंडेक्स/सत्यनिष्ठा समझौता

दोनों से जनता के सामने विकास में योगदान देने वाले प्रतिष्ठानों का मूल्यांकन कर समृद्ध भारत वर्ष बनाने में योगदान को सामने रखा है।

उपसंहार ज्ञान-विज्ञान, पर्यावरण, शासन, साहित्य व मीडिया, पुलिस प्रशासन, न्यायपालिका अर्थात भारत के प्रत्येक वर्ग ने अपने क्षेत्र में सतर्कता के द्वारा समृद्ध भारत के निर्माण में अपना योगदान देकर समृद्धि के पथ पर अग्रसर किया। हमारी परम्परा हमारी संस्कृति हमारे अंदर मूल्य बोध कराती है फिर सरकार में नियामक इसे कानूनी शक्ति देते हैं। जरूरी है कि हम ईमानदारी के मूल्य को समझें व इसे अपने अंदर प्रतिष्ठापित कर नैतिक शिक्षा को बल दें व एक समृद्ध समाज व राष्ट्र की स्थापना में अपना योगदान दें।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



त्रिभुवन नाथ चव्हाण

सहायक प्रबन्धक (यांत्रिक)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

चम्रेरा पावर स्टेशन-I

भारत विभिन्न संस्कृति और सभ्यताओं का एक विशाल देश है। यह एक पुरानी विचारधाराओं, अलग अलग भाषाओं और कार्यप्रणाली से कार्य करता है। कभी भारत को विश्व गुरु और सोने की चिड़िया से नवाजा जाता था और यही इस महान देश की पहचान थी। इस देश ने महान योद्धा और क्रांतिकारियों को जन्म दिया है। देश की आजादी के लिए न जाने कितनों ने अपने प्राण च्योछावर कर दिये ताकि देश में समृद्धि आए किन्तु कुछ स्वार्थी नेता, नौकरशाह, उद्योगपति, व्यापारी इत्यादि ने अपने निजी मुनाफे और थोड़े से पैसों व संपत्ति के लालच में देश की खुशहाली की नैया डुबो दी। कभी सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश गरीब होता गया। हमारे महान देश को जैसे भ्रष्टाचार नामक दीमक ने जकड़ लिया है और धीरे धीरे देश की तरक्की को खाए जा रहा है।

भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट आचार यदि कोई अपने निजी स्वार्थ और लालच के लिए पद और शक्तियों का दुरुपयोग कर किसी खास व्यक्ति विशेष के लाभ के लिए कार्य करता है या बेईमानी से कार्य करता है तो उसे भ्रष्टाचारी कहते हैं। भारत में इसे अनैतिक और हीन समझा जाता है उसके बाद भी कई लोग भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं। एक गैर सरकारी संगठन ट्रांसपेरेंट इंटरनेशनल के वर्ष 2019 में किए गए सर्वे में विश्व में ईमानदारी से कार्य करने की सूची भारत को 180 देशों में 81वें स्थान पर रखा गया है। ऐसा नहीं कि केवल भारत में ही भ्रष्टाचार फैला हुआ है किन्तु भारत में आजादी के बाद से भ्रष्टाचार जितना फला फूला है उसी कारण से देश गरीब होता जा रहा है। नागरिकों के लिए कल्याणकारी कार्य के लिए जो पैसा खर्च किया जाना चाहिए था उसे बेईमान और स्वार्थी और दलाल हजम कर गए जिस कारण पैसा सही जगह उपयोग में नहीं लाया जा सका। ऐसा नहीं है कि सरकार के नाक के नीचे भ्रष्टाचार होता रहा और जो स्वयं लिप्त हो कर हाथ पर

हाथ बांधे तमाशा देखती रही है। भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए सरकार ने कई कानून अधिनियम और विभागों का गठन किया है जैसे भ्रष्टाचार रोक थाम कानून आर टी आई एक्ट इत्यादि जैसे मजबूत कानून के होते हुए भी देश से भ्रष्टाचार में कोई कमी नहीं आई है। इसका मूल कारण भ्रष्टाचारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध CVC, CAG, CBI, STATE AND CENTRAL VIGILANCE COMMISSION का लचीला रवैया रहा है। सरकार ने सख्त कानून जरूर बनाया है जिसमें भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारी और नागरिकों को सजा का प्रावधान है किन्तु अभी तक केवल 5% या उससे भी कम भ्रष्ट लोगों को सजा मिल पाई है। जिससे इनके मन में कोई डर या शर्मिंदगी नहीं रहती। इसके लिए आवश्यक है कि जनता स्वयं सतर्क और जागरूक रहे जिससे कि भ्रष्टाचार नामक राक्षस का खात्मा किया जा सके।

भारत को समृद्ध बनाने के लिए जरूरी है कि हम अपने से ही शुरुआत करें जिसमें हम न कभी रिश्वत दें और न ही किसी से किसी प्रकार की रिश्वत या गलत लेन देन लें साथ ही अपने आस पास ऐसी कृत के खिलाफ आवाज उठाएँ व लोगों को ईमानदारी से कार्य करने के लिए प्रेरित करें। यह जरूरी है कि यदि हम सभी अपने अंदर से ही बुराई समाप्त करने कि शुरुआत करें, तभी संभव होगा। हम फिर से देश को समृद्धि की राह पर ले जा सकते हैं।

भारत में सबसे बड़ी समस्या है कि यहाँ की अधिकतम जनसंख्या जागरूक नहीं है। सरकार के ऑनलाइन सुविधा और ई-गवर्नेंस के लागू होने से भ्रष्टाचार में कमी जरूर आई है किन्तु भारत में जानकारी के अभाव के कारण यह कारगर साबित नहीं हो पा रहा है। जरूरी है कि सरकार को बड़े पैमाने पर जन जागृति अभियान

चलाने कि आवश्यकता है। सरकार अपनी सारी जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध कराए जिससे कि सरकारी प्रक्रिया को समझा जा सके जिसके लिए किसी अधिकारी को काम निकालने के लिए घूस या रिश्वत न दिया जाए और जटिल व लंबी प्रक्रिया में सरलता लाने की आवश्यकता है। आज हम देखते हैं कि अपना ही काम कराने के लिए सरकार ने सेवा के लिए जिन्हें नियुक्त किया है उन्हें पैसे देने पड़ते हैं। अपनी जमीन संपत्ति का पंजीकरण कराना हो या यातायात विभाग में लाइसेंस एवं जरूरी दस्तावेज बनाना हो बिना रिश्वत दिए कार्य करा पाना बहुत मुश्किल होता है। इसलिए यदि सरकार वाकई इस विषय पर गंभीर है तो उसे सभी सरकारी विभाग जैसे आभकारी, लेखा विभाग, बिजली, अस्पताल की कार्यप्रणाली व प्रक्रिया को सरल बनाया जाए और ज्यादातर कार्य ऑनलाइन कर दिया जाए।

जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से सरकार को नियमों में बड़े बदलाव की जरूरत है जैसे कि: नगद लेन देन में कमी लाना और कैशलेस सुविधा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना। इसके लिए ई-पेमेंट पर rebate जैसी ऑफर दी जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग ई-पेमेंट के लिए प्रोत्साहित हों।

पारदर्शिता लाना, यदि सरकार अपनी वेब-साइट पर सारी जानकारी साझा करें तो लोगों को अपने काम निकालने के लिए दलाल की सहायता न लेनी पड़े।

कार्य पूर्ण करने के समय सीमा निर्धारित करना- सरकारी विभागों में देखा गया है कि अधिकारी फाइल पर बैठ जाते हैं और अनावश्यक समय लगाते हैं जिससे कि लोगों को अपने काम जल्दी कराने के लिए मोटे पैसे का लालच दिया जाता है जिससे भ्रष्टाचार बड़े स्तर पर होता है। डिजिटलाइजेशन और टेकनॉलोजी के उपयोग से भी भ्रष्टाचार पर लगाम लगाया जा सकता है।

हम सभी संकल्प करें कि स्वयं सतर्क और जागरूक रहें और दूसरों को भी जागरूक करें तभी हम देश को समृद्ध बना पाएंगे। जिससे संभव है कि भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना पूरा को सके। हम भी जनता अगर ये वचन लें कि न कभी रिश्वत लेंगे न ही किसी को रिश्वत या लालच देंगे तभी देश पुनः खुशहाल होगा और हमारी आजादी के नायकों और महापुरुषों के सपनों के भारत का फिर से निर्माण होगा। देश में फिर चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ और विकास होगा। जन कल्याण का पूरा पैसा सभी लाभार्थियों के काम में खर्च होगा।



चंद पैसे के लिए जो
अपना ईमान खोते हैं,
ऐसे ही लोग भ्रष्टाचारी
होते हैं।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



शेखर चन्द्र जोशी

प्रधान सहायक - ।

प्रथम पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020
टनकपुर पावर स्टेशन

हम भ्रष्टाचार मिटायेंगे,
जीवन की राह बदल देंगे।
संकल्पित करके इस मन को,
झुकने नहीं देंगे तन को।
सशक्त राष्ट्र का कर निर्माण,
इस जग को हम देंगे प्रमाण।
हम बदलेगे युग बदलेंगे,
हम सुधरेंगे युग सुधरेगा।
भ्रष्टाचार से मिलेगी राहत,
सतर्क भारत समृद्ध भारत।

नहीं करेंगे आनाकानी,
और नहीं अपनी मनमानी।
भाई-चारा अपनाएँगे,
और समय से कार्य करेंगे।
अपना कार्य समझ कर पूजा,
इससे नहीं धरम कोई दूजा।
अपना अपना करें सुधार,
तभी मिटेगा भ्रष्टाचार।

होगा भ्रष्टाचार हताहत,
सतर्क भारत समृद्ध भारत।

भ्रष्टाचार है मन का रोग,
करें बदनाम देश को लोग।
बढ़ती रैंकिंग देश के नाम,
ईमानदार हैं बने इंसान।
हम सब से बनता यह देश,
हमें बदलना है परिवेश।
समाज बने नैतिक आचार,
बने स्वच्छ मानव विचार।
मिटेगी भ्रष्टाचार की लत,
सतर्क भारत समृद्ध भारत।

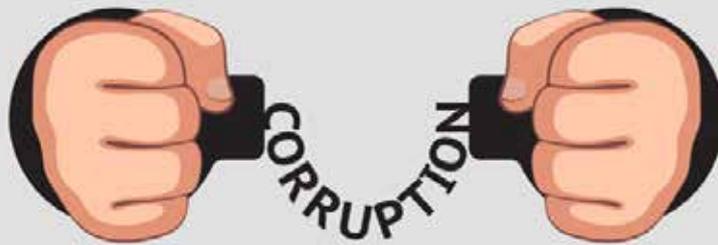
भ्रष्टाचार के रूप अनेक, स्वार्थ,
बल, मद, अहं, अविवेक।
ये होते है जन्म के अंधे,
और करें घोटालों के धंधे।
दया, धर्म अरु प्रेम समर्पण,

माँ भारत को करके अर्पण।
ईमानदारी लाखों में एक मनका,
बेईमानी चेला काले धन का।
भ्रष्टाचार होगा तब आहत, सतर्क
भारत समृद्ध भारत।

शपथ आज लेते हैं मिलकर,
फैले इस सामाजिक जहर पर।
लेकर के प्रण देश समृद्धि का,
समृद्ध भारत की वृद्धि का।
नमन आज हम उनको करते,
देश के खातिर जो मर मिटते।
सीमा हो या देश के भीतर,
रहते है जान हथेली पर रख कर।

सीख हमें भी लेनी होगी,
ईमानदारी का बन कर भोगी।
तभी बनेगा उज्ज्वल भारत,
सतर्क भारत समृद्ध भारत।

भ्रष्टाचार है एक बीमारी,
दण्डित हो हर भ्रष्टाचारी।



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



डी पी पटेल

वरिष्ठ प्रबन्धक (विद्युत)

तृतीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

टनकपुर पावर स्टेशन

आज विश्व के अधिकांश देश भुखमरी, भ्रष्टाचार, कुपोषण, अशिक्षा, महामारी, गरीबी तथा वैश्विक आतंकवाद से ग्रस्त हैं। लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हैं, आपसी वैमनस्य इतना बढ़ गया है कि एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए हिंसा, अपहरण, साईबर क्राइम आदि का सहारा ले रहे हैं। निहित स्वार्थ के लिए देशविरोधी व षडयंत्रकारी लोगों को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत के कुछ पड़ोसी मुल्क विशेषकर चीन, पाकिस्तान अपने विस्तारवादी नीतियों एवं अपने आंतरिक कलह को दबाने के लिए तथा अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को जीवंत रखने के लिए हमारे देश में आतंकवाद, विघटनकारी, देशविरोधी गतिविधियों को उकसा रहा है। हमारे देश के कुछ मासूम नौजवान/जनता इन कुटिल प्रलोभनों के जाल में फंस जा रहा है उसको इन छल प्रपंचों के द्वारा फंसाया जा रहा है। इन सब कुत्सित प्रयासों/प्रलोभनों से हम भारतीयों को हर पल सतर्क रहने की आवश्यकता है जिसके बिना समृद्ध भारत की परिकल्पना नहीं की जा सकती है।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत, बनाने के उपाय :- हर एक भारतीय को हर पल सतर्क रहते हुए अपने तुच्छ स्वार्थ को त्यागकर, हर एक क्षण अपने देश की एकता, अखंडता, देशप्रेम व भाई चारे के लिए खुद को त्याग का प्रतीक बनने की जरूरत है। विदेशी ताकतों से सावधान रहना है, जो धन-बल का प्रलोभन देकर मासूम जनता को हथियार बनाकर समृद्ध भारत की राह का रोड़ा बनी हुई है।

शिक्षा का व्यापक प्रचार प्रसार :- सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से हम समस्त भारतीयों को आने वाले व मौजूदा खतरों के प्रति आगाह कराते रहें तथा इस प्रकार की गतिविधियों के बारे में समय-समय पर सूचित करते रहें, आज के आधुनिक युग में साईबर क्राइम इतना बढ़ गया

है कब किसका ATM, बैंक खाता व अन्य विवरण चुरा लें पता ही नहीं चलता। लोगों की गाड़ी कमाई चुटकी बजाते सफाचट्ट कर जाते हैं, शायद इसका बहुत बड़ी वजह सोशल-मीडिया (फेसबुक/व्हाट्स एप/इन्स्टाग्राम/ट्वीटर/यूट्यूब इत्यादि) पर गलत गतिविधियों को दिखाने से हो रहा है। आज सोशल मीडिया में अधिकांश गतिविधियां का प्रयोग तोड़-मरोड़कर, मनगढ़ंत, झूठी खबरें बनाकर एक दूसरे को नीचा दिखाने, हिंसा भड़काने के लिए हो रहा है। आज भारत में अधिकांश हिंसक, देशविरोधी गतिविधियां इन्हीं झूठी अफवाहों की वजह से फैल रही है। अगर हम, हर भारतीय जनमानस को शिक्षित कर सकें और इन अफवाहों से उन्हें दूर रख सकें, तो समृद्ध भारत का सपना तेजी से पूरा होते देख सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिक (आई टी) का व्यापक उपयोग:- बढ़ते हिंसा व अपराध को सूचना प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग से रोका जा सकता है। साईबर क्राइम को खत्म किया जा सकता है। सभी सरकारी एवं बहुमूल्य राष्ट्रीय सम्पत्तियों को CCTV की निगरानी में रखा जाए, सरकारी एवं महत्वपूर्ण व्यवसायिक गतिविधियों वाली जगहों को सूचना तकनीकी के नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित किया जाए, हैकरों से बचाव के लिए फायरवाल - एंटीवाइरस का समुचित उपयोग किया जाए, हर पल इन खतरों से सावधान रहना है जिससे सतर्क भारत से समृद्ध भारत का सपना आसानी से साकार किया जा सके।

आपसी विश्वास एवं भाईचारे को बढ़ावा :- किसी भी समाज, देश की एकता व अखंडता की कल्पना बिना आपसी विश्वास एवं भाईचारे के नहीं की जा सकती है। अलग-अलग भाषा व अलग-अलग वेषभूषा अलग-अलग

मजहब के बावजूद अनेकता में एकता सदियों से भारतीयों की पहचान रही है। सभी भारतीयों के लिए एक समान शिक्षा, रोजगार, अपने-अपने धर्मों का पालन एवं दूसरे धर्मों का सम्मान करना है। विघटनकारी ताकतों से सतर्क रहना है। जाति, धर्म, भाषा के आधार पर आपसी भाईचारे एवं विश्वास को बढ़ावा देना है जिससे समृद्ध भारत का सपना साकार होते देखा जा सके।

कठोर दण्ड का प्रावधान :- कुछ एक विघटनकारी, हिंसक, देशविरोधी गतिविधियों में लिप्त लोगों को कठोर से कठोर एवं शीघ्रतम दण्ड से लोगों में ऐसी गतिविधियों से दूर रखने के लिए आवश्यक है। सतर्कता ही समृद्धता की प्रथम सोपान है।

प्राचीनकाल से भारत को सोने की चिड़ियाँ, विश्व गुरु के नाम से जाना जाता है। वसुधैव कुटुम्ब की धारणा भी हम भारतीयों की ही देन है वर्तमान दौर में जिस मनमाने तरीके से अनैतिकता, हिंसा, विघटन, आतंकवाद जैसी गतिविधियां हमारे देश में पनप रही है वो चिंता का विषय है। इन सब समस्याओं से सतर्क रहते हुए हमें एक समृद्ध एवं सुरक्षित भारत बनाने से कोई रोक नहीं सकता, बस हमारे इरादे दृढ़ हों, सब भारतीय संकल्प लें, किसी भी देश विरोधी गतिविधि को होने नहीं देंगे खुद सतर्क रहेंगे औरों को सतर्क करेंगे और समृद्ध भारत बनाएंगे।

जय हिन्द, जय भारत।



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



अखिलानन्द उप्रेती

प्रबंधक (सचिव)

तृतीय पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020

दनकपुर पावर स्टेशन

मेरे देश की बीमारी, कुछ भ्रष्ट कर्मचारी
पाते तो वेतन हैं, फिर भी हैं भिखारी।
ऊपर के चक्करों में, ईमान बेचते हैं
ये ऐसे कर्मचारी, निर्लज्ज और भिखारी।।

मेरे देश की बीमारी, कुछ भ्रष्ट कर्मचारी

इस देश के लिए, गरदन भी कटा दी
गरदन के साथ जिंदगी को, खत्म कर दिया
भ्रष्टाचार से निपटने में, अब क्यों लगी देरी
गुलामी से मुक्त होने में, नहीं हुई देरी

मेरे देश की बीमारी, कुछ निर्लज्ज अधिकारी

है बड़ी आफत ये, बन गई महामारी
गले-गले में पड़कर, कारोना से भारी
व्यभिचार के भंवर से, तिरंगे को बचा लो
वतन को बचा लो, अरजी है हमारी

मेरे देश की बीमारी, बड़े बड़े दरबारी

अत्याचार अनाचार के, भंवर में है फंसा
दीमक की तरह पनपता, फैलता ही जा रहा
सरकार को सहयोग दें, कर्तव्य निभायें
कर्तव्य निभाने में, न समझें लाचारी

मेरे देश की बीमारी, धनवान भ्रष्टाचारी

कुरीति और अनीति का, क्यों मेल हो रहा
विश्व गुरु के घर में, ये क्या है हो रहा

इस देश की तहजीव, हमें याद दिलाती
एहसास कराती कि, हम हैं प्रेम पुजारी

मेरे देश की बीमारी, कुछ भ्रष्ट सदाचारी

यह रोग देश का नहीं, घर घर का बन गया
हर घर से आ रही, चीत्कार को सुनो
भ्रष्टाचार को सुनो, बलात्कार को सुनो
सुनते ही रहोगे, या उठाओगे कटारी

मेरे देश की बीमारी, कुछ नंगे दुराचारी

कुछ बड़े व्यभिचारी, कुछ बड़े व्यापारी
कमीशन तो ये पाते हैं, मन से नहीं भरते हैं
धनवान के चक्कर में, देश बेचते हैं
धन्धे काले करके, नेता बनते भारी

इस देश की बिमारी, ये शातिर नेताधारी

हमारा समाज का बड़ा वर्ग क्या चाहता है

घर समाज देश बने सदाचारी
देश की पहचान बने ईमानदारी
गद्दारी की जगह हो वफादारी
हर घर से दूर हो बेरोजगारी
घर समाज देश, बने सदाचारी

**इस देश की बिमारी, अब खत्म होगी सारी
लौटेगी खुशहाली, अयोध्या की आयी बारी**

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



निरंजन नाथ
वरिष्ठ प्रबन्धक(यांत्रिक)

प्रथम पुरस्कार – निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
ढनकपुर पावर स्टेशन

“Honesty is a Highly Expensive gift and do not expect it from cheap people”.

Introduction:-

First of all I would like to explain about vigilance i.e. why it is necessary in day to day life in particular and in broader sense for an organization and country in general.

“Vigilance is a watchful eyes on the activities of the employees/personnel towards their integrity and doing any unlawful activities/ act so as to enhance their efficiency and effectiveness.”

As per Bhagwat Geeta- Arjun says “It is very difficult to control the mind than to control the wind.”

Why vigilance Needed:- To succeed in the life one has to be very vigil towards his act of doing any unlawful activities. In case we are not vigilant in our life accident can occur at any time likewise if a countrymen whether it is political leaders, social reformers like NGOs, organization /Institutions do not follow the rules of vigilance, it is impossible to think for their growth. So vigilance has becomes very important tools for everybody like government/ organizations / Institutions.

Types of vigilance:-

There are mostly three types of vigilance have been talked about-

1. Preventive/proactive Vigilance

2. Participative Vigilance

3. Punitive Vigilance

- Preventive vigilance:- Preventive vigilance is one of the most important tools of vigilance. In preventive vigilance ever one has to follow the rules & regulations, Standard Operating Procedure (SOP), Policies, Vision & mission of an organization and do the works within the set standard of the organization. Preventive vigilance is to keep eyes open on the policies and do their activities accordingly.
- Participative vigilance:- Participative vigilance is also important but not mandatory. There are whistle blower policy, RTI act etc. through which even outside /stakeholder can use their right and ask for anything not doing as per rule & policy.
- Punitive vigilance- when a crime / corruption has already been committed. In this case based on the depth of crime/ corruption, punished is to be given to the person/ employee.

Corruption

World Bank defines corruption “Abuse of public money for private going”. Public office is abused for private gain when an official

accepts, solicits, or extorts a bribe. Public office is also abused when public policies and processes are circumvented to provide undue advantage to undeserving. Public office is also abused through patronage and nepotism

Corruption is thus abuse of a position of trust for dishonest gain. Such dishonest actions destroy people's trust in the person as well as in the organization.

In mathematical terms **(corruption= Discretion + Mystification –Accountability)**

That is: Corruption rises with increase in discretion as well as with increase in mystification or lack of transparency. At the same time corruption decreases with rise in accountability.

Further, due to lack of vigilance, corruption increases in our society which propagates further to organization and then to the country. Any country can be worse hit by the act of corruption. Growth in all spares of life whether it is social, economic, Environment front, corruption can be a big brake/ stopper. Since childhood we have heard the name of most prestigious organization i.e. TATA” which is known for their Morals & Ethical values.

Progress of any country solely depends on the Ethical & moral values of their government in general and people is particular.

Prosperous mean to success or to develop broadly in terms of Economical/ Financial growth. Prosperity of any country is mostly calculated on the basis of GDP(Gross domestic Product) of the country. GDP is value of all goods & services being done in a particular year. But if we see from the broader perspective “Prosperity is not just a growth in Economical/Financial front but it is the holistic growth into Social, Economic Political and Environment fronts”.

A London based organization who every year published “prosperity development Index” in

which there are various factors have been considered such as-

- Health
- Wealth
- Living standard of people
- Economic development
- Investment development
- Natural resource development
- Social development
- GDP
- Environmental development etc.

“India is rank 101th out of 167 highly prosperous countries.’

“As per Transparency International report India is ranked 80th out of 180 countries in corruption perception Index.’

Conclusion:-

From the various reports and Index throughout the worlds, it has been proved that there is no any options left for growth of the country other than clean, Ethical & Corruption free option. Therefore, we have to enhance the tools of vigilance in all spares of life. Every Citizen/ organization / Government has to adopt the policy of moral responsibility and follow the Ethical behavior everywhere.

Transparency in all field is needed to combat corruption and for which everyone has to be vigil at every level to excel our organization, our society, our country to the highest level of prosperity. India can only become prosperous if it we use the tools of vigilance everywhere and in every spheres of life and day to day activities.

“सतर्कता हटी दुर्घटना घटी”

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



शेराफिना लाकड़ा

उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
सलाल पावर स्टेशन

प्रस्तावना: सतर्कता को अपनाना है, भारत को सतर्क और समृद्ध बनाना है।

किसी भी देश को समृद्ध व विकसित बनाने में वहाँ के नागरिकों का सतर्क व जागरूक होना बहुत ही जरूरी है। अगर देश के नागरिक सतर्क नहीं होंगे तो इसका खामियाजा पूरे देश को उठाना पड़ता है। इसका प्रत्यक्ष उदहारण भारत देश ही है सतर्क व जागरूक नहीं होने की वजह से भारत को सैकड़ों वर्षों तक अंग्रेजों के अधीन रहना पड़ा। आजादी पाने के लिए बहुत ही मेहनत करनी पड़ी व कुर्बानियां देनी पड़ी तब जाकर भारत आजाद हुआ।

सतर्क भारत समृद्ध भारत अभियान :

31 अक्टूबर को सरदार बल्लभ भाई पटेल का जन्म दिन मनाया जाता है, उन्होंने आजादी की प्राप्ति के लिए भारत को सतर्क व जागरूक बनाने में बहुत ही बड़ा योगदान दिया था अतः हर वर्ष अक्टूबर के अंतिम सप्ताह को, भारत में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

सतर्क भारत व समृद्ध भारत अभियान का उद्देश्य :

भारत सरकार द्वारा सतर्कता आयोग का गठन, सतर्कता अधिनियम 2003 के अंतर्गत हुआ था सतर्कता आयोग का कार्य है कि भारत सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों की निगरानी करे ताकि कार्यालयीन कार्य पूरी पारदर्शिता, जवाबदेही और निष्पक्षता के साथ हो, सारे कार्य ईमानदारी से हो सके, कार्यों का निपटारा निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत हो, समाज के किसी भी वर्ग, जाति व धर्म के लोगों के साथ बिना मतभेद के कार्यों का निष्पादन हो, राष्ट्रीय संसाधनों का पूर्ण उपयोग हो और उसका लाभ समाज के हर वर्ग के लोगों तक पहुंचे।

लोग अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें, अपने अधिकारों के लिए सजग व जागरूक रहें, अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाएँ, अत्याचार के खिलाफ बोलें, अपने चुने हुए नेताओं को उनकी जिम्मेदारियों का अहसास दिलाएं ताकि सरकारी कर्मचारी, सांसद व विधायक भी अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा व लगन के साथ निभाएं।

सतर्क भारत व समृद्ध भारत अभियान की आवश्यकता:

भारत पूरे विश्व में, एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न जाति, धर्म परंपरा, रीति रिवाज और भाषा के लोग एक साथ रहते हैं और इसलिए इसे विविधता में एकता का देश कहा जाता है आज भारत को आजाद हुए करीब 73 वर्ष हो गये हैं पर क्या भारत के लोग सतर्क व जागरूक हैं? क्या वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं? क्या समाज के हर तबके के लोगों को सरकार द्वारा बनाई गयी नीतियों का पूरा लाभ मिल रहा है? सतर्क भारत व समृद्ध अभियान की आवश्यकता इसलिए भी है कि प्रत्येक नागरिक ईमानदार हो। भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने के लिए प्रयासरत हो, उसमें वैचारिक परिपक्वता हो, वह आध्यात्मिक रूप से पवित्र हो, अगर नागरिकों में ऐसे गुण हों तो भारत की गरीबी, पिछड़ापन, बेरोजगारी आदि दूर हो जायेंगे। इस अभियान का मकसद भारत सरकार की नीतियों व योजनाओं का लाभ, भारत के हर नागरिक तक पहुँचाना है। टेलीविजन, रेडियो, पम्पलेट्स व विभिन्न संचार माध्यमों से नागरिकों को जागरूक करना है। समाज के कुछ वर्ग ऐसे भी हैं जो अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करते करते मुख्यधारा से कट जाते हैं, उन्हें वापस मुख्यधारा में लाना है। आज भारत के नागरिकों के पास "Right to Information Act" के तहत यह अधिकार प्राप्त है कि इसके माध्यम से सरकार से विभिन्न विषयों में सूचना हासिल किया जा सके अपनी चुनी हुई सरकार से सवाल जवाब कर सके। हर ग्राहक

को "जागो ग्राहक जागो" के नारों द्वारा जागरूक व सतर्क बनाने का प्रयास किया जाता रहा है। मताधिकार द्वारा अपने प्रतिनिधि को चुनने का अधिकार के प्रति जागरूक करना है और मताधिकार द्वारा निकम्मी सरकार को पद से हटाने का भी अधिकार प्राप्त है।

सतर्क व समृद्ध भारत की ओर बढ़ते कदम :

सपने देखना अच्छी बात है और खुली आँखों से सपने देखना और भी अच्छी बात है। सतर्कता का अर्थ है सरकारी संस्थाओं की कार्यशीलता को प्रभावी बनाने हेतु त्वरित कारवाई को सुनिश्चित करना। भारत की आधी आबादी युवा वर्ग है युवा वर्ग को जागरूक बनाना बहुत ही आवश्यक है आज सीमाओं पर तैनात जांबाज सैनिकों की सतर्कता व जागरूकता के कारण ही हम सुरक्षित हैं। भारत सरकार की नीतियों का कार्यान्वयन की समीक्षा आज भारत की जनता भी करती है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत के हर प्रान्त व राज्य को जोड़ने का प्रयास हो रहा है। विकास की नीति जिसमें "सबका साथ सबका विकास" को अपनाया जा रहा है औद्योगिक, बैंकिंग व कृषि के क्षेत्र में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो व भारत समृद्ध बने। भारत के गरीब वर्ग की गरीबी को दूर करने के लिए "जन धन योजना", "किसान विकास योजना" आदि चलाये

जा रहें हैं बेरोजगारी को दूर करने के लिए "Make in India", "Skilled India" आदि योजना चलाये जा रहें हैं ताकि युवा वर्ग को रोजगार मिले सर्वशिक्षा अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के द्वारा शिक्षा के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है भारत के लोगों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान दिया जा रहा है विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है ताकि भारत की सकल आय बढ़े ये सभी समृद्धता की ओर भारत द्वारा किये जा रहे प्रयास हैं।

निष्कर्ष:

भारत को सतर्क व जागरूक बनाने के लिए हर नागरिक का व्यक्तिगत योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें देश को सतर्क व जागरूक बनाने के लिए सरकार पर निर्भर नहीं रहना चाहिए हमें छोटे-छोटे प्रयास करने होंगे, छोटे छोटे कदम उठाने होंगे। सबसे पहले खुद को ईमानदार बनाना होगा, तभी भारत से हर प्रकार की बुराइयाँ जैसे भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, आतंकवाद, घूसखोरी, जमाखोरी इत्यादि समाप्त होंगे।

**एक कदम मैं चलूँ, एक कदम तू चल,
जाति धर्म व पंथ के मतभेद को भुलाकर
एक कदम सब चलें सतर्कता के उसूलों पर।**

अब हमारा एक ही सपना,
आत्मनिर्भर हो भारत हमारा।



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



गिराज सिंह

उपप्रबंधक (यांत्रिक)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

सलाल पावर स्टेशन

प्रस्तावना : सतर्कता को अपनाना है, भारत को सतर्क और समृद्ध बनाना है।

परिचय: भारत सरकार द्वारा हर वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। इस वर्ष भी 27 सितंबर से 02 अक्टूबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह हर्षोल्लास व उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

सतर्कता का अर्थ: सतर्कता का अर्थ है कि देश का हर नागरिक हर विषय के प्रति जागरूक हो। और अपने दैनिक कार्यों का निष्पादन सतर्क रह कर कुशलता पूर्वक ईमानदारी से करें। ताकि भविष्य में होने वाली परेशानी से बचा जा सके। क्योंकि जो व्यक्ति सतर्क एवं जागरूक रहता है उससे गलती होने की संभावना बहुत कम रहती है।

किसको सतर्क रहना है और किससे सतर्क रहना है :-

जब बात सतर्कता की आती है तो सवाल उठता है कि सतर्क किसको रहना है और किससे सतर्क रहना है। सर्व प्रथम तो स्वयं ही सतर्क रहना है अपने प्रति, अपने कार्यों के प्रति, अपने स्वास्थ्य के प्रति।

स्वास्थ्य का ध्यान रख, यह पूंजी विशाल है।
मन को साफ रख, विचारों का कमाल है।।
ईमान को न बेच, यह जीवन की ढाल है।
राजा भी सतर्क हो, अधिकारी भी सतर्क हो।।
सेना भी सतर्क हो, प्रजा भी सतर्क हो।
सत्य का साथ हो, बेतुकी न कोई तर्क हो।।

सीमा पर हमारे जवान सतर्क हैं तभी हम चैन से सो पाते हैं जवानों की सतर्कता का पड़ोसी मुल्कों में भी भय व्याप्त है क्योंकि हमारी सेना सतर्क है। हमारे देश का किसान भी सतर्क रहना चाहिए। खेत में कितना खाद, बीज डालना है इतना भी उसे ज्ञान होना चाहिए। सरकारी योजनाओं के प्रति भी जागरूकता जरूरी है।

आज विश्व एक उपभोक्ता बाजार के रूप में उभर रहा है। अतः हमारे क्रेता- बिक्रेता सभी सतर्क रहेंगे तो अपने अपने हक में अधिक लाभान्वित होंगे। हमें कुछ भी क्रय करने से पहले उत्पाद की गुणवत्ता की जानकारी भी होनी चाहिए। क्रेता इतना सतर्क हो कि भुगतान से पहले वजन व मूल्य की जाँच

कर ले। अस्पताल जाने से पहले भी हमें सतर्क रहना है क्योंकि आजकल भगवान के रूप में भेड़िये बैठे हैं। हो सकता है कि कोई गुर्दे ही निकाल कर बेच दें और आपको खबर भी न लगे। एक सतर्कता है जो हमें बड़ी बड़ी मुसीबतों से बचा सकती है।

जब भी सतर्कता व ईमानदारी की बात हो, तो सबसे पहले अपने ही आचरण में धरण करने की आवश्यकता है। हम सरकारों को दोष देते हैं कि वह कुछ नहीं करती किन्तु इसमें दोष किसका है। सिर्फ हमारा क्योंकि हमने सतर्क रह कर वोट नहीं दिया। हमने वोट दिया अपनी जाति व धर्म के नेता को चाहे वह कितना भी अधर्मी हो। जाने अनजाने में हम आपराधिक प्रवृत्ति के नेताओं को चुन लेते हैं। जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है और देश पतन की ओर चला जाता है। इसलिए हमें सतर्क रह कर अच्छे आचरण वाले, योगी व शिक्षित उम्मीदवार को ही वोट देना चाहिए।

जनता भी सतर्क हो, नेता भी सतर्क हो।

पक्ष भी सतर्क हो, विपक्ष भी सतर्क हो।।

सतर्कता व समृद्धि में संबंध

सतर्कता व समृद्धि का एक बहुत ही गहरा संबंध है। सतर्क रह कर बहुत से नुकसान से बच सकते हैं। जब किसान अपनी फसल को बेचने मंडी में जाते हैं तो वहाँ बैठे आढतिये पलक झपकते ही चालाकी से फसल की तौल ही कम कर देते हैं। यदि उस समय किसान सतर्क नहीं रहा तो भारी नुकसान हो सकता है। अतः सतर्कता का समृद्धि से सीधा संबंध है।

उपसंहार

“सतर्क रहेगा भारत तो समृद्ध रहेगा भारत।”

सतर्कता हर समय हर जगह आपके ही पक्ष में कार्य करती है। यदि देश का हर नागरिक सतर्क रहेगा तो भ्रष्टाचार मिटेगा और भ्रष्टाचार मिटेगा तभी समृद्ध भारत बनेगा। संविधान विरोधी कार्य करने वालों पर शिकंजा कसने की भी आवश्यकता है। यह तभी हो सकता है जब हमारे देश का हर नागरिक जागरूक और सतर्क हो।

जय संविधान। जय भारत।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



बिनीत साहू

उप-प्रबंधक (सेफटी)

तृतीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
सलाल पावर स्टेशन

Introduction: In India, public sector unit/ undertakings have prominent role in economic and society development of the country unlike private sectors, PSU have public tax payers' money. So PSUs are accountable to the public money. In PSU, system needs to work unlike pvt. Sector where individual works. So Vigilance has important role in all Govt. sectors.

CVC: Chief Vigilance Commission is an open Government body for vigilance purpose. It is established in 1964. Every year, the vigilance awareness week is observed from 27th October to 2nd November 2020. The theme of this year is vigilant India, Prosperous India. Central Bureau of Investigation Department is also arranging and hosting a National conference on "Anti corruption and vigilance" where Prime Minister Narendra Modi inaugurated the programme and send message on vigilance. Corruption is major hindrance to the progress of the country. So vigilance is very essential to all officers and work to ensure as per prescribed manner or not. The vigilance week campaign affirms to the promotion of integrity and probity in public life through citizen participation.

Campaign: This campaign describes three important activities thorough all Govt. officials or PSUs.

01. Use of organizational website for dissemination of employee or customer related information through redressal of grievance

02. Conduction internal activities (House Keeping) inside the organization and out reach activities through agency related to the functions of the organization and spreading awareness.
03. Spreading awareness through digital medicine---SMS, text Message What sap. Facebook, and other electronic media.

The Central Vigilance Commission emphasize the transparency in all activities. These are as mentioned below:

01. Payment to the outsourced worker
02. House allotment
03. Update or digitization of property
04. Condemnation of furniture
05. Weeding out of old records

Structure of Central Vigilance Commission.

As Central Vigilance Commission is an autonomous body. Chaired by one Chairman-Chief Vigilance Commissioner Two Members-Two Vigilance Commissioners.

Structure of CVC:

It has a Secretariat along with two wings

01. CTE: Chief Technical Examiners- This wing is dedicated to technical examination.
02. CDI: Commissioner for Departmental

Inquiries. This wing is dedicated to departmental inquiries of Govt. organization. In every PSU and Govt. offices there is a poor department of Vigilance as they report to the Vigilance dept. and keep an eye on civil works going on in sites.

Recent Scams in India:

01. Vijay Mallya Scam-Rs.9000/-Crore.

There was a time be known as king of good times but now-a-day the time is not good for him. He is Vijay Mallya he absconded India and became refugee in UK. He took loan for improvement for falling company KING FISHER. But could not repay of worth Rs.9000 Crore.

02. Coal Gate Scam: Rs.1.86 lakh crore.

This Scam is political scam. It is found during the "Comptroller Audit General" CAG Audit. It found illegal allocation of 194 coal gate during UPA Govt.

03. 2G Spectrum: Rs.1.76 lakh crore

It is also found during UPA Govt. by CAG audit. It is illegal allocation 2G frequency distribution to private Mobile companies. The difference between money could be collected or what was collected of Rs.1.76 lakh crore.

04. Commonwealth Game Scam-1.70 lakh crore.

As the commonwealth game were held in India, the Indian player did not find facility instead. The Chair person Suresh Kalmadi was accused for this of approx. 1.70 lakh crore.

05. Bofors Scam Rs.64 crore

It is weapon- deal with India and Swedon for facilitating armour to Indian Army. It is found involvement of Army official and ministers.

06. AgustaWestland deal. Rs.114 crore.

This scam is related to purchase of 20 nos. of Chopper for VVIP like president, Prime Minister and other Ministers.

Some of the quotes on Vigilance

01. "Let the eye of Vigilance not be closed" by Thomas Jefferson.
02. When good people in our society cease vigilance and struggle the bad men prevails. By Pearl. S. Buck.
03. Eternal Vigilance is the price of the democracy by Thomas Jefferson.
04. Vigilance is not only price of liberty but also success of any sort. By Henry Beach.

LAYMAN's THINKING:

Many people thinks vigilance if for inquiry and investigating. But that is not true. To only punish people and without correcting system and attending prevention is just like pumping water in pipe without arresting leakage so prevention of corruption is very important rather than `only postmortem of all scam only to get prosperous India. India has diversity in it culture and tradition. The attribution for having good vigilance of human right commission are as below:

- 01 Transparency
02. Responsibility
03. Accountability
04. Responsive to needs of the people.

Conclusion: Vigilance is very essential activities in all section. If we all come together and pledge not to take bribe and not to allow to take anyone bribe then only we can get a prosperous India. In this campaign also, CVC request each Govt. employee as well as people connected to the operation or function of the organization like. Contractors, vendor, supplier and dealers.

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



अमृता

धर्मपत्नी अनूप कुमार, वरिष्ठ पी.आर.टी.

प्रथम पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020
बैरास्थूल पावर स्टेशन

सारे जग में अजब निराली,
भारत मां की गाथा है।
सतर्कता में समृद्धि है,
अपनी गौरव गाथा है।
गंगा की कल कल सीने में,
चंदन सी महक पसीने में।
मन में मुरली की मधुर ताने,
तन पावनता का दिव्य दान।
वाणी में कबीर की साखी,
हाथों में रामायण राखी।
मन में गीता का दिव्य ज्ञान,
और कर्मयोग जीवन विधान।
दिन पावन रात दिवाली है,
माटी की गंध निराली है।
जिनका इस माटी से नाता,
उनका तन-मन यह नित गाता।
सागर जिसके चरण पखारे,
दिव्य हिमालय माथा है।
सारे जग में अजब निराली,
भारत मां की गाथा है।
सतर्कता में समृद्धि है,
अपनी गौरव गाथा है।
जो कहते हैं भारत दीन-हीन,
कायर कपूर लज्जा विहीन।
उनको इतिहास बताती हूं

गौरव झांकी दिखलाती हूं।
जब जग पर थे तम के साये,
हमने प्रकाश के गुण गाए।
जब तप ज्ञान को पहचाना,
जग ने तब विश्व गुरु माना।
आध्यात्म दिया विज्ञान दिया,
माधव बन गीता ज्ञान दिया।
हम अर्थशास्त्र के अन्वेषक,
ज्योतिष योग के उदघोषक।
हमने ही शून्य का ज्ञान दिया,
और दिव्य वेद बरदान दिया।
नालंदा हो या तक्षशिला,
मन को शिक्षा से दिया मिला।
ऋषियो मुनियों के अनुगामी,
मानवता के हम सहगामी।
संस्कारों के हम चिर साधक,
मां परम शक्ति के अराधक।
सेवा सत्कार समर्पण है,
मानवता हित सब अर्पण है।
जिसके आंचल में पलने को,
लेता जन्म विधाता है।
सारे जग में अजब निराली,
भारत मां की गाथा है।
सतर्कता में समृद्धि है,
अपनी गौरव गाथा है।

पहले हम बनें खुद ईमानदार। तभी देश से दूर होगा भ्रष्टाचार।।
ईमानदारी है सबसे मूल्यवान। अच्छे इंसान की है यह पहचान।।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



अंकिता गुप्ता

धर्मपत्नी महेश कुमार, उप प्रबंधक

द्वितीय पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020

बैरास्थूल पावर स्टेशन

1. सतर्कता के हैं तीन नियम सचेत, सावधान और होशियार, इनको जो अपनाएगा, समझो उसकी नैया पार।
2. सतर्कता अपनाकर ही देश विकास की ओर बढ़ेगा,
नियम विरुद्ध सभी कामों पर तभी तो अंकुश लगेगा।
3. बचपन में ही रखनी होगी हमें सतर्कता की नींव, तभी तो देश समृद्ध होने का सपना हो पाएगा सजीव।
4. शिक्षा के क्षेत्र में अगर हम हो जाएं सतर्क, तो ही देश में प्रगति होगी, दिखेगा अनोखा फर्क।
5. क्यों आज विश्व में कोई चमत्कार नहीं है, हर एक के पास कार हैं परन्तु अविष्कार नहीं है, क्योंकि आज सतर्कता और ईमानदारी का कोई दावेदार नहीं है।
6. हर इंसान सतर्क होकर अपनी व्यक्तिगत तरक्की तो कर रहा है, पर देश की तरक्की का कोई विचार नहीं है, क्योंकि आज सतर्कता और ईमानदारी का कोई दावेदार नहीं है।
7. क्यों बच्चों के मन में कुछ सीखने की जिज्ञासा नहीं है, बस नम्बर आए अच्छे और पढाई से कोई आशा नहीं है, क्यों शिक्षा के साथ अध्ययन पर कोई ध्यान नहीं है, क्योंकि आज सतर्कता और ईमानदारी का कोई दावेदार नहीं है।
8. आज की नारी सशक्तिकरण का दावा दुनिया पर है भारी, क्या बस कह देने मात्र से पूरी हो गई जिम्मेदारी, क्यों आज महिला सुरक्षा पर कोई विचार नहीं है, क्योंकि आज सतर्कता और ईमानदारी का कोई दावेदार नहीं है।
9. भ्रष्टाचार मिटाएंगे हम यही बात करते हैं, यही बात करते हैं, यही संवाद करते हैं, फिर क्यों समाज में कोई सुधार नहीं है, क्योंकि आज सतर्कता और ईमानदारी का कोई दावेदार नहीं है।
10. रामायण और महाभारत भी हमें सतर्कता का पाठ पढ़ाते हैं, सतर्कता के नियमों का उल्लघन, अंत में विनाश कर जाते हैं।
11. रहते दशरथ सतर्क तो क्यों श्रवण पर बाण चलाते, क्यों अंधे माँ-बाप मरते मरते दशरथ को श्राप दे जाते।
12. वही श्राप जिसके कारण राम गये बनवास में, देह त्याग दी दशरथ ने बेटे से मिलने की आस में।
13. रहती केकई सतर्क अगर, मंथरा की बातों से, तो ना दुखता दिल दशरथ का, उसके शब्दों के आघातों से।
14. क्यों सतर्क रही ना सीता, क्यों लांघी थी लक्ष्मण रेखा, उल्लघन रेखा कर पछताई, फिर परिणाम सबने देखा।
15. सतर्क किया था रावण को कई बार उसके परिजनों ने, परन्तु उसे समझ ना आया, आग लगा ली जीवन में।
16. राम की सतर्कता और सहनशीलता ने उन्हें, मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनाया, सदा सत्य का साथ निभाना, दुनिया को यह समझाया।

17. सतर्क किया था कृष्ण ने भी दुर्योधन को बारम्बार, परन्तु भ्रष्ट दुर्योधन ने लालच का साथ न छोड़ा और युद्ध में हुई हार।
18. सतर्कता के नियम सतयुग से कलयुग तक हैं एक, जो जीवन में लाए सतर्कता वह खुशियां पाएं अनेक।
19. आज के युग में भी सतर्कता उतनी ही है जरूरी, पेट न भरा कभी इच्छाओं का, लालच की भूख हमेशा रही अधूरी।
20. बेटी बचाओं, बेटी पढाओ का नारा सतर्कता का है उदाहरण, भ्रूण हत्या ना होने दो बेटी की, कुछ ऐसा करो जतन।
21. तन की सतर्कता, मन की सतर्कता, धन की सतर्कता रखो तुम, शुद्ध भोजन, शांत मन और सदा संतुष्ट रहना सीखो तुम।
22. सतर्क रहे हर बच्चा—बच्चा सतर्क रहे हर बुजुर्ग, नौजवान, कोरोना को हराने का बस सावधानी ही है समाधान।
23. सतर्कता ही आपके जीवन का सच्चा साथी है, वरना एक गलती जीवन को बर्बाद करने के लिए काफी है।
24. इस जमीन पर भ्रष्टाचार की नाकाम कोशिश हो जाएगी, जब सतर्कता की ताकत उसे हर क्षेत्र में हराएगी।
25. सजग, सतर्क, सावधानी की जीवन शैली को अपनाकर, कर्म किये जा हर पल तूं, देश समृद्धि की जोत जलाकर।

लक्ष्य

सिपाही मरते है देश के लिए,
करते है बलिदान।
गरीब मरते हैं खाने के लिए,
लगा देते है जी जान।
हम लोग मरते है पैसों के लिए,
स्वार्थ में लिप्त हो, रहते है परेशान।
आतंकवादी मरते हे किसके लिए,
रहते है खुद अंजान।
फिर भी न जाने क्यों करते हैं,
खुद को कुर्बान।।
इतनी गुजारिश है सबको,
सतर्कता में रहना है आपको।
अपना कर्तव्य करें निष्ठा से,
सदा सुखी रहें मन से।



सतर्क भारत, समृद्ध भारत



रुचि सक्सेना

धर्मपत्नी अनुज सक्सेना, वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत)

तृतीय - कविता वी ए डबल्यू 2020

बैरास्थूल पावर स्टेशन

मेरा ये समृद्ध भारत, मेरा ये सतर्क भारत।
सदा खुशहाल रहे भारत, सदा बेमिसाल रहे भारत।
मेरा ये समृद्ध भारत, मेरा ये सतर्क भारत।

राफेल जैसे उपकरणों से लैस, हम ना किसी से कम,
है मेरा समृद्ध भारत, है मेरा सतर्क भारत।

गंगा, जमुना जैसी जीवन दायिनी नदियों से प्रवाहित,
विशाल हिमालय की श्रृंखलाओं से सदा रहे सुरक्षित,
अनगिनत लड़ाइयों से निडर लडा है ये भारत,
ये मेरा समृद्ध भारत, ये मेरा सतर्क भारत।

भुखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार पर नित लगा लगाम,
नई चिकित्सा प्रणालियों से करी रोगों की रोकथाम,
नए युवा की सतर्कता, बुद्धिमत्ता से पाएगा नए मुकाम,
ये मेरा समृद्ध भारत, है मेरा सतर्क भारत।

भिन्न धर्म जहां बने हैं एक माला के मोती,
अनेक बोलियां मिठास के हैं रस घोलती।
जहां वीरों की जन्मभूमि दुश्मनों को पीठ ना दिखाती,
ऐसा मेरा समृद्ध भारत, ऐसा मेरा सतर्क भारत।

आज सब पर कोरोना की पड़ी है भारी मार,
दुश्मन भी आंखें दिखा रहा सीमा पार,
सर्वराष्ट्र एक हो मिटा दे हर बीमारी,
हर बुराई, हर दुश्मनी
करे स्वच्छ भारत का सपना साकार,
ऐसा बने मेरा समृद्ध भारत,
ऐसा बने मेरा सतर्क भारत।

हिंदु मुस्लिम, सिख, ईसाई का अद्भुत हैं मिलाप,
राम, साई, कबीर, गुरु गोबिंद का हो सदा ही जाप,
मुसीबत पड़े, मिल करे मुकाबला भूलकर सारे संताप,
ऐसा मेरा समृद्ध भारत, ऐसा मेरा सतर्क भारत।

आओ सब मिल इसे और भी समृद्ध बनाएं,
आधुनिक सोच और पौराणिक संस्कृतियों का मेल सजाएं,
नवीन विचारों की सोच समझ से और भी सतर्क हो जाएं,
ये मेरा समृद्ध भारत, है मेरा सतर्क भारत।

एकता, अहिंसा, सद्भाव का है सुंदर यहा समागम,
सरदार जी की प्रतिमा को विश्व ऊंचाई पर ले गए हम,

हर इंसान में हो सच्ची ईमानदारी। हर एक व्यक्ति की है यह जिम्मेदारी।।
ईमानदारी है देश का प्राण। होता इसके बिना देश निष्प्राण।।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



रमेश कुमार
वरि. प्रबंधक (सिविल)

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
बैरास्थूल पावर स्टेशन

“जन-जन का यही हो नारा,
सतर्क व समृद्ध हो देश हमारा”

परिचय:- जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी देश को समृद्ध बनाने के लिए उस देश की जनता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जो भी हमारे सामने आयेगा वह वहां की जनता की मेहनत व निष्ठा का परिणाम होगा। प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति सतर्क व प्रतिबद्ध होना चाहिए।

सतर्क व समृद्ध भारत का अर्थ:-

सतर्कता का अर्थ है विशेष रूप से कर्मियों और सामान्य रूप से संस्थानों की दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिए स्वच्छ व त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई सुनिश्चित करना। क्योंकि यह अक्सर देखा गया है कि जो समाज या देश जागरूक और सतर्क नहीं होता है तो उसे बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। और जागरूक जनता होने पर देश तरक्की के रास्ते पर चल पड़ता है। हमारा भारत पूरी दुनिया में एक प्रसिद्ध देश है। यह दुनिया भर में अपने महान सांस्कृतिक और पारम्परिक मूल्यों के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त भारत 'विविधता में एकता' कहलाने वाला महान देश है, क्योंकि कई धर्मों, जातियों, संस्कृति और परंपरा के लोग एकता के साथ यहां रहते हैं।

सतर्क व समृद्ध भारत : एक अभियान

भारत देश को जागरूक एवं समृद्ध बनाने के लिए केन्द्रीय सतर्कता आयोग के द्वारा हर वर्ष अक्टूबर के अंतिम सप्ताह को 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के रूप में

मनाया जाता है। इसको मनाने का यह कारण है कि सरदार पटेल जी का जन्म 31 अक्टूबर को हुआ था। उनका भारत को एकत्रित करने और जागरूक करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सतर्क व समृद्ध भारत के निर्माण के लिए केन्द्रीय सतर्कता आयोग की अहम भूमिका होती है। भ्रष्टाचार से लड़ने और लोक प्रशासन में ईमानदारी सुनिश्चित करने के लिए 'केन्द्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम-2003 के अंतर्गत देश में लाया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सतर्कता आयोग अपनी बहुत सी गतिविधियों के साथ भ्रष्टाचार मुक्त शासन प्राप्त करने की नीति के प्रति युवाओं को भी जागरूक करने का प्रयास करता है।

इसलिए इस देश के प्रत्येक नागरिक को भी भ्रष्टाचार मुक्त समृद्ध भारत बनाने के लिए सतर्क रहना चाहिए तथा अपने आस-पास पनप रहे भ्रष्टाचार को सतर्कता विभाग, जो भी आपके निकट हो, उनके संज्ञान में लाना चाहिए।

उपसंहार

भ्रष्टाचार एक ऐसी कुरीति है जो समाज और देश के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। यदि हमें ऐसी कुरीति से अपने समाज से मुक्त करना है तो हमें मिलजुल कर प्रयास करने की जरूरत है। सतर्कता तथा जागरूकता की शुरुआत हमें खुद से ही करनी होगी तभी जाकर हमारा देश 'सतर्क भारत समृद्ध भारत' बनेगा।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



अनूप कुमार

वरिष्ठ पीआरटी

द्वितीय पुरस्कार- निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020

बैरास्थूल पावर स्टेशन

प्रस्तावना:- सतर्कता और समृद्धि का अन्योन्याप्रय संबंध है। सतर्कता हमें आगामी खतरों से बचाती है, वर्तमान समस्याओं को हल करने में मदद करती है और समृद्धि लाती है। कश्मीर में सतर्कता हमें आतंकवाद से लड़ने में मदद करती है, घाटी में शांति स्थापित करने में मदद करती है और शांति समृद्धि को लेकर जाती है। 'अटल टनल' का निर्माण सतर्कता की निशानी भी है और समृद्धि का रास्ता भी। पूर्वोत्तर राज्यों में चौड़ी सड़कों का निर्माण, डैम का निर्माण इसी तथ्य को पुनर्स्थापित करता है।

इस कोरोना नाम की महामारी ने पूरी दुनिया में उथल-पुथल मचा रखी है। लेकिन इसने हमारी सतर्कता के स्तर को और भी उंचा कर दिया है। हमारा बार-बार साबुन से हाथ धोना, सेनेटाइज़र का प्रयोग करना, मास्क पहनना, दो गज की दूरी बनाए रखना, यह सब ना केवल हमें इस बीमारी से बचाता है बल्कि इस खतरनाक संक्रामक महामारी का वाहक बनने से भी बचाता है। कोरोना संकट के शुरुआती दौर में ही इसकी गंभीरता को भापकर केन्द्र सरकार द्वारा देशव्यापी लॉकडाउन लागू करने के कठिन फैसले ने दुनिया में भारत को प्रशंसा का पात्र बनाया और इसके कारण लाखों जाने बचाई जा सकी। हमारी सरकार की सतर्कता का एक और बानगी देखने को मिली जब दुनिया भर की बड़ी आर्थिक महाशक्तियां इस संकट से दो-चार हो रही थी तब भारतीय प्रधानमंत्री जी की दूरदर्शिता ने इस आपदा को अवसर में परिवर्तित किया और भारत को दुनिया के मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत करते हुए दुनिया भर को आवश्यक दवाएं उपलब्ध करवाई।

जब कभी सतर्कता में चूक होती है तब बड़ी समस्याएं सर उठाने लगती है। कहा भी जाता है "सतर्कता हटी, दुर्घटना घटी"। ठीक ऐसा ही देखने को मिला जब देशव्यापी लॉकडाउन के कारण प्रवासी मजदूरों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। किन्तु एक ऐसा भी वाक्या इस बीच हुआ जहां सतर्कता की मिसाल देखने को मिली। LAC पर तैनात हमारे वीर जवानों ने अपनी सतर्कता के

कारण भारतीय सीमा में चीनी घुसपैठ को न केवल रोका बल्कि उसका मुंहतोड़ जबाब देते हुए सीमा के उस पार धकेल दिया।

कोरोना के इस दौर ने पूरी दुनिया में अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुँचाया। यहाँ तक कि यदि हमारी सरकार सतर्क न हुई होती तो भुखमरी व्यापक समस्या हो चुकी होती, किन्तु हमारी सरकार ने सतर्कता से समृद्धि की ओर जाने का रास्ता तैयार किया। एक ओर गरीबों के लिए मुफ्त अनाज देकर यह सुनिश्चित किया कि देश में कोई भूखा न सोए तो दूसरी ओर गरीबों के खाते में रुपये 500 प्रतिमाह की दर से आर्थिक सहायता पहुँचा कर अत्यन्त सराहनीय कार्य भी किया। अस्पताल की लचर व्यवस्था को बहुत ही कम समय में सुदृढ़ कर दिया गया। अनेक महत्वपूर्ण योजनाएं लागू करने से आने वाले समय में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध होंगे। ताकि अलग-अलग स्तर के लोगों को समृद्धि की ओर अग्रसर किया जा सके और वे भारत की समृद्धि में निर्णायक साबित हो सके।

उपसंहार :-

यदि भारत को हमें समृद्ध बनाना है तो सरकार के इन प्रयासों में हमें सक्रिय रूप से हिस्सा लेना होगा। सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन और आम जनता की इन योजनाओं में सक्रिय भागीदारी के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा होती है-भ्रष्टाचार। सरकार ने इसी बाधा को दूर करने के लिए सतर्कता आयोग की स्थापना की है। कोई भी आम आदमी बिना अपनी पहचान सार्वजनिक किए किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार की सूचना सरकार तक सतर्कता आयोग में अपनी शिकायत दर्ज करा कर पहुँचा सकता है। इसकी सुविधा के लिए सरकार ने प्रत्येक कार्यालय में एक सतर्कता अधिकारी की भी नियुक्ति की है। तो आइए हम स्वयं भी सरकार की इन योजनाओं का लाभ उठाएं और दूसरों को भी प्रेरित करें और भारत को सतर्क एवं समृद्ध बनाने में अपना योगदान दें।

"जन-जन का यही है नारा, सतर्क व समृद्ध हो देश हमारा"

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



अनिता अरोड़ा
वरि. पीआरटी

तृतीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
बैरास्यूल पावर स्टेशन

आज जन-जन को यह विचार फैलाना है।
सतर्क भारत, समृद्ध भारत को आधार बनाना है।

प्रस्तावना :- आज का ताकतवर भारत एक समृद्ध होती अर्थव्यवस्था के साथ-साथ वैश्विक पटल की गतिविधियों को संचालित करने की ओर अग्रसर देश है। बहुआयामी गतिविधियों में आई यह तीव्र वृद्धि अपने साथ-साथ भ्रष्टाचार के खतरे में भी वृद्धि करती है। भ्रष्टाचार देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विकास की ज्ञात बाधाओं में सबसे बड़ी बाधा है। इस समस्या के क्या-क्या कारण हो सकते हैं यह सबको ज्ञात है वैसे ही सतर्क होना इसके लिए जरूरी है।

सतर्क होना क्या है :- इसका आशय आपके आसपास के परिवेश में बदलती परिस्थितियों के लक्षणों के अनुसार प्रतिक्रिया करने के लिए मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार रहना है। अपने आसपास होने वाली घटनाओं के प्रति आपकी समाज की/देश की एक सजग तथा तर्कशील प्रतिक्रिया का प्रभाव आपके परिवार; समाज तथा वैश्विक पटल पर एक अमित छाप छोड़ता है जोकि देश की समृद्धि में सहायक होती है।

कैसे रहे सतर्क और इसका समृद्धि पर प्रभाव:- (क) स्वयं के स्तर पर :- जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी और पारदर्शी रीति से किया गया आपका आचरण आपको सतर्क बनाता है तथा इसका सकारात्मक प्रभाव आपके कार्यक्षेत्र में छोड़ता है जैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का एक नारा "ना खाउंगा, न खाने दूंगा" का ईमानदारी और पारदर्शी रीति से किया कार्य देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से समृद्ध कर रही है वही पूर्व के अखवारों की घोटालों के नकारात्मक छाप को भी धीरे-धीरे मिटा रही है। अर्थात हम तरक्की की ओर जा रहे हैं।

(ख) समाज/संस्थान/परिवार के स्तर पर :- किसी समाज, परिवार के कार्य का मुख्य उद्देश्य जनहित और समानता वाला होना चाहिए। इसका पालन सबको सतर्क और समृद्ध बनाता है। इससे समाज, परिवार में एक अच्छे वातावरण एवम् कर्मठता का निर्माण होता है। इसके लिए गुरुद्वारे की लंगर प्रथा हमें समानता के प्रति सतर्कता का उदाहरण है जो समाज को मानसिक समृद्धि की ओर अग्रसित करती है।

(ग) देश के स्तर पर :- ज्ञान, विज्ञान, पर्यावरण, सुरक्षा अर्थव्यवस्था, नागरिकों की सुरक्षा आदि के प्रति सतर्क होना देश की दशा और दिशा को बदल देती है। कुछ समय पहले भारतीय जाबांज पायलट अभिनंदन अपना पराक्रम दिखाते हुए दुश्मन सीमा में प्रवेश कर गए थे। देश की सतर्क प्रतिक्रिया व व्यवस्था तथा कर्मठ कार्य-वातावरण ने देश के मान सम्मान की रक्षा कर उसे सम्मान सहित वापिस देश लाया। जिससे देश के समारिक एवम् वैश्विक समृद्धि में सतर्कता का अमूल्य योगदान रहा।

उपसंहार:- सतर्क भारत ऐसा समृद्ध भारत जहाँ के नागरिक अपव्यय न करे, समानता का पालन करते हुए देश का आर्थिक, सामाजिक व वैश्विक उत्थान करे व हर भ्रष्टाचारी के लालच को सतर्कता से नकारे तथा दंडित करे। हर कोई इतना सजग हो जिसे देख अन्तः स्थल कहे...

“तू भारत का गौरव है
तू जननी सेवार्त है।
सच कोई मुझ से पूछे
तो तू ही तू सतर्क, समृद्ध भारत है”

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



कुमारी तनवी

पुत्री धर्मेन्द्र कुमार

प्रथम पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020

बैरास्थूल पावर स्टेशन

“सतर्क भारत समृद्ध भारत यह स्वप्न सच कर दिखाना है,
भारत को सर्वोपरि बनाकर विश्व गुरु बनाना है ।”

भारत इस नाम में कुछ जादू सा मुझको लगता है,
उमंग, प्रगति और सुहनरा आसमान
जैसे इसमें बसता है।

इंडिया भी भारत ही है यह बात हर कोई समझता है,
इंडिया तो मेरी जान है पर इंडिया से ज्यादा भारत
हममें अपनापन जगाता है।

Modernisation के नाम अपनी संस्कृति से
शायद हो रहे थे हम जुदा,
शायद यही कारण से नहीं मिल पा रही थी
अधिक सफलता।

आंखों से पट्टी हटी हकीकत का अब
जो लग चुका है पता,

देखो कैसे मेरा इंडिया फिर भारत है बन रहा।
शिक्षण में भी देखो कैसे अतीत याद हमको आ रहा,
IIM में दास-बोस सभी विद्यार्थियों को है
पढाया जा रहा।

राजनीति, विज्ञान में फिर चाणक्य ही परचम फहरा रहा,
देखो कैसे मेरा इंडिया फिर भारत है बन रहा।

मनोरंजन के विषय में देखो
कैसा सांस्कृतिक भाव है आ रहा,

नृत्य हो या संगीत भारतीय, वह भी दुनिया में छा रहा,
कला की इस राह ने फिर ऐसा U-turn है मारा,
यह क्षेत्र भी इंडिया को फिर भारत है बना रहा।

स्त्रियों ने कई परेशानियों और शोषण की पीड़ा है सही,
इस पर सीता जी स्वयं लक्ष्मण रेखा है खींच रही,
इस भारत में द्रोपदी भी ऐसे रूप में है दिख रही,

अब स्वयं कृष्ण बनकर वह अपने
सम्मान को है जीत रही।

अब फिर अभिमान के साथ दुनिया
इस बात को है देख रही,

कि कैसे इंडिया की मिट्टी फिर भारत में है मिल रही।

वे कहते हैं कि तंत्रज्ञान में भारतीय पीछे दिखते हैं
जरा सुन लो ऐसा कहने वालो NASA में सबसे
अधिक भारतीय ही टिकते हैं।

आयुर्वेद और योग का महत्व इंडिया में
फिर लौट कर आया है,
मेरे इस इंडिया ने धरती को फिर
एक बार भारत बनाया है।

जिन्होंने संस्कृत को अंग्रेजी में
Dead Language कहकर टाल दिया
आज उन्होंने ही अपने अभ्यासक्रमों में उसे
फिर से लाकर डाल दिया।

वेदों और उपनिषदों का महत्व इन्होंने अब जाना है,
बस अब स्वदेशी तत्वों को हमें अमल में लाना है।

मेरा इंडिया फिर से भारत धीरे ही
सही पर जरूर बनेगा,

फिर चीन क्या पाकिस्तान क्या यह तो
पूरे विश्व के परवान चढेगा।

बस यह देखना है कि मैं और आप
कितना हाथ बटाते हैं,

कितना योगदान हम सतर्क भारत बनाने में लगाते हैं।

सरहद पर फेंका जनून कैसे गली-गली में लाते हैं,
युवा शक्ति को प्रोत्साहन तो दे दिया अब कैसे कर्मों की
दिशा उन्हें बताते हैं।

Social Media बहुत हुआ दोस्तों मैदान
में दोस्ती बढ़ाएँगे,
दो दिन का जशन नहीं पूरे साल भारत

का मान बढ़ाएँगे।
बातें बहुत कर ली हमने अब हम यह
साबित करके दिखाएँगे।

अब इंडिया को फिर एक बार वही सोने की चिड़िया,
वही भारत बनाकर दिखाएँगे।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



कुमारी अपर्णा

पुत्री अनूप कुमार, वरि. पीआरटी

द्वितीय पुरस्कार - कविता वी ए डबल्यू 2020
बैरास्थूल पावर स्टेशन

“जन-जन का यही हो नारा,
सतर्क व समृद्ध हो देश हमारा”

अपराधी है कौन? दंड का भागी बनता है कौन?
कोई उनसे कहे कि पलभर सोचे रहकर मौन
यदि हम रहें सतर्क तो
समृद्ध भारत बनने से रोक सकता है कौन?
अपराधी है कौन? दंड का भागी बनता है कौन ?

आजादी हमको मिली जब थी आधी रात,
हुआ सवेरा ही नहीं क्या अचरज की बात।
हरा-भरा यह मुल्क था, कलियों पर मुस्कान
किसने कर डाला इसे, पतझड़ सा वीरान
दिल छलनी क्यों कर हुआ, क्यों जीना दुश्वार
कौन वतन के पतन का, असली जिम्मेदार
अब रह रह कर सताता, मुझको यही सवाल
तो मेरे इन सवालों का जवाब दे सकता है कौन ?

यदि हम रहें सतर्क तो
समृद्ध भारत बनने से रोक सकता है कौन ?
अपराधी है कौन? दंड का भागी बनता है कौन ?

कारगिल हो या गलवान, सेना दिखाती है अपना जुनून
हम लोगों की रक्षा हेतु, बहा देते हैं वे अपना खून

यदि वे सतर्क न रहे सीमा पर,
तो आंच आ सकती है हमारी भारत माँ पर
तो आज हम सब ने यह बात पहचानी,
कि सतर्क भारत ही है समृद्ध भारत की निशानी।
यदि हम रहें सतर्क तो
समृद्ध भारत बनने से रोक सकता है कौन ?
अपराधी है कौन? दंड का भागी बनता है कौन?

अरे भ्रष्टाचारियों कुछ तो सोचो,
अपने लिए नहीं बल्कि देश के लिए सोचो।
यही कुचल दो यहीं मसल दो,
मत बढ़ने दो भ्रष्टाचार का बेल
निर्मम जग के आघातों से बिगड़ जाएगा यह खेल।
सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर,
आज करें हम यह संकल्प
भ्रष्टाचार मिटाओ देश बचाओ,
नहीं दूसरा कोई विकल्प।
यदि हम रहें सतर्क तो

समृद्ध भारत बनने से रोक सकता है कौन?
अपराधी है कौन? दंड का भागी बनता है कौन ?

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



संजना सिंह

वरिष्ठ प्रबन्धक (पुस्तकालय)
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

प्रथम पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
निगम मुख्यालय

**“जब वक्त कठिन दौर से गुजर रहा होता है तो कायर बहाना ढुढ़ते
है जबकि बहादुर और साहसी व्यक्ति उसका रास्ता खोजते है”**

-सरदार बल्लभ भाई पटेल

किसी भी देश या समाज में व्यक्ति को अधिकार है कि उसे भ्रष्टाचार मुक्त ऐसी शासन व नागरिक व्यवस्था मिले जहाँ वह अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन कर सके। ऐसी शासन व न्यायिक व्यवस्था जिसमें भ्रष्टाचार का बोलबाला हो, वहाँ कोई भी व्यक्ति न तो उपलब्ध अधिकारों का उपयोग कर सकता है और न ही देश या समाज के विकास में अपना योगदान दे सकता है। इस तरह भ्रष्ट शासन व्यवस्था के कारण देश और व्यक्ति दोनों ही विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं। एक ओर तो भ्रष्टाचार के कारण देश के राष्ट्रीय चरित्र का हनन होता है, वहीं दूसरी ओर देश के विकास की समस्त योजनाओं का उचित पालन न होने के कारण जनता को उसका लाभ भी नहीं मिल पाता। जो लोग ईमानदार होते हैं, ऐसी व्यवस्था में उन्हें भयंकर मानसिक, शारीरिक, नैतिक, आर्थिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

भ्रष्टाचार ने सबसे ज्यादा गरीबों को प्रभावित किया है। गरीबों को मूलभूत सुविधाओं के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट बताती है कि सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने के लिए 10 में से 7 लोग रिश्वत देते हैं। इसके अलावा समस्त प्रकार के करों की चोरी के कारण भी देश को भयंकर आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार भ्रष्टाचार एक गंभीर अपराध है, जो देश के सामाजिक और आर्थिक विकास को कमजोर बनाता है। आज के समय में भ्रष्टाचार से कोई देश, क्षेत्र या समुदाय बचा नहीं है। यह दुनिया के सभी हिस्सों में फैल गया है। ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल 2019 रिपोर्ट के

अनुसार भ्रष्टाचार सूचकांक में भारत का 80वां स्थान है।

भ्रष्टाचार की इस विकराल समस्या के मूल में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, कानूनी एवं न्यायिक कारण जिम्मेदार हैं। यदि हम भ्रष्टाचार के प्रमुख कारणों का उल्लेख करें तो सामाजिक संसाधनों पर कब्जे की होड़, मानवीय दुशप्रवर्तिया (जैसे लोभ, लालच, अनैतिकता) राजनीतिक मूल्यों में गिरावट, भ्रष्टाचार निरोधक दुर्बल तंत्र, पारदर्शिता का अभाव, लम्बी, धीमी व पेचीदा कानून प्रक्रिया, नेता, मंत्रियों, उच्चाधिकारियों को मिले विशेषाधिकार का दुरुपयोग, जटिल चुनावी प्रक्रिया, कमीशन प्रथा, ईमानदार लोगों की उपेक्षा, भ्रष्टाचारियों को मिल रहा राजनीतिक व सामाजिक संरक्षण आदि अनेक ऐसे कारक हैं जो समाज में फैली भ्रष्टाचार व्यवस्था में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

लेकिन इन सब उपरोक्त कारकों के अतिरिक्त सबसे अहम बात यह है कि भ्रष्टाचार को लेकर हमारी संवेदना लगातार हल्की होती जा रही है। ईमानदारी को अब एक कोरा आदर्श माना जाने लगा है। ऊपरी कमाई को सामाजिक स्टेटस का तमगा खुलेआम दे दिया गया है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई पिता या भाई अपनी बेटी या बहन के लिए वर ढुढ़ने जाते हैं तो और बातों कि तरह यह सवाल उनके जेहन में नहीं उठता कि होने वाला वर ईमानदार है या नहीं, बल्कि इसके विपरीत यदि यह पता चले कि उसकी नौकरी में ऊपर की कमाई की संभावना है तो वे आश्वस्त ही होते हैं कि बेटी खाते-पीते घर में जा रही है। इस उदाहरण से हमें साधारण मध्यम वर्गीय समाज की मनोवैज्ञानिक सोच का पता चलता है

जो भ्रष्टाचार करने पर दिए जाने वाले दंड के प्रति कोई भय नहीं है, ना ही भ्रष्टाचार अपराध की श्रेणी में रख कर देखा जाता है।

फायरिंग, बलात्कार या हिंसा की घटनाएँ भी अब हम पर उस तरह से प्रभाव नहीं डालती जैसे पहले डाला करती थी। उसी प्रकार भ्रष्टाचार को लेकर भी हमारी संवेदना कुंद होती जा रही है। चार सौ करोड़ का आईपीएल घोटाला, 2-जी स्पेक्ट्रम घोटाला, आठ हजार करोड़ का राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, आदर्श सोसाइटी घोटाला, सीडबल्यूजी घोटाला हर रोज हमारा सामना नए-नए घोटालों से होता गया। भ्रष्टाचार जहाँ एक ओर देश के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है, आम लोगों में इस चिंता के प्रति संजीदगी उतनी नजर नहीं आती। जो लोग भ्रष्टाचार से प्रभावित होते हैं, वे भी अक्सर मिलने पर स्वयं भ्रष्ट बनने के लिए तैयार हो जाते हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ जो जनक्रोध दिखाई देना चाहिए, वह कहीं दिखाई नहीं देता। भ्रष्टाचार सर्वव्यापी और सर्वग्रासी बनता जा रहा है और एक कृत्रिम किस्म की लड़ाई उसके खिलाफ चलती रहती है। कभी सूचना के अधिकार के रूप में, कभी लोकपाल विधेयक के रूप में।

भ्रष्टाचार पर काबू पाने का कोई ठोस तरीका तो नजर नहीं आता, लेकिन इस दिशा में सतर्कता और जागरूकता से कुछ एहतियाती कदम उठाए जा सकते हैं। कानून बनाकर तो हम भ्रष्टाचार पर एक हद तक ही काबू पा सकते हैं, क्योंकि, रिश्वत लेना – देना अपराध की श्रेणी में आता है, दहेज के खिलाफ कानून बहुत पहले बनाया जा चुका है, पुलिस प्रशासन के पास एक मोटा लिखित संविधान है, कोर्ट, कचहरी है लेकिन तमाम जाँच एजेंसियाँ के रहते हुए भी भ्रष्टाचार की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगो का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख लोग ये कर सकते हैं: माता, पिता और गुरु

– डॉक्टर ए. पी. जे. अबदुल कलाम

कोई भी समाज अच्छे-बुरे, सही-गलत, सुंदर-कुरूप के बोध से चलता है। हमारी परंपरा, हमारी सांस्कृतिक विरासत हमारे अंदर मूल्यबोध का सृजन करती है। सही

गलत की इसी समझ को बाद में समाज के नियामक कानूनी शकल दे देते हैं। चोरी अपराध है, यह भावबोध पहले समाज के मन में घर करता है, तभी वह कानूनी शकल में भी प्रभावी होता है। ईमानदारी एक जीवन मूल्य थी, तथा इसका प्रतिलोभ भ्रष्टाचार एक अवमूल्य लेकिन समय बदलने के साथ, ईमानदारी जीवन मूल्य नहीं रही।

भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए लोगों का निर्भीक, साहसी, निडर व स्वयं ईमानदार होना अत्यंत आवश्यक है। भ्रष्टाचार के उन्मूलन से ही लोगों का व्यवस्था में विश्वास पुनः स्थापित किया जा सकता है। यह सोचना कि भ्रष्टाचारी संगठित है, ताकतवर है, अतः एक सामान्य नागरिक इनके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता, यह बात नितांत निरर्थक है। आवश्यकता है सामान्य नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की। व्यवस्था व समाज का निर्माण वहाँ के लोगों से ही होता है। यदि प्रत्येक नागरिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध सतर्क तथ सजग होना प्रारम्भ कर दे तो भ्रष्टाचार मुक्त समाज का स्वप्न साकार किया जा सकता है। दंड विधान के साथ-साथ जनता की सहभागिता भी भ्रष्टाचार दूर करने में आवश्यक है। देश की जनता भ्रष्टाचारियों की सामाजिक उपेक्षा एवं निंदा करे, इससे अवश्य उनपर अंकुश लग सकता है।

- अपने कार्य के लिए घूस देने की बजाए सूचना के अधिकार का उपयोग करें।
- भ्रष्टाचार में दोषी पाये गए नेताओं को जनप्रतिनिधित्व से बाहर कर देना चाहिए, और जनता उन्हें दुबारा चुनाव में हिस्सा न लेने दे।
- जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना की जाए तथा बच्चों को शुरु से ही अच्छे संस्कार दे, इससे शुद्धि करण का वातावरण तैयार करने में मदद मिलेगी।
- भ्रष्टाचार उजागर करने वाली संस्था या व्यक्ति को प्रशासन में प्रमुखता दे और सरकार उसकी सुरक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उठाए।
- देश में जनता भ्रष्टाचार के विरुद्ध आधुनिक टेक्नोलोजी का सहारा भी ले सकती है।

**हम यह याद रखें कि जब सतर्क रहेगा इंडिया,
तभी समृद्ध बनेगा इंडिया**

Vigilant India, Prosperous India



मार्क वलेरियन लाकड़ा
वरि. प्रबंधक (पीआर)

द्वितीय पुरस्कार - निबंध लेखन वी ए डबल्यू 2020
निगम मुख्यालय

History has witnessed that from the 15th to the 18th century, Northern India was one of the most prosperous regions in the world. India was blessed with abundant natural resources and a stable Mughal Empire allowed the creation of forward and backward linkages. These resulted in an economic system of inter-linked producers driven by market forces. When the East India entered and took control of the country, corruption reached to new heights and the once prosperous India got ruined and reached the status of an underdeveloped country.

India's independence was a major turning point in its economic. Although India has made great progress since independence and has become one of the fastest growing economies of the world, it still lags behind many countries when it comes to measuring the lifestyle and development of its average citizen. In 2019, India had ranked 129 among 189 countries according to a report by United Nation Development Programme in terms of human development index (HDI).

Corruption has been one of the main reasons from prevention of overall development of India. It becomes imperative that in order for our country to progress, a comprehensive model should be developed that can ensure a system of checks and balances, which would be instrumental in removing corruption from our system. Vigilance, which can be defined as the action or state of keeping careful watch for danger or difficulties can be the prime driving force of this system.

The main ways by which India can emerge as

a vigilant country can be through:

(i) Education :

Kerala is the most literate state in the country and the least corrupt. The high level of education reflects high awareness of rights and law, which lead to less corruption.

(ii) Change in Government process :

No politician should be elected who has a criminal background. Corrupt politicians are responsible for nexus between crime and the state machinery. There should be complete ban on candidates for election having a criminal background.

(iii) Establishment of transparency :

Moral science should be taught at basic levels to ensure the principles of honesty and integrity. Transparent systems like e-commerce, e-governance, e-transactions should be ensured at all levels to ensure less corruption.

(iv) Preventive Measures :

Use of electronic devices as CCTVs in places where there is public dealing can ensure less corruption.

(v) Uniformity of Law :

Uniform and quick judicial process which does not spare anybody must be ensured so that corruption is totally weeded out of the system.

Hence we see that it is by following vigilant processes that the dream of a corruption free and a prosperous country can be realised.

QUOTES – CORRUPTIONS

<p>ON THIS EARTH THERE IS ENOUGH FOR EVERYONE'S NEED BUT NOT FOR THEIR GREED</p> <p style="text-align: right;">-MK GANDHI</p>	<p>ALLAH CURSES THE GIVER OF BRIBES AND THE RECEIVER OF BRIBES AND THE PERSON WHO PAVES THE BOTH PARTIES</p> <p style="text-align: right;">-PROPHET MOHAMMED</p>
<p>MEN ARE MORE OFTEN BRIBED BY THEIR LOYALTIES & AMBITIONS THAN MONEY</p> <p style="text-align: right;">- ROBERT JACSON</p>	<p>NO LEGACY IS AS RICH AS HONESTY</p> <p style="text-align: right;">- WILLIAM SHAKESPEARE</p>
<p>KNOWLEDGE WITHOUT INTEGRITY IS DANGEROUS AND DREADFUL</p> <p style="text-align: right;">-SAMUEL JOHNSON</p>	<p>EVEN WHEN THERE IS NO LAW THERE IS CONSCIENCE</p> <p style="text-align: right;">-PUBLICIUS SYRUS</p>
<p>POWER CORRUPTS THE FEW WHILE WEAKNESS CORRUPTS THE MANY</p> <p style="text-align: right;">-ERRIC HOFFER</p>	<p>YOU SHALL NOT TAKE BRIBE FOR A BRIBES BLINDS THE EYES OF THE WISE AND SUBVERTS THE CAUSE OF RIGHTEOUS</p> <p style="text-align: right;">-BIBLE</p>
<p>TO MAKE YOUR CHILDREN CAPABLE OF HONESTY IS THE BEGINNING OF EDUCATION</p> <p style="text-align: right;">-JOHN RUSKIN</p>	<p>DO NOT DO WHAT YOU WOULD UNDO IF CAUGHT.</p> <p style="text-align: right;">- LEAH ARENDT</p>
<p>AN HONEST MAN IS THE NOBLEST WORK OF GOD.</p> <p style="text-align: right;">-ALEXANDER POPE</p>	<p>THE WEALTH EARNED THROUGH PIOUS MEANS FLOURISHES THOSE WHO EARN THROUGH DISHONEST ARE DESTROYED</p> <p style="text-align: right;">- ATHARVA VED</p>

QUOTES - CORRUPTIONS

<p>TEACH YOUR FAMILY TO LEAD A USEFUL AND HAPPY LIFE RATHER THAN A MATERIALISTIC LIFE.</p>	<p>CORRUPTION THE ENEMY WITHIN US AND AROUND</p>
<p>BEHIND EVERY CORRUPT MAN THERE IS A GREEDY FAMILY.</p>	<p>WHEN VIGILANCE AWARENESS COMES CAN THE END OF CORRUPTION BE FAR BEHIND!</p>
<p>TAKE A VOW THAT YOU WILL NEVER ACCEPT BRIBES FROM ANY ONE AND THAT YOU WILL AVOID PAYING BRIBES, HENCEFORTH!</p>	<p>DO NOT IGNORE THE CORRUPT PRACTICES AROUND YOU, TRY TO DO WHATEVER YOU CAN CHECK THEM OR REPORT THEM TO THE APPROPRIATE AUTHORITY.</p>
<p>THE BLOODY TRAIL TERRORIST ACTIVITY, MILITANCY, SPURIOUS DRUGS, ILLICIT LIQUOR, FOOD ADULTERATION, SUB STANDARD CONSTRUCTIONS...</p>	<p>FROM GROUPS AND ASSOCIATIONS WITH OTHER PERSONS IN YOUR WORK-PLACE AND NEIGHBORHOOD, WHO ARE ALSO KEEN TO FIGHT CORRUPTION. RAISE VOICE AGAINST CORRUPT PRACTICES COLLECTIVELY.</p>
<p>LET THERE BE FREE ACCESS TO INFORMATION-COMMON MAN</p>	<p>THE HONEST NEED NO PROPS THE CORRUPT NEED ACCOMPLICES</p>
<p>GIVE YOUR CHILD THE RIGHT DIRECTION- HONESTY OR CORRUPTION.</p>	<p>THE CORRUPT HAVE MANY MASTERS THE HONEST SERVE NONE.</p>
<p>THE LITMUS TEST OF HONESTY IS WHETHER YOU CAN RESIST TEMPTATION WHEN EVERY THING IS AS STAKE</p>	<p>THE HONEST HAVE VALUE THE CORRUPT HAVE A PRICE. THE CORRUPT HAVE WEALTH THE HONEST HAVE WORTH.</p>
<p>BRIGHT FUTURE AWAITS THE HONEST SHADY PAST HAUNTS THE CORRUPT</p>	<p>INTEGRITY, TRANSPARENCY AND THE FIGHT AGAINST CORRUPTION HAVE TO BE PART OF THE CULTURE. THEY HAVE TO BE TAUGHT AS FUNDAMENTAL VALUES.</p>

Participate in the fight against corruption Take online integrity pledge today Log in to www.cvc.gov.in

INTEGRITY PLEDGE WEBSITE

केन्द्रीय सतर्कता आयोग
CENTRAL VIGILANCE COMMISSION

ईमानदारी - एक जीवन शैली
INTEGRITY - A WAY OF LIFE

सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा
INTEGRITY PLEDGE

एक नागरिक के रूप में
AS A CITIZEN — OR — एक संगठन के रूप में
AS AN ORGANIZATION

प्रतिज्ञा तीन आसान चरणों में लें
TAKE PLEDGE IN THREE EASY STEPS

सुनिश्चानी विवरण दर्ज कीजिये
ENTER BASIC DETAILS

प्रतिज्ञा की भाषा चुनिये
SELECT PLEDGE LANGUAGE

पढ़ें और प्रतिज्ञा लें
READ & TAKE PLEDGE

यदि प्रतिज्ञा पहले ही ले ली है तो वचनबद्धता का प्रमाण-पत्र प्राप्त करें। If already taken Pledge, Get the Certificate of Commitment

प्रमाणपत्र अपने ई-मेल/मोबाइल पर भेजें | Send certificate to your Email/Mobile — OR — प्रमाणपत्र डाउनलोड | Download Certificate

CERTIFICATE OF COMMITMENT

सत्यमेव जयते

केन्द्रीय सतर्कता आयोग
CENTRAL VIGILANCE COMMISSION

Certificate of Commitment

This is to certify that

Shri XYZ

has adopted the Integrity Pledge and is committed to uphold highest standards of honesty & integrity and to follow probity and rule of law in all walks of life

Nilam Sawhney
Nilam Sawhney
Secretary

4245972638

Central Vigilance Commission, Satarkta Bhawan, G.P.O. Complex, INA, New Delhi-110023
Tel: 011- 24600200 (30 Lines), Fax No. 011- 24651010/24651186, Website: www.cvc.nic.in

Follow NHPC Limited at:

 <https://www.facebook.com/NHPCIndiaLimited>

 <https://twitter.com/nhpcLtd>

 <https://www.instagram.com/nhpclimited/>



एक कदम स्वच्छता की ओर



कोरोना से बचें

खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को रखें सुरक्षित



सही से मास्क पहनें



हाथ धोएं बार बार



निभाएं दो गज की दूरी

Design & Printed by Vibha Press Pvt. Ltd., 9810049515

एनएचपीसी सतर्कता विभाग का प्रकाशन
A Publication of the NHPC Vigilance Division



एन एच पी सी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

सेक्टर-33, फरीदाबाद-121003, (हरियाणा)
CIN: L40101HR1975GOI032564,
Website: www.nhpcindia.com